ॐ

श्री राम लाल प्रभु जी परब्रह्मणे नमः

श्री 1008 योगेश्वर प्रभु राम लाल जी महाराज का
चरितामृत

श्री योग महादिव्य रामायण

आठवां खण्ड (अनुग्रह काण्ड)

लेखक :-
चमन लाल कपूर "सेवक"

प्रकाशक :-
योग साधन आश्रम, 3 - माडल टाऊन,
होश्यारपुर (पंजाब)

श्री राम लाल प्रभु जी

परब्रह्मणे नमः

श्री 1008 योगेश्वर प्रभु राम लाल जी महाराज का

चरितामृत

श्री योग महादिव्य रामायण

आठवां खण्ड (अनुग्रह काण्ड)

लेखक :-

चमन लाल कपूर "सेवक"

प्रकाशक :-

योग साधन आश्रम, 3 - माडल टाऊन,

होश्यारपुर (पंजाब)

प्रथमवार 1000

योगेश्वर राम लालाब्द 114

विक्रम संबत 2059

ईस्वी सन 2002

भेंट :- रु. 150/-

योग वन्दना

योग – विद्यां नमाम्यहम्

सौंदर्यलहरीरूपां, तापत्रयविनाशनीम् ।
तेजस्विनीं तपोरूपां, योगविद्यां नमाम्यहम् ।।१।।
संस्थापकां समत्वं तां, शक्तिसर्जनकारिणीम् ।
चित्तवृत्तिनिरोधाय, योगविद्यां नमाम्यहम् ।।२।।
अर्धनारीश्वरस्येमां, चैतन्यसार संभवाम् ।
पूर्णरूपकुण्डलिनीं, योगविद्यां नमाम्यहम् ।।३।।

●●●●

※ योग तुझे नमस्कार ※

सुन्दर करे जो देह को, करे दुखों से पार ।
तेज रूप तप रूप जो, योग तुझे नमस्कार ।।१।।
करे समत्व दान जो, शक्ति सिरजनहार ।
चित्तवृत्ति निरोधहित, योग तुझे नमस्कार ।।२।।
आदिनाथ से ऊपजा, चेतनता का सार ।
जागृत कुण्डली जो करे, योग तुझे नमस्कार ।।३।।
राम लाल जिस का किया, कलियुग में उद्धार ।
मुलखराज के "सेवक", का तुझे नमस्कार ।।४।।

चमन लाल कपूर "सेवक"

दो शब्द

प्रभु कृपा से ''श्री योग महादिव्य रामायण'' के आठों खण्डों की इति श्री हो गई है और प्रभु कृपा से मुद्रित हो गये हैं । योगेश्वर श्री प्रभु राम लाल जी महाराज और श्री सद्गुरुदेव स्वामी मुलखराज जी की अलौकिक अनुकम्पा है जिन्होंने इस सेवक को 31 (इकतीस) वर्ष तक लिपिक की सेवा प्रदान की और इस ग्रन्थ को स्वयं लिखवाते रहे । उनकी यह कृति उन्हीं के चरणों में समर्पित है ।

यह सेवक उन सभी महानुभावों का परम आभारी है जिन्होंने इसे इस कार्य में विविध प्रकार से सहयोग प्रदान कर कृतार्थ किया है, और इसके उत्साह में वृद्धि करते रहे हैं ।

अन्त में मैं अपनी आदरणीया धर्मपत्नी श्रीमति राजरानी का भी आभारी हूँ जिन्होंने इस लम्बे अर्से में मुझे पूर्ण सहयोग दिया और मेरा दिशानिर्देश भी करती रहीं । तथा गृहस्थ और आश्रम के हमारे व्यस्त जीवन में भी मुझे दिन रात लिखने के इस कार्य में समय लगाने में आपत्ति न करतीं । परन्तु कभी-2 मुझे श्रांत देख मुझसे लेखनी छीन लेतीं और कापी उठाकर हठपूर्वक कहतीं ''[1]हुन आराम करो । सेहत दा वी ध्यान रखो । हाली बड़ा कम्म करना ए ।'' उस समय मेरे विचारों की कड़ी टूट जाती और हठात वहीं रुकना पड़ता ।

आशा है इस ग्रन्थ के आठों खण्ड प्रभु भक्त प्रयोग में लाकर योग की शिक्षा और योग तथा भक्ति की प्रेरणा लेते रहेंगे । योगेश्वर प्रभु राम लाल और योगेश्वर स्वामी मुलख राज जी महाराज के मुखारविंदों से निकसित 45000 पद्यों की इस रचना का आशा है सहृदय पाठक प्रेम पूर्वक अध्ययन करते रहेंगे । और अन्त में यही कह सकते हैं कि :-

दिव्य रामायण जो पढ़े, मिले ज्ञान संपूर्ण ।
बहु ग्रन्थों में जो लिखा, वह इसमें हैं पूर्ण ।।

होश्यारपुर
02.12.2001

श्री प्रभु चरण रज
चमन लाल कपूर 'सेवक'

1. अब आराम करो । स्वास्थ्य का भी ध्यान रखो । अभी बहुत काम करना हैं ।

प्राक्कथन

दो०–है इक दिवस की वार्ता, मैं था स्थित बेहाल ।
पुकारा एक सुहृद ने, क्या 'चमन' तव हाल ।। 1

सोच रहा था उस समय, "प्रभुकी दया अपार ।
प्रभु न होते संग यदि, डूबत मैं मंझधार" ।। 2

सुनी मैं जब सुहृद की वाणी, देखा चौंक मित्र सन्मानी ।
उसे बिठाया जब मैं पास, कहन लगा "क्यों मीत उदास" ।
मैं बोला "हे मित्र प्यारे, भाव बताऊं अपने सारे ।
अस्सी (80) वर्ष हैं भये व्यतीत, जग में आये मुझे हैं मीत ।
एक भी पल न ऐसा देखा, प्रभु कृपा का हाथ न देखा ।
कर कर उस प्रभु को याद, दया के सागर जो अगाध ।
डूब उसी सागर मे जाता, सुध बुध निज मैं खो हूं पाता ।
तुम पूछा किस कारण उदास, कारण तो न और कोई खास ।

दो०–और कारण न कथ सकूँ, इस दशा का मीत ।
प्रभु स्मरण में खो रहा, मेरा यह है चीत" ।। 3

कहा मीत "हे मीत प्यारे, स्पष्ट करो जो भाव तिहारे ।
किस प्रभु के ध्यान के माँझ, डूब रहे तुम प्रातः सांझ ।
मैं भी सुनूं तुम्हारी बात, जिस कारण यह हालत तात" ।
कथन कीना मैं मित्र ताहीं, बात छिपाई कुछ भी नाहीं ।
"जीवन एक पहेली भाई, प्रभु ने ही यह है सुलझाई ।

भटक भटक जब मैं था हारा, दीखत न था कहीं किनारा ।
प्रभु ने आ मम थामा हाथ, और सदैव रहे वे साथ ।
अनेक वर्ष हैं भये व्यतीत, बस रहे हैं राम मम चीत ।

दो०–प्रभु ही मेरे मन बसे, समा रहे मम गात ।
उनकी स्मृति में ही तात, रहता हूँ दिन व रात ।। 4

अनुग्रह उनका याद कर, खो जाऊँ उन मांझ ।
हो सचेत न मन मेरा, प्रातः से ले सांझ ।। 5

अनुगह के वे पयोद महान, उनके न को और समान ।
देख रहा हूँ मैं मम मीत, जीव मात्र से उनकी प्रीत ।
दिल चाहता मैं कुछ लिख पाऊँ, अपना हृदय खोल बताऊँ ।
क्या कहते हो तुम मम मीत, मुझे बताओ जो तव चीत'' ।
कहा मीत ''यह शुभ विचार, प्रभु तो अनुग्रह के भण्डार ।
अपने विचार लिखो तुम मीत, प्रभु में दिव्य तुम्हारी प्रीत ।
इससे जग का हो कल्याण, सफल करें तुमको भगवान'' ।
मीत कहा था सोच विचार, उसकी मति तब भयी स्वीकार ।

दो०–मान बात उस मीत की, प्रभु का पा संकेत ।
कलम हाथ में थाम कर, 'सेवक' भया सचेत ।। 6

होश्यारपुर *चमन लाल कपूर 'सेवक'*
25.6.97

श्री दिव्य रामायण सहगान

दिव्य रामायण की गाथा को,
जो नर सुने सुनावे ।
जीवन में रहे सुखी हमेशा,
अंत परमपद पावे ।।
श्री प्रभु गंडाराम दुलारे,
इस में उन के खेल हैं न्यारे ।
पतित पावनी कथा मनोहर,
भक्तन के मन भावे ।।
सुन्दर यह इतिहास मनोहर,
लीला कीनी जिमि योगेश्वर ।
योग साधना की पावस ऋतु,
योगामृत बरसावे ।।
उत्तम नीति इस में आई,
भक्त जनों के जो मन भाई ।
इस के सुनने से प्राणी का,
पाप नाश हो जावे ।।
श्री प्रभु राम लाल हैं नायक,
जीव चराचर के सुखदायक ।
उन के चरण कमल का भौंरा,
'सेवक' शीश झुकावे ।।

ऊँ नमः श्री रामलाल प्रभुजी परब्रह्मणे नमः

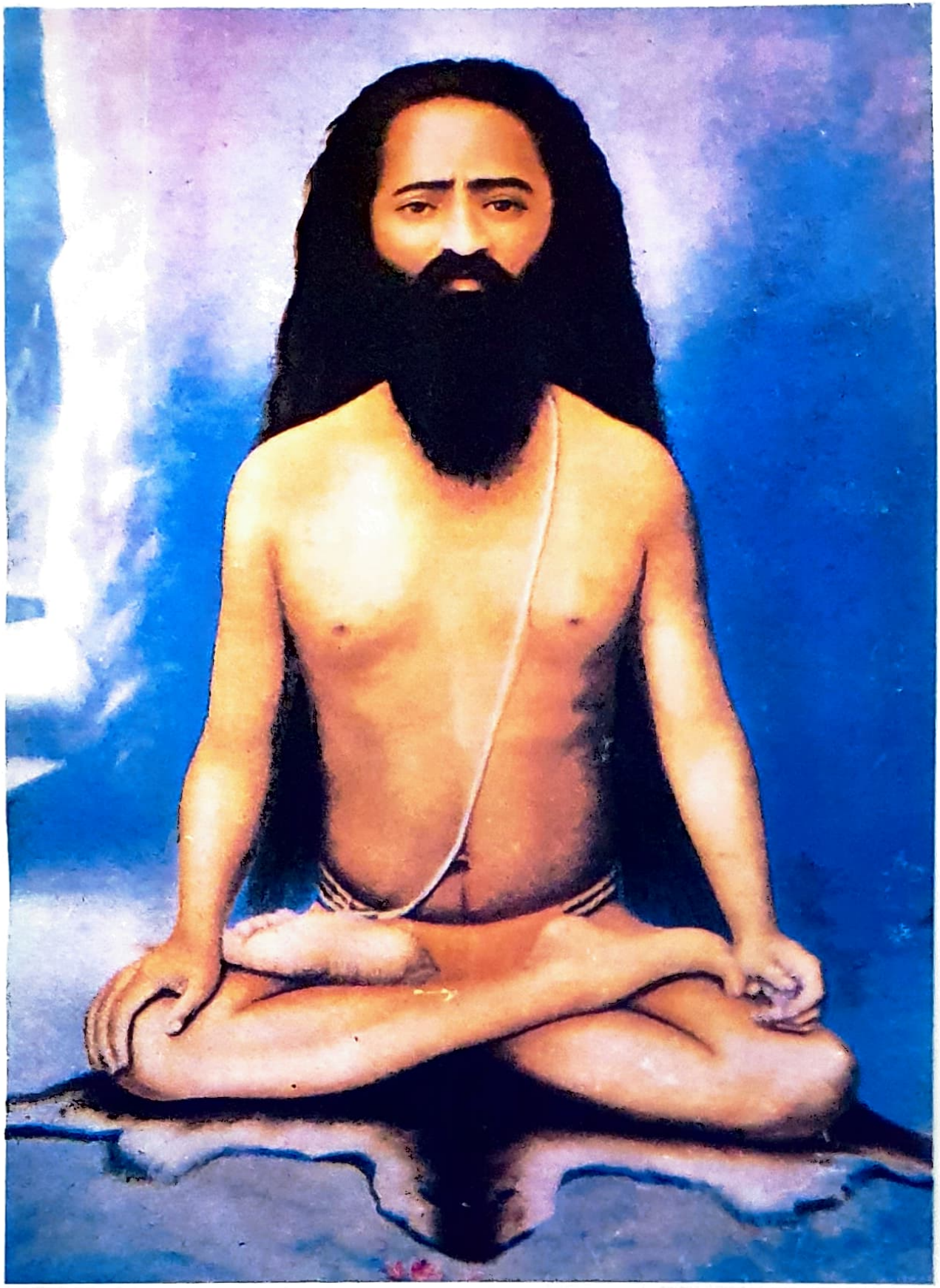

श्री 1008 योगेश्वर प्रभु रामलाल जी महाराज

ॐ

श्री योग महादिव्य रामायण

(अनुग्रह काण्ड)

महाप्रभु प्रभु राम जी, और मुलख जी राज ।
तीनों रूप ये दिव्य हैं, भक्तन के सिरताज ॥ 4336
इनका अनुग्रह पायकर, आरंभ करत है दास ।
'काण्ड अनुग्रह' लिखत है, रहो प्रभो मम पास ॥ 4337
बिना अनुग्रह नाथ के, लेखनी चल न पाय ।
नत मस्तक विनती करूं, सद्गुरु होंय सहाय ॥ 4338
नाथ अनुग्रह के बिना, लेखक है नाचीज़ ।
माटी से भी हीन है, वह तो है कुछ चीज़ ॥ 4339
प्रभु अनुग्रह होत है, दीन जनों पर मीत ।
जिनके भाग्य में हो लिखा, होत उन्हें प्रतीत ॥ 4340
नाथ अनुग्रह से भया, आज मुझे यह भान ।
जन्म दिया शुभ वंश में, मुझ को दयानिधान ॥ 4341
मानव तन भी दे दिया, कर कृपा भगवान ।
जिससे भव में हो सके, 'सेवक' का कल्याण ॥ 4342

पूर्व जन्म का ज्ञान न, अब मैं जानूँ मीत ।
पूर्वज मम महान थे, जिन की सत से प्रीत ।। 4343
ज्ञानचन्द मम जनक थे, लाजवन्ती थी मात ।
उन सम धार्मिक जगत में, देखूं न कहीं तात ।। 4344
ज्ञानचन्द का तात जो, निहालचन्द अभिधान ।
विशिष्ठ पुरुष था वंश में, जपत सदा भगवान ।। 4345
निहाल चन्द का भी पिता, गणपतराय विख्यात ।
उसका भी तो जान लो, मदन लाल था तात ।। 4346
धर्म धुरन्धर थे सभी, कपूर वंश के चांद ।
सूरज सम चमकत रहे, उन समक्ष मैं मान्द ।। 4347
समझ अनुग्रह राम का, नतमस्तक हूँ मीत ।
उत्तम कुल में पा जन्म, कर्म करूँ विपरीत ।। 4348
कर्म किये विपरीत जब, आ संभाला राम ।
[1] तस्कर कीना साध जिमि, अनुग्रह के प्रभु धाम ।। 4349
मानव देह न बख्शते, न जानूं कहां होत ।
किस योनी में भटकता, दुख में ओत प्रोत ।। 4350
दिया जन्म भी नगर उस, जम्मू जो विख्यात ।
मन्दिर मन्दिर सभी जगह, स्वर्ग जिमि साक्षात ।। 4351
जैन मार्ग के पास ही, कूचा सुन्दर एक ।
धार्मिक सज्जन बसत थे, आस्तिक था हर एक ।। 4352

---

[1] देखो योग महा दिव्य रामायण दोहा संख्या – 1700 से आगे

तव अनुग्रह कथूं किमि, अपार दया है देव ।
संभाला इस जीव को, दे चरणों की सेव ।। 4353
धर्म परायण पितृजन, अगज भी अनुरूप ।
तू संभाला जीव यह, हे विश्व के भूप ।। 4354
अनुग्रह पात्र हो गया, दीन जीव सब रीत ।
जिस पर किरपा नाथ तव, होय उसे प्रतीत ।। 4355
बालपने में भ्रातृजन, दीना मुझे स्नेह ।
कुन्दन लाल भ्रात पर, मात-पिता सम नेह ।। 4356
भाई सतप्रकाश से, था अनोखा प्यार ।
संग मुझे वह ले चलत, प्रात शाम की सैर ।। 4357
भाई प्रभु ने ये दिये, राम लखान से मीत ।
प्रभु अनुग्रह महान है, होत मुझे प्रतीत ।। 4358
दो बहनों का प्यार भी, ऐसा मिला महान ।
उपमा जिसकी न दिखत, मुझको सकल जहान ।। 4359
दिव्य रूपा है सत्या, राज रानी भी दिव्य ।
दोनों दीना प्यार जो, वह प्यार है दिव्य ।। 4360
यह सारा परिवार तब, रहता जम्मूं बीच ।
नाथ अनुग्रह बरसती, मिलते सुख समीच ।। 4361
बालपना उस नगर में, रह रह आता याद ।
सुख बहु परिवार में, प्रभु की दया अगाध ।। 4362
वेद मन्दिर में जाकर, करता था मैं योग ।
स्नान तवी पर करत था, जहां जात सब लोग ।। 4363

नीर तवी का तेज़ था, वा गहरा भी होत ।
तैराकी मैं सीखता, खात कभी था गोत ।। 4364
इक बार जब डूब रहा, मुझे बचाया राम ।
मैं न राम को जानता, मुझे जानते राम ।। 4365
प्रभु अनुकम्पा क्या कथूं, बार बार उन कीन ।
नाथ अनुग्रह होती न, रहता दुख में लीन ।। 4366
प्रभु अनुग्रह जान सकत, जन दीन मम समान ।
अहंकारी को न विदित, कितने प्रभु महान ।। 4367
[1] तीन वर्ष की आयु में, राम बचायी नार ।
प्रभु अनुग्रह जगत पर, वरणूं किस प्रकार ।। 4368
मुझे था प्रभु का ज्ञान न, प्रभु को मेरा ज्ञान ।
विद्या मोहे पढ़ाई, यह था प्रभु का दान ।। 4369
विद्यालय में डाल कर, कीन महान उपकार ।
योग्य छात्र विख्यात था, अनुग्रह का न पार ।। 4370
भाषा मुझे पढ़वाई, जिसका हो उपयोग ।
ग्रन्थन वे मैं पढ़ सकूं, जिनमें वर्णित योग ।। 4371
वह भाषा है संस्कृत, जिसके वर्ण विशेष ।
शिव डमरू से ऊपजे, त्रुटी न जिनमें लेश ।। 4372
आदि से ले अंत तक, यही पढ़ाई नाथ ।
अनोखी हि यह बात थी, हमरे कुल के साथ ।। 4373

---

[1] रामायण दोहा संख्या – ।। आदि

चुना मुझे ही नाथ ने, इसके पढ़ने हेत ।
अनेकों स्थानों में गया, ज्ञान मिले अभिप्रेत ।। 4374
स्कूल व कालेज में पढ़ी, विश्व विद्यालय जाय ।
पाठशाल में जा पढ़ी, ज्ञान जहां मिल पाय ।। 4375
परम अनुग्रह नाथ का, स्पष्ट मुझे लख पाय ।
भाषा बिन न ज्ञान हो, शास्त्रन में जो आय ।। 4376
उसी ज्ञान को देय कर, प्रभु लिखवाई गाथ ।
दिव रामायण नाम से, दे कलम मम हाथ ।। 4377
परम अनुग्रह और इक, मम जीवन में जोय ।
सिद्धेश्वर श्री मुलख का, शिष्य बनाया मोय ।। 4378
गुरु से पाया ज्ञान जो, और कृपा उस साथ ।
उसका भी उल्लेख तो, है करवाया नाथ ।। 4379
किमि कथूं निज बात सब, प्रभु दया बेअन्त ।
शेष शारद न पा सकें, प्रभु दया का अन्त ।। 4380
गुरु मुख से जो मैं सुनीं, थीं घटना बहु मीत ।
उनका वर्णन अब करूं, प्रभु चरणी ला चीत ।। 4381
सिद्ध पुरुष इक आ गया, अमृतसर के बीच ।
बाल प्रभु को देख कर, लीन पहचान समीच ।। 4382
परम अनुग्रह नाथ का, उस सिद्ध पर जान ।
तन धारे भगवान जब, को सकत पहचान ।। 4383
जान पाया न राम को, नहीं कृष्ण को मीत ।
माया मोहित जगत यह, है विधना की रीत ।। 4384

जिस पर कृपा कीन प्रभु, वही सका पहचान ।
जगत भ्रांति रहा पड़ा, अथवा निज अभिमान ।। 4385
माता भी न जान सकी, नहीं पिता पहचान ।
था पहचाना नार ने, पति मेरे भगवान ।। 4386
तपस्या हेतु चल दिये, जंगल को जब राम ।
वह भी तप में लग गई, घर में सिमरत राम ।। 4387
त्याग उसे थे चल दिये, गुरु खोजन को राम ।
कीन अनुग्रह नार पर, जपे विरह में राम ।। 4388
अनुग्रह सेवक पर करो, हे मेरे भगवान ।
दिव्य रूप तेरा भजूं, ग्रसे न माया आन ।। 4389
अनुग्रह के तव नाथ जी, हैं बहुत प्रमाण ।
[1] बचा लिया तुम लोभ से, जय राम भगवान ।। 4390
स्वादों के वह वश पड़ा, पेड़ों के हे नाथ ।
प्रभो अनुग्रह की उस, प्रसिद्ध भयी है गाथ ।। 4391
तव पिता का शिष्य वह, तेरा मित्र खास ।
उसे अधिकारी जान कर, राखा था निज पास ।। 4392
जो भी आया शरण में, कीन पाप से मुक्त ।
जय अधिकारी हो गया, योग से कीना युक्त ।। 4393
सद्गुरु मेरे नाथ जी, मुलखा स्वामी राज ।
थकते थे न कथन कर, तव महिम महाराज ।। 4394

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 185 से आगे

श्रवण किया था बैठ मैं, उन चरणि ही देव ।
काँठ राज की मात ने, कीनी जो तव सेव ।। 4395
[1] आप पधारे काँठ जब, नृप बना था दास ।
राजा के परिवार पर, कीन अनुग्रह खास ।। 4396
राजमाता की क्या कहें, कृपा पाई विशेष ।
देह की सुधि भुलाय कर, समाधि स्थित हमेश ।। 4397
काँठ राज से चलि कर, पहुंचे एक स्थान ।
[2] बाबा लक्ष्मण दास था, जहां भया प्रधान ।। 4398
जनता उसको मानती, पर न कुछ उस पास ।
दया प्रभु की पाय कर, सिद्धभया वह खास ।। 4399
अनुग्रह तव की उपमा, का न कहीं प्रमाण ।
सृष्टि में न कहीं मिलत, अनुग्रह इस समान ।। 4400
दीन जनों को तारया, और किये बहु सिद्ध ।
तव अनुग्रह हे प्रभो, सर्वत्र है प्रसिद्ध ।। 4401
काँठ राज से चल कर, मन्दिर आये एक ।
वहां संस्कारी पाया, जो बाल था एक ।। 4402
उस बाल की खेचरी, सिद्ध कीन क्षण मांझ ।
प्रभु अनुग्रह की वार्ता, विदित सबन जग मांझ ।। 4403

---

[1] रामायण दोहा – 140 आदि

[2] रामायण दोहा – 165 – 166 आदि

[1] वह बाल कुम्हार था, सबन भया आश्चर्य ।
प्रभु अनुग्रह देखकर, पूजें योगी वर्य ।। 4404
जन अनेकों तर गये, राम अनुग्रह पाये ।
भेदभाव निज चित्त में, न कभी प्रभु जी लाये ।। 4405
जसपुर की यह वार्ता, प्रभु चरित में आये ।
वह बालक योगी भया, प्रभु कृपा को पाय ।। 4406
जसपुर से प्रभु चल दिये, अयोध्या कीन प्रवेश ।
वहां नार इक मिल गई, अवधूता के वेश ।। 4407
दुख में थी जो भटकती, दर दर होय खवार ।
हालत उसकी क्या कहें, वह तो दुखी अपार ।। 4408
[2] दुखिया विधवा नार थी, कीन साधुन गुमराह ।
उसको प्रभु जब मिल गये, मिला ठीक तब राह ।। 4409
योग धर्म में लग गई, अनुग्रह प्रभु महान ।
स्पष्ट बात उसने कही, "प्रभु मिले भगवान ।। 4410
राम लाल का नामधर, उतरे हैं जगदीश ।
अनन्त कलांय धार कर, ईशन के वे ईश ।। 4411
साधुन को थी रो रही, वा थी बहुत लाचार ।
प्रभु अनुग्रह पाय कर, सुखी हूँ अब अपार" ।। 4412
मिलते न यदि प्रभु उसे, अलमोडा उस काल ।
न जाने फिर होत क्या, उस साध्वी का हाल ।। 4413

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 162 आदि
[2] रामायण दोहा संख्या – 175 आदि

किरपा सागर नाथ ने, थी बचायी नार ।
विदित भया तब जगत को, प्रभु जन पालन हार ।। 4414
प्रभु मर्याद पुरुषोत्तम, मर्यादा से प्यार ।
दें शिक्षा मर्याद की, जन पर दया अपार ।। 4415
विदा भये अलमोड़ से, पहुंचे काशी आय ।
वहां पर कृपा जो करी, वर्णन अब हो पाय ।। 4416
काशी में प्रभु जब गये, ब्रह्मचारी इक देख ।
अभ्यासी था जो योग का, उसका रूप उल्लेख ।। 4417
[1] भयी गलानी नाथ को, वैश्या राखो साथ ।
वा मदिरा भी रख रहा, था वह अपने हाथ ।। 4418
प्रभु अनुग्रह कीन तब, सन्मार्ग पर लाय ।
उसे बताया नाथ जी, निन्दा से बच पाय ।। 4419
जन मर्यादा पालते, हैं करते जो योग ।
सर्वोत्तम मर्याद है, त्यागने के न योग ।। 4420
ब्रह्मचारी ने श्रवण कर, अपनाया उपदेश ।
जान अनुग्रह नाथ का, त्याग दिया वह वेश ।। 4421
जन गण को प्रभु तारते, जनरंजन भगवान ।
पग पड़ें जहां नाथ के, उस स्थल का कल्याण ।। 4422
प्रभु की संगत मिल गई, जिस को भी जिस काल ।
अपना लिया उसको प्रभु, ऐसे प्रभु दयाल ।। 4423

[1] रामायण दोहा संख्या – 198 आदि

जन पांडा प्रभु को मिला, काशी के प्रदेश ।
[1] शिक्षा उस को दी प्रभु, मन भेद रहा न लेश ।। 4424
एक क्षण भी नाथ का, जिसे मिला संयोग ।
भाग्य खुला उस जीव का, मिला प्रभु से योग ।। 4425
पाप कर्म से मुक्त कर, कीना उसे सनाथ ।
धर्म स्थापन हेत ही, आये जग में नाथ ।। 4426
[2] वाम मार्ग जो पाप में, था भया गुलतान ।
मीन मैथुन वा मदिरा, तामस खान व पान ।। 4427
दया प्रभु को आयी तब, तोड़ा भैरव चक्र ।
योग धर्म में प्रभु लगे, त्याग अधर्म कुचक्र ।। 4428
काशी से मुड़ कर प्रभु, आय सवाईं ग्राम ।
पावन कीन ग्राम वह, भया सवाईं धाम ।। 4429
ग्राम सवाईं आ गये, जब राम भगवान ।
सर्पाकुल थी भूमि वह, देख भये हैरान ।। 4430
जन ग्राम के भीत थे, सांपों से हर काल ।
[3] सर्प शून्य कर दी प्रभु, कर कृपा तत्काल ।। 4431
परम अनुग्रह नाथ का, था भया उस काल ।
पावन थल वह हो गया, ग्राम भया खुशहाल ।। 4432
नाथ अनुग्रह और भी, था भया उस देश ।
तीर्थ स्थल ही हो गया, वह सकल प्रदेश ।। 4433

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 204 आदि
[2] रामायण दोहा संख्या – 212 आदि
[3] रामायण दोहा संख्या – 657 आदि

[1] वहां से प्रभु थे चल दिये, नर्बद नद की ओर ।
यात्रा उसकी हम करें, गुरु खोजें उस ठोर ।। 4434
प्रभु अनुग्रह असीम है, कथ किमि कोई पाय ।
नर्बदा तट प्रभु किये, चरित अनूप सुहाय ।। 4435
शून्य मन्दिर जो था इक, भूतग्रस्त कहाय ।
जनता सारी त्रस्त थी, चित्त सेठ भमाय ।। 4436
रहता जो उस बीच था, यम लोक को जाये ।
शुद्ध कीन उसको प्रभु, दया कथी न जाये ।। 4437
दया दयामय करत हैं, स्वयं रहें निमान ।
शक्ति अपनी का प्रभु, करत न कभी बखान ।। 4438
परम सिद्ध भगवान थे, सिद्धिन का दें दान ।
[2] हरि राम जभी सर दिया, कीना सिद्ध महान ।। 4439
वह कृपा एक दिव्य थी, अभूतपूर्व हि एक ।
चरित प्रभु के मध्य में, ऐसे दृश्य अनेक ।। 4440
खास कृपा जो कीन थी, हरि राम पै नाथ ।
उसे संग वे ले चले, निज यात्रा के सुपाथ ।। 4441
हरि को प्रभु ने बख्श दी, शक्ति एक महान ।
[3] खप्पर वाले साधु का, तोड़ा उस अभिमान ।। 4442
साधु का भी नाथ फिर, कर दीना कल्याण ।
शक्ति संग उसको दिया, भक्ति का भी दान ।। 4443

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 219 आदि
[2] रामायण दोहा संख्या – 250 आदि
[3] रामायण दोहा संख्या – 271 आदि

प्रभु अनुग्रह अनूप है, दोषी पर भी होय ।
दोष न देखें नाथ जी, प्रभु से आशिष गोय ।। 4444
जन संतापी साध इक, शाप सभी को देय ।
हरिराम जभी जाय, आग धूनि से लेय ।। 4445
हरि राम को भी तुरत, लगा देन वह शाप ।
हरि ने शक्ति खींच सब, आया प्रभु ढ़िंग आप ।। 4446
[1] पास प्रभु के आय कर, चिल्लाया वह साध ।
दया दयानिधि तब करि, कीन अनुग्रह अगाध ।। 4447
ऐसे नाथ दयाल हैं, दया सभी पर होय ।
अपराधी भी आय कर, दया प्रभु से गोय ।। 4448
ज्ञान के भण्डार प्रभु, राम लाल भगवान ।
मान करें उस भक्त का, जो ज्ञान की खान ।। 4449
ऐसे ही इक दंपती, मिले नर्बदा पास ।
शास्त्रों का तो ज्ञान था, अभ्यास न था खास ।। 4450
उनकी आस्था देख कर, प्रभु अनुग्रह कीन ।
[2] शिक्षा दीनी योग की, शरणि उनको लीन ।। 4451
धन्य भये थे दंपती, अनूपम मिला ज्ञान ।
शून्य है अभ्यास बिन, शास्त्रों का तो ज्ञान ।। 4452
इस ज्ञान को पाय कर, कृतकृत्य हो पाय ।
साधन में वे लग गये, जन्म सफल कर पाय ।। 4453

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 277 आदि
[2] रामायण दोहा संख्या – 290 आदि

प्रभु अनुग्रह पाय कर, सफल भया न को ।
'सेवक' खुद प्रमाण है, भव में बहत था जो ।। 4454
वन में प्रभु थे चल रहे, देखी उन इक नार ।
[1] शेर को थी हांक रही, प्रभु रुके इक बार ।। 4455
सिंह स्वामिन साधवी, दर्श प्रभु के पाय ।
माथा प्रभु को टेक कर, विनय इमि कर पाय ।। 4456
मेरे सद्गुरु पास ही, करते यहां निवास ।
विनती मेरी आप से, धारें पग उन पास ।। 4457
विनती उसकी मान कर, पहुंचे आश्रम आन ।
गुरु योग प्रवीण था, लीन प्रभु जी जान ।। 4458
चर्चा चाली योग की, सभी सुने ला ध्यान ।
योगी बातें पूछता, करता प्रभु का मान ।। 4459
प्रसन्न भये थे नाथ जी, सुन कर उनसे योग ।
आशिष उनको दे गये, "सिद्ध भये तब योग" ।। 4460
सिद्ध भयी थी साधना, गुरु शिष्य ली जान ।
जान लिया उन दोय ने, आये हैं भगवान ।। 4461
आवें तन को धार कर, जग में जब जगदीश ।
जान सके वह जीव ही, जहां अनुग्रह ईश ।। 4462
ऐसे जीव न बहुत हैं, जहां अनुग्रह होय ।
भ्रांति में ही भ्रमत रहे, माया में जग खोय ।। 4463

[1] रामायण दोहा संख्या – 296 आदि

योग साधना जन करे, प्रभु कृपा को पाय ।
[1] ऐसा योगी इक दिखा, नर्बदा तट सुहाय ।। 4464
दृढ़ ध्यान में बैठ वह, प्रभु चिन्तन कर पाय ।
बाढ़ आई जब नद में, डूबा क्या कर पाय ।। 4465
प्रभु सिमरण तब उस किया, देखा प्रभु का रूप ।
बांका बाल भी न हुआ, प्रभु अनुग्रह अनूप ।। 4466
बाढ़ थमी तब आय कर, कीनी उस अरदास ।
नाथ अनुग्रह आप का, जीवन पाया दास ।। 4467
प्रभु उतरे हैं जगत में, सर्व जगत के हेत ।
निज सिद्धिन का जगत हित, प्रयोग भी कर लेत ।। 4468
जब देखा उन जगत में, अनीति का संचार ।
[2] देह बनाये दो उन, योग सिद्धि को धार ।। 4469
समाधि स्थित वे इक थल, नासिक दूज शरीर ।
करत धर्म प्रचार वे, गहन परम गंभीर ।। 4470
दो देह निर्माण कर, तारे भक्त अनेक ।
नासिक में उन रच लिया, निज देह जो एक ।। 4471
जन गण नासिक के तब, प्रभु दर्शन कर पाय ।
कृत कृत्य सभी हो गये, मनोकामना पाय ।। 4472
नासिक के बहु जनन ने, पाकर प्रभु से योग ।
मानें निज को धन्य वे, नगरी के सब लोग ।। 4473

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 308 आदि
[2] रामायण दोहा संख्या – 319 आदि

नर्बद तट भी नाथ जी, थे समाधि आसीन ।
को जाने उस रहस को, जो नाथ ने कीन ।। 4474
पूत भया वह देश तब, समाधि के प्रभाव ।
नाथ अनुग्रह जानिये, प्रभु का यह सद्भाव ।। 4475
जिस देश में है बसत, ध्यानी योगी तात ।
देश पवित्र होत वह, शास्त्र कथें यह बात ।। 4476
कृपा कर उस देश पर, चाले उत्तर ओर ।
पुष्कर में प्रभु आ गये, ठहरे तब उस ठौर ।। 4477
प्रभु अनुग्रह करत हैं, सर्व जनन पर तात ।
[1] घटना पुष्कर राज की, सर्व विदित है बात ।। 4478
आये पुष्कर राज में, पर ब्रह्म भगवान ।
ब्रह्मानन्द के पास वे, ब्रह्मा के इस्थान ।। 4479
स्वामी ब्रह्मानन्द को, सिखलाया प्रभु योग ।
राज योग के नेम सब, हठ योग का प्रयोग ।। 4480
यह बहु दुख की बात है, तीर्थन में कुछ साध ।
बाना साधु धार कर, करते हैं अपराध ।। 4481
ब्रह्मा के इस्थान भी, थे ऐसे कुछ साध ।
जिन का काम उद्दण्डता, सदा करें अपराध ।। 4482
स्वामी ब्रह्मानन्द पर, चढ़ आये वे साध ।
प्रभु बचाया तभी उसे, अनुग्रह प्रभु अगाध ।। 4483

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 321 आदि

सीख मिली तब सबन को, वेश साधु का धार ।
जन अनेकों हैं फिरत, जीवन करें खवार ।। 4484
पुष्कर को प्रभु तज दिया, आये पटना देव ।
बहु भक्त वहां आन कर, करते प्रभु की सेव ।। 4485
प्रभु दया को पाय कर, होते वे कृत कृत्य ।
भक्त जनों का उस जगह, रहता ताना नित्य ।। 4486
प्रभु दया को पाय कर, धन्य भये बहु लोग ।
चार जनों का वर्णन, है करने के योग ।। 4487
मानव जीवन दुर्लभ, सभी कहें यह बात ।
फिर भी माया में रमें, अजब लगे यह बात ।। 4488
सद्गुरु दया जभी भये, पलटत है यह बात ।
माया का तज मोह जन, गुरु चरणि लग जात ।। 4489
यही अनुग्रह था किया, पटना में भगवान ।
[1] श्याम नारायण पर प्रभु, लगा जो चरणि आन ।। 4490
वकालत को उस तज कर, प्रभु सेवा मन लाय ।
सन्मार्ग को ग्रहण किया, 'धन्य धन्य' कहलाय ।। 4491
जिस पै अनुग्रह होत है, धन्य वही हो जाय ।
हरि हर राय जो जज था, अनोखी कृपा पाय ।। 4492
[2] पछतावा उसने किया, निज कर्मों पर आन ।
"क्षमा करो अपराध मम, जो किये भगवान" ।। 4493

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 327 आदि
[2] रामायण दोहा संख्या – 338 आदि

खुद उसने स्वीकार कर, मांगी प्रभु से भीख ।
शिक्षा प्रभु से ग्रहण कर, स्वीकारी उस सीख ।। 4494
उसी जज की कोर्ट में, फंसा ब्राह्मण बाल ।
हत्या का वह केस था, मात पिता बेहाल ।। 4495
[1] बालक नहीं हत्यारा, बिल्कुल वह निर्दोष ।
दोषी ने थी चाल चल, थोपा उस पै दोष ।। 4496
प्रभु पधारे कोर्ट में, जिमि निर्णय हो पाय ।
जज ने समझी बात सब, मुक्ति बालक पाय ।। 4497
प्रभु अनुग्रह जान जन, हो रोमांचित जाय ।
ब्राह्मण बालक के जभी, प्राण थे प्रभु बचाय ।। 4498
एक क्षण में बहुत जन, तारे थे भगवान ।
श्याम नारायण एक था, दूजा जज लो जान ।। 4499
तीजा ब्राह्मण बाल था, दिया प्राण का दान ।
मात पिता उस बाल के, भी तारे भगवान ।। 4500
प्रभु आये हैं जगत में, धर्म स्थापन हेत ।
योग मार्ग सर्वोत्तम, करने सबन सचेत ।। 4501
[2] पटना में इक और भी, घाटना भाई विशेष ।
साधु एक हरणाम पर, अनुग्रह भाई अशेष ।। 4502
सम्पूर्ण जीवन अपना, कीना उस बरबाद ।
देह बिगाड़ा आपना, पाया दुख अगाध ।। 4503

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 328 आदि

[2] रामायण दोहा संख्या – 340 आदि

दरदर जो था भटकता, पाने को भगवान ।
ईश्वर उसे तो न मिला, प्राप्त किया अपमान ।। 4504
आयु सारी भ्रमत रहा, भ्रांत मतों में साध ।
प्रभु अनुग्रह जभी भया, लीन योग आराध ।। 4505
'भ्रांति में जन बहु रमें', स्पष्ट कही यह नाथ ।
हरणाम दास को कहा, "छोड़ो भ्रम का साथ" ।। 4506
प्रभु अनुग्रह पाय कर, तरे अनेकों लोग ।
भाग्य उदय उनका भया, अपनाया जिन योग ।। 4507
पटना से बंग देश को, चल पड़े भगवान ।
कहूं मार्ग की घटन इक, प्रभु अनुग्रह जान ।। 4508
चरम अनुग्रह की कथा, स्मरण करे यह दास ।
जान बचाई बाप की, पुत्र चित्त विश्वास ।। 4509
रामरती अभिधान था, उसकी यह संतान ।
वह बिगड़ी दुर्भाग्य वश, मिला प्रभु से त्राण ।। 4510
कुपथ पड़ी को दे दिया, नाथ समाधि दान ।
कुलटा से देवी भयी, प्रभु अनुग्रह जान ।। 4511
जगवन्द्या वह हो गई, बचे पिता के प्राण ।
लगा जो डूबन गंग में, सहन न कर अपमान ।। 4512
पहुंच गये जब बंग में, थे श्रमित भगवान ।
लेट गये थे धूप में, हो जिमि दूर थकान ।। 4513

[1] कोई जज था जा रहा, अपनी पत्नी साथ ।
साया कीना नाथ पर, छाता ले निज हाथ ।। 4514
छाता ताना जज तब, पत्नी ने भी साथ ।
स्वयं धूप में खड़ रहे, दोनों ही इक साथ ।। 4515
आशुतोष और रामा, थे उनके ये नाम ।
आंख खुली जब नाथ की, मुस्काये प्रभु राम ।। 4516
किरपा कीनी नाथ ने, आशिष उनको दीन ।
ठहरे थे उन पास तब, महान अनुग्रह कीन ।। 4517
जग मज़दूरी देत है, क्यों राखो भागवान ।
प्रभुचरित से सीख यह, भक्तन लीन महान ।। 4518
रामा को प्रभु ने दिया, उच्च समाधि दान ।
प्रभु भक्ति सबको मिली, प्रभु कृपा से जान ।। 4519
प्रभु अनुग्रह पाय कर, रामा का परिवार ।
सुखी भया हर रूप से, प्रभु की महिम अपार ।। 4520
बंग देश में ठहर कर, चरित प्रभु जो कीन ।
धन्य भये तब जन सभी, दूर दूर के चीन ।। 4521
वहां से भेजा नाथ ने, मारवाड़ हरानन्द ।
नास्तिक जन आस्तिक भये, पाया परमानन्द ।। 4522
माया में जो रम रहे, उसे न मिले भागवान ।
माया फंदा काटने, प्रकटे हैं भागवान ।। 4523

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 387 आदि

राम लाल के नाम से, धारा योगी रूप ।
देश देशान्तर विचरे, स्वयं विश्व के भूप ।। 4524
मारवाड़ में भेज कर, हरानन्द को नाथ ।
[1] निज शक्ति प्रकटाई, कीने सेठ सनाथ ।। 4525
वहां अनुग्रह खास था, समझें भक्त सुजान ।
कीना प्रभु ने आप ही, सेठों का कल्याण ।। 4526
हरानन्द को ताड़ते, जो वहां के लोग ।
शिष्य प्रभु के वे बने, ऐसा भया सुयोग ।। 4527
काम वहां का कर हरि, आयो प्रभु के पास ।
[2] प्रभु आगे फिर चल दिये, रामा परम उदास ।। 4528
[3] मारग में प्रभु को मिला, साध अनोखा एक ।
रहता जो अशांत सदा, ग्राही प्रभु की टेक ।। 4529
छुआछूत में रमत मन, भजन में न विशेष ।
सुधार किया उस का प्रभु, त्यागी छूत अशेष ।। 4530
भूत छूत का जान लो, चिमटा हो जिस ताहीं ।
प्रभु वहां से दूर रहें, वह रमे जग माहीं ।। 4531
प्रभु अनुग्रह प्राप्त कर, साध भया वह धन्य ।
छूतछात को त्याग कर, भक्ति करत अनन्य ।। 4532
पूर्व दिशा को जा रहे, योगिन के सरदार ।
योगी भी थे देखते, करने को सत्कार ।। 4533

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 406 आदि
[2] रामायण दोहा संख्या – 425 आदि
[3] रामायण दोहा संख्या – 444 आदि

योगी बहु थे देखते, कब मिलें भगवान ।
साधन की हो बाध जो, दूर उसे कर जान ।। 4534
प्रभु जहां कहीं देखते, रहता योगी साध ।
नाथ वहीं पधारते, उसे मिलें निर्बाध ।। 4535
असम देश में आय कर, चल रहे वन प्रदेश ।
[1] इक अवधूता योगिनी, रहती थी उस देश ।। 4536
गोहाटी नगरी पास, था उसका इस्थान ।
मिलने चले उसको प्रभु, योगेश्वर भगवान ।। 4537
सिद्धा थी वह योग में, जान गई तत्काल ।
परमेश्वर हैं आ रहे, नगरी से इस काल ।। 4538
अगवानी को चल पड़ी, मिली नाथ को आन ।
आय गिरी प्रभु चरण में, सन्मुख पा भगवान ।। 4539
प्रभु से आशिष पाय कर, वह विनय कर पायी ।
"दर्शन दीने आप ने, दासी धन्य हो पायी ।। 4540
सद्गुरु योगी थे मम, उनका यह आदेश ।
प्रभु मिलें तुझे आय कर, जिनका पंचनद देश ।। 4541
तेरी जो भी हो कमी, पूर्ण करेंगे आय ।
उनके दर्शन मात्र से, जीव उच्चगति पाय" ।। 4542
भक्ति उसकी देख कर, नाथ भये प्रसन्न ।
केवल आशिष मात्र से, कीन सिद्धिसम्पन्न ।। 4543

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 459 आदि

पाय अनुग्रह नाथ का, उसकी पूर्ण साध ।
कृपा करें जिस पर प्रभु, लेत योग आराध ।। 4544
प्रभु कृपा को पाय कर, पुरुष सिद्ध हो जाय ।
सिद्धिन का प्रयोग फिर, मोक्ष हित कर पाय ।। 4545
सिद्धिन को जन पाय कर, यदि न पाले नेम ।
अहंकार के कारणे, नशे योग व क्षेम ।। 4546
[1] ऐसी एक अवधूता, मिल पाई उस देश ।
जो सिद्धिन को पाय कर, करती गर्व विशेष ।। 4547
चाहती हरानन्द को, करना अपना दास ।
फंस गई वह बांस में, दृढ़ पड़ा था पाश ।। 4548
अनुग्रह उस पर भी प्रभु, था कीना विशेष ।
उसे कैद से मुक्त कर, दीन योग उपदेश ।। 4549
क्षमा प्रभु से मांग उस, कहा "हे भगवान ।
धन्य भयी मम साधना, पाकर तुझसे ज्ञान" ।। 4550
दोषिन को भी बख्शते, ऐसे प्रभु दयाल ।
थी अवधूता दोषिनी, कीना उसे निहाल ।। 4551
प्रभु आये हैं जगत में, शिक्षा देने हेत ।
उचित जग को है यही, रहे सदैव सचेत ।। 4552
प्रयोग न सिद्धिन का करें, जग की माया हेत ।
हानी इससे है बड़ी, योगी रहे सचेत ।। 4553

[1] रामायण दोहा संख्या – 466 आदि

विपरीत मार्ग मत गहें, योगी अब इस काल ।
योगियों के अनर्थ से, था योग का बिगड़ा हाल ।। 4554
अवतार प्रभु का इस हित, है हुआ इस काल ।
योग धर्म की शरण ले, जग उभरे कलि काल ।। 4555
परम अनुग्रह नाथ का, यह जानूं मैं मीत ।
कीना सबन सतर्क उन, जो चलते विपरीत ।। 4556
वाम मार्ग को पालते, बहुजन हैं इस काल ।
धर्म की वे आड़ लेय, चलें पाप की चाल ।। 4557
असम देश के वनन में, चल रहे जब नाथ ।
घेर लिया कुछ जनन ने, ले चाले निज साथ ।। 4558
वे नागे उस देश के, हिंसा जिनका धर्म ।
[1] मन्दिर में उन्हें ले चले, दैव बलि के कर्म ।। 4559
प्रभु के संग दो शिष्य थे, उनका भी बलिदान ।
देवी के सन्मुख करें, तीनों का बलिदान ।। 4560
खड़ भये वहां नाथ जी, देवी के सन्मुख ।
नत मस्तक देवी भयी, देख प्रभु का रुख ।। 4561
रूप भयंकर धार उस, देखे पापी नाग ।
पाप कर्म में रत जोय, दृष्टि उन पै लाग ।। 4562
दण्ड से नहीं बच सकें, देवी कीना कोप ।
एक महिला के स्तन में, दीनी पीड़ा रोप ।। 4563

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 486 आदि

लगी कराहन पीड़ से, हाहाकार मचायी ।
जगत त्राता नाथ के, मन दया थी आयी ।। 4564
वन से औषध लेय कर, स्तन पै दीन लगाइ ।
नाथ अनुग्रह से भयी, पीड़ हवा हो पाइ ।। 4565
पीड़ हवा हो पाइ जब, शत्रु बन गये मीत ।
नेक कर्म जो जन करे, सबकी उस से प्रीत ।। 4566
हाहाकार जो करत थी, जयकार उस कीन ।
नतमस्तक सब जन भये, नम्र विदाई दीन ।। 4567
प्रभु अनुग्रह सबन पै, शत्रु हो या मीत ।
अनुग्रह के उन कारण, लीना जग मन जीत ।। 4568
समस्त विश्व पै नाथ का, परम अनुग्रह जान ।
देव दानव व मानव, सबको है पहचान ।। 4569
जड़ चेतन सब तरसते, अनुग्रह हो प्रदान ।
बिना अनुग्रह नाथ के, रहें न तन में प्राण ।। 4570
नागे आये छोड़ जब, प्रभु को उनकी राह ।
गुरु खोजन हित नाथ के, मन उत्साह अथाह ।। 4571
उस ही धुन में चल रहे, प्रभु शिष्यन के साथ ।
भैंसे आये दौड़ते, भिड़ने को उन साथ ।। 4572
[1] परम उत्साही नाथ जी, हट गये इक हाथ ।
भैंसों के प्रहार से, बचे सभी इक साथ ।। 4573

[1] रामायण दोहा संख्या – 501 आदि

प्रभु किरपा से बच गये, शिष्य प्रभु के दोय ।
प्रभु रक्षक जब संग हों, भय आये न कोय ।। 4574
भय आया इक और भी, उस ही वन प्रदेश ।
प्रभु अनुग्रह कीन तब, भयी क्षती न लेश ।। 4575
क्षती भयी न लेश तब, हाथी जब चढ़ आय ।
[1] प्रभु कृपा से बचे सब, जो शिष्य संग लाय ।। 4576
शिष्य संग सो पाय थे, प्रभु के दोनों ओर ।
अग्नि धकधक धलकत, हस्ती कीना शोर ।। 4577
हस्ती कीना शोर जब, हस्तिन का दल आय ।
लगा बुझावन आग को, प्रहार भी कर पाय ।। 4578
हस्तिन के प्रहार से, सकता न बच कोय ।
प्रभु किरपा से बच गये, बाल न बांका होय ।। 4579
दाया भक्तों पर भयी, भक्तन देखी जोय ।
प्रभु किया चमत्कार जो, उपमा न कहीं होय ।। 4580
यह था परम अनुग्रह, जो कीना उस काल ।
बचे सभी के प्राण थे, बांका भया न बाल ।। 4581
तेज प्रभु का देखकर, डर गये वे जीव ।
दुम दबाय भागे सभी, लांघी उन वन सीव ।। 4582
प्रभु अनुग्रह होत किमि, बुद्धि में न आय ।
एक इल्लाही शक्ति, संग प्रभु हैं लाय ।। 4583

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 507 आदि

संग प्रभु हैं लाय जो, योग उसी का नाम ।
आय उसी को ले सदा, राम कृष्ण फिर राम ।। 4584
इस विध प्रभु की यात्रा, सभी वनों के मांझ ।
खतरों से भरपूर थी, प्रातः से ले सांझ ।। 4585
योग शक्ती के स्वामी, सब खतरे कर पार ।
पहुंचे फिर इक राज्य में, रण सिंह की सरकार ।। 4586
मग में बाध अनेक थीं, झूझत वे सब थांहि ।
नाथ अनुग्रह थे करत, जन सबन के तांहि ।। 4587
रणसिंह में अभिमान था, निज मन्त्रों के तांहि ।
[1] वह भी बाधक बन गया, उसी राज्य के मांहि ।। 4588
मन्त्रों की भरमार जब, भक्तों पर हो पाय ।
प्रभु कृपा से वे बचें, रक्षा प्रभु कर पाय ।। 4589
योगी गुरु का शिष्य था, राजा रण सिंह जोय ।
मन्त्रों के अभिमान में, था जीवन निज खोय ।। 4590
प्रभु ने कीन अनुग्रह, दीक्षा उसको दीन ।
योग में उसे लगा कर, दान भक्ति का दीन ।। 4591
उसके गुरु को फिर प्रभु, दीना दर्शन जाय ।
सफल जीवन उसका भया, प्रभु पग माथ झुकाय ।। 4592
[2] प्रभु पद माथ झुकाय कर, नम्र निवेदन कीन ।
नाथ स्वागत आपका, दर्शन मुझको दीन ।। 4593

[1] रामायण दोहा संख्या – 545 आदि
[2] रामायण दोहा संख्या – 551 आदि

धन्य भया था राजगुरु, प्रभु दर्शन को पाय ।
वह योगी था जानता, प्रभु जिस कारण आय ।। 4594
साध उसी की पूजने, कुटिया में थे आय ।
अनुग्रह उस पै जो भया, वर्णन न हो पाय ।। 4595
भया कृतार्थ राजगुरु, और नृप भी साथ ।
प्रभु अनुग्रह पाय कर, दोनों भये कृतार्थ ।। 4596
यह अनुग्रह कहां मिले, जो करते हैं नाथ ।
चल पैदल हैं पहुंचते, करने जन सनाथ ।। 4597
कृतार्थ करके राजगुरु, लौट पड़े फिर नाथ ।
ग्रहण किया तब नाथ ने, नैपाल का पाथ ।। 4598
[1] गुरुओं के भी गुरु प्रभु, राजगुरु को तार ।
लीन दिशा नेपाल की, ले चित्त शुभ विचार ।। 4599
दर्शन को कुछ सिद्ध जन, बैठे वर्ष हज़ार ।
ताक रहे थे राह सब, आयें राम अवतार ।। 4600
राजा जो नेपाल का, प्रभु में उसका चित्त ।
चले प्रभु नेपाल तब, उसके ही वे हित्त ।। 4601
मार्ग में एक साध था, ताक रहा था राह ।
गुरु मिले उसे बहुत थे, कीना जिन गुमराह ।। 4602
नशयों में उन डाल कर, छुआ छूत भी साथ ।
योग किसी नहीं दीना, लगा न कुछ उस हाथ ।। 4603

[1] रामायण दोहा संख्या – 560 आदि

प्रभु मिले जभी मार्ग में, शरण पड़ा वह आय ।
प्रभु ने उसे अपना कर, दीना योग सिखाय ।। 4604
नशयों से छुड़ाय कर, मार्ग योग दिखाय ।
ध्यान समाधि में बिठला, छुआ छूत दुराय ।। 4605
उसको दीना ज्ञान फिर, भया उसे संतोष ।
योग साधन में लग गया, छूट गये बहु दोष ।। 4606
हो नशा किसी प्रकार का, हानि कारक सोय ।
प्रभु कहा संसार को, नशा करे नँ कोय ।। 4607
छुआछूत भी पाप है, अभिमान का मूल ।
जो अभिमानी जन भये, जाय परमार्थ भूल ।। 4608
कीन अनुग्रह साध पर, दूर भया अभिमान ।
त्याग नशे वह सब संग, करता खान व पान ।। 4609
[1] एक अघोरी रहत था, उस वन में इक ओर ।
उस पर भी किरपा भयी, उसके ही थी ठोर ।। 4610
प्रभु का योगी साध वह, जो था प्रभु के संग ।
भ्रमण करन जब वह गया, उसका यह प्रसंग ।। 4611
अनजाने में चल गया, अघोरी के हि पास ।
मिला अघोरी को वह, शिकार बिना प्रयास ।। 4612
लगा अघोरी पकड़ने, भक्त प्रभु को जब ।
दर्श प्रभु के तेज का, उसे भया था तब ।। 4613

[1] रामायण दोहा संख्या – 567 आदि

प्रभु अनुग्रह करत हैं, दोषी पर भी तात ।
हिंसक जन को भी प्रभु, दर्श दिये साक्षात ।। 4614
पैदल पैदल चलत ही, स्वमण्डली के साथ ।
प्रभु आये नेपाल में, जनता भयी सनाथ ।। 4615
[1] नेपाल के नरेश पर, प्रभु कीना उपकार ।
रोगी उसका बन्धु था, सभी व्यर्थ उपचार ।। 4616
प्रभु अनुग्रह जभी भया, दूर भया था रोग ।
किरपा प्रभु की है बड़ी, मान गये सब लोग ।। 4617
राजा ने दरबार में, भव्य स्वागत कीन ।
सिंहासन के साथ ही, प्रभु को आसन दीन ।। 4618
शास्त्र की चली बात तब, राज पुरोहित साथ ।
[2] मुखराम विद्वान था, बात करत उस साथ ।। 4619
शास्त्रार्थ के हि बीच में, कटु बात मुख कीन ।
झाड़ दिया प्रभु मुख तब, पण्डित का पक्ष लीन ।। 4620
ऐसे नाथ दयाल हैं, सहें न पर अपमान ।
स्वयं निमाने रहत हैं, दें अन्य को मान ।। 4621
सब शिष्यन को छोड़ तब, प्रभु वनों की ओर ।
चल पड़े गुरु मिलन को, ढूंढ़े ठोर कुठोर ।। 4622
महाप्रभु प्रतीक्षा रत, वर्ष अनन्त हजार ।
अनन्त कलायें धारी, राम लें कब अवतार ।। 4623

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 577 आदि

[2] रामायण दोहा संख्या – 580 आदि

वियोग न उनका सह सकत, महाप्रभु महाराज ।
गगन मार्ग से चल पड़े, मिलने को थे आज ।। 4624
राम ढूंढते महाप्रभु, महाप्रभु ढूंढ़ें राम ।
देव गगन में देखते, दिव्य दृश्य अभिराम ।। 4625
शून्य वनों में थे मिले, महाप्रभु और राम ।
आय मिलीं दो शक्तियां, हिम शिखर उस शाम ।। 4626
महा प्रभु को मिल गये, शिष्य रूप भगवान ।
राम लाल को थे मिले, शिव रूप गुरु जान ।। 4627
ऐसे दिव्य मिलाप से, होना था कल्याण ।
उन योगिन का जगत में, बैठे जो ला ध्यान ।। 4628
हिम शिखिर पर जाय कर, राम मिले सप्रीत ।
प्रभु के दर्शन की रही, इच्छा जिन के चीत ।। 4629
[1] यह अनुग्रह राम का, ऋषि मुनियों पर जोय ।
युग अनेक पश्चात ही, ऐसा संभव होय ।। 4630
महाप्रभु के पास जब, रह पाये थे राम ।
वहां था एक अघोरी, लागा ठगने राम ।। 4631
इसी बहाने से प्रभु, के दर्श उस पाये ।
प्रभु कृपा से महा प्रभु, भी उसे मिल पाये ।। 4632
प्रभु अनुग्रह की सुन, है न सीमा मीत ।
पल पल ही वह करत हैं, जग पर मम प्रतीत ।। 4633

[1] रामायण दोहा संख्या – 586 आदि

[1] सुमेरु पर थे जब प्रभु, महा प्रभु के पास ।
वृद्ध ऋषियन की पूजी, चिर काल की आस ।। 4634
साक्षात राम थे मिल गये, जिस का करते ध्यान ।
राम लाल भगवान का, परम अनुग्रह जान ।। 4635
महाप्रभु को ज्ञान था, अवतारी हैं राम ।
[2] शिव अवतारी को मिले, वनस्थली में राम ।। 4636
अनोखा ही संयोग था, दो मिले अवतार ।
दोनों का उद्देश्य इक, हो योग उद्धार ।। 4637
गुरु व शिष्य के रूप में, थे मिले अवतार ।
दोनों का उद्देश्य इक, हो योग उद्धार ।। 4638
राम लाल थे खोजते, योगी गुरु का द्वार ।
शिक्षा दे जो योग की, हो योग उद्धार ।। 4639
महा प्रभु भी खोजते, शिष्य मिले अवतार ।
भूमिगत है योग भया, हो योग उद्धार ।। 4640
अनुग्रह जग पै करन हित, दो मिले अवतार ।
दोनों का उद्देश्य इक, हो योग उद्धार ।। 4641
महाप्रभु से राम का, था अनोखा प्यार ।
सद्गुरु आज्ञा में रहा, कीन योग उद्धार ।। 4642
[3] योग विरोधी साध जो, आया उस प्रदेश ।
ताड़ना प्रभु से पाय कर, ठहर न पाया लेश ।। 4643

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 594 आदि
[2] रामायण दोहा संख्या – 607 आदि
[3] रामायण दोहा संख्या – 627 आदि

डेढ़ वर्ष तक राम रहे, सद्गुरु के थे पास ।
समय न बीतत जापता, था मिलाप यह खास ।। 4644
डेढ़ वर्ष पश्चात फिर, भया गुरु आदेश ।
जाकर योग प्रचारो, अब तुम देश विदेश ।। 4645
गुरु से बिछुड़न हो रहा, किमि सहे यह राम ।
गुरु आज्ञा को टालना, पर सीखा न राम ।। 4646
इक पग आगे पड़त था, दूजा पाछे जाय ।
विश्वविधाता श्री प्रभु, थे दुविधा में आय ।। 4647
जग में आये राम तब, गुरु आज्ञा को मान ।
शंख बजाया योग का, जग का हो कल्याण ।। 4648
किरपा थी यह राम की, लीना उन अवतार ।
होवे जिमि इस जगत में, पुनः योग उद्धार ।। 4649
उतरे प्रभु हिमालय से, गुरु का पा आदेश ।
धारा मन में "योग को, प्रचारूं देश विदेश" ।। 4650
उस काल सभी जगत में, योग का था ह्रास ।
इस कारण था नाथ का, अन्तः करण उदास ।। 4651
सद्गुरु का आदेश था, प्रभु दृढ़ निश्चय कीन ।
"अब प्रचारूं योग मैं, गुरु जिमि आज्ञा दीन" ।। 4652
गुरु से आज्ञा पाय कर, जग में आये नाथ ।
राज योग हठयोग का, दिया ज्ञान इक साथ ।। 4653
प्रभु का महान अनुग्रह, जानूं जग पै मीत ।
रोग दुराये जगत के, हठ योग की रीत ।। 4654

चित्त को दीनी शांति, राज सिखलाय योग ।
यम नियम बतलाय कर, सुखी किये बहु लोग ।। 4655
प्राणों के अभ्यास से, मन एकाग्र होय ।
प्रभु सिखलाया जगत को, परम अनुग्रह जोय ।। 4656
जन अधिकारी पाय कर, करते शक्तिपात ।
पूर्व जन्म अभ्यास का, बहुजन लाभ उठात ।। 4657
अनेक जनन का है प्रभु, इस विध कीन उद्धार ।
जो आये प्रभु शरण में, हो गये भव से पार ।। 4658
दोषी जन भी आ गया, यदि वह शरणि नाथ ।
उस का दोष दुराय कर, जोड़ा यौगिक पाथ ।। 4659
ऐसे जनन अनेक हैं, लूं मैं इक का नाम ।
राम रत्ति इक नार थी, भयी थी जो बदनाम ।। 4660
शुद्ध थी उसकी आत्मा, केवल संग का दोष ।
प्रभु शरणी जब आ गई, धुला दोष का कोष ।। 4661
शुद्ध पूर्व संस्कार थे, कीना शक्ति पात ।
प्रभु बिठलायी ध्यान में, दूर भया उत्पात ।। 4662
पूजन लागे लोग सब, जो दुत्कारें पूर्व ।
प्रभु अनुग्रह जभी भये, मान मिले अपूर्व ।। 4663
[1] देवी भयी थी राम रति, प्रभु अनुगह पाय ।
जिन नज़रों से थी गिरी, शीश उनके झुक पाय ।। 4664

[1] रामायण दोहा संख्या – 633 आदि

चरम चक्षु से देखते, हैं साधारण लोग ।
दिव्य दृष्टि से निरख कर, प्रदान करें प्रभु योग ।। 4665
राम रति के मात पिता, का भी बदला हाल ।
प्रभु कृपा को पाय कर, हो गये वे निहाल ।। 4666
जहां स्थित थी राम रति, समाधि में चिर काल ।
तीर्थ स्थल वह हो गया, प्रभु जी परम दयाल ।। 4667
उतर हिमालय से प्रभु, आ गये निज धाम ।
जगति में विख्यात भया, शुद्ध समाईं ग्राम ।। 4668
प्रभु कृपा जो ग्राम उस, पाई जग के मांहि ।
उस की उपमा न मिलत, ऐसा ग्राम समांहि ।। 4669
[1] दिव्य अनुग्रह भूमि पर, कण कण हि दिव्य जान ।
एक भी माटी का कण, हरता रोग महान ।। 4670
देश विदेशी आय कर, जन झुकावें माथ ।
गुफा प्रभु की है बनी, दिव है जिसकी गाथ ।। 4671
गुफा पास इक ताल भी, दीना प्रभु बनाय ।
अमृतनीर जिसका भया, जो दे रोग दुराय ।। 4672
दुख में जनता देख कर, कीने ये सब काम ।
दुख से छूटें जन जिमि, सबन मिले आराम ।। 4673
प्रभु अनुग्रह सबन पर, जो शरण में आयें ।
भक्त सवांई के बहु, आ अनुग्रह पायें ।। 4674

[1] रामायण दोहा संख्या - 644 आदि

[1] ठाकुर दास भी एक था, जिस का वर्णन आय ।
उसे था दुख संतान का, पूत न उस घर जाय ।। 4675
प्रभु अनुग्रह पाय कर, ठाकुर भया निहाल ।
चार पूत उसके भये, प्रभु जब भये दयाल ।। 4676
[2] ऐसे ही इक भक्त का, वर्णन आवे मीत ।
ठाकुर बाबू राम था, प्रभु चरणि अति प्रीत ।। 4677
कन्या भयी जवान थी, पैसा न था पास ।
चिन्ता उसे सता रही, लोग करें उपहास ।। 4678
आश्रम में नित आय कर, प्रभु के बैठत पास ।
अन्तर्यामी नाथ ने, देखा भक्त उदास ।। 4679
अपनी देकर पादुका, कह दीना उस तांहि ।
प्रभु करें तब काज वह, जो तेरे मन मांहि ।। 4680
पादुक के संकेत से, प्रभु अनुग्रह कीन ।
ठाकुर बाबू राम को, संपत बहु थी दीन ।। 4681
देख अलौकिक कार्य यह, चकित भये सब लोग ।
प्रभु से प्राप्त करत हैं, भक्त क्षेम व योग ।। 4682
कन्या का विवाह भया, धूम धाम से मीत ।
सब भक्तन के चित्त में, बढ़ी प्रभु पग प्रीत ।। 4683
[3] ठाकुर चन्दन सिंह पर, भी कृपा प्रभु कीन ।
सर्विस उसको मिल गई, पुष्प माल जब दीन ।। 4684

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 667 आदि
[2] रामायण दोहा संख्या – 672 आदि
[3] रामायण दोहा संख्या – 661 आदि

बिन सर्विस लाचार था, खान पान से तंग ।
प्रभु से माला जब मिली, वह लायी निज रंग ।। 4685
सर्विस उसको मिल गई, ठाकुर भया निहाल ।
धन धान्य का भया स्वामी, बदला उसका हाल ।। 4686
[1] जौहरी भी इक और था, भक्त प्रभु का मीत ।
दरिद्रता पाछे पड़ी, प्रभु पग राखे प्रीत ।। 4687
अन्तर्यामी नाथ ने, देख भक्त लाचार ।
उसे दीन चवन्नी, राखी उस संभार ।। 4688
चवन्नी के संकेत से, प्रभु अनुग्रह कीन ।
धन धान्य और संपत, सब थी उसको दीन ।। 4689
[2] प्रभु अनुग्रह करत हैं, जानो बहु प्रकार ।
जान बचाई भक्त की, गढ़ अली इक बार ।। 4690
कुचला जाता रेल से, प्रभु न देते हाथ ।
बैठे खुद सवाईं में, जन के अलीगढ़ साथ ।। 4691
कर्ण सिंह यह नाम था, अलीगढ़ गया कुछ काम ।
जाता कुचला रेल से, बचाते प्रभु न राम ।। 4692
प्रभु ही ऐसा कर सकें, सकल सिद्धि के नाथ ।
साधारण जन न कर सके, उसकी नहीं बसाथ ।। 4693
नाथ अनुग्रह करत हैं, जग पै बहु प्रकार ।
दोष निवारें जनन के, उनका करें सुधार ।। 4694

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 662 आदि

[2] रामायण दोहा संख्या – 681 आदि

[1] एक जवाहर मल्ल था, गाँव सवांई बीच ।
गर्व उसे निज शक्ति का, "मुझ सम गाँव न बीच" ।। 4695
प्रभु के ही इक शिष्य ने, चूर किया वह गर्व ।
प्रभु अनुग्रह हो गया, गर्व गया था सर्व ।। 4696
[2] सवांई मध्य और भी, भक्त प्रभु का दास ।
था ठाकुर गुलाब सिंह, रहत प्रभु के पास ।। 4697
गया स्नान हित कूप पै, प्रकटी गंगा मात ।
दर्शन उसने पा लिए, गंगा के साक्षात ।। 4698
मान लिया उस भक्त ने, बाबा हैं गुरु खास ।
जिन दर्शाई है मुझे, गंग कूप के पास ।। 4699
प्रभु अनुग्रह समझ कर, सदा करत था सेव ।
प्रभु संगत में रहत था, जान प्रभु महादेव ।। 4700
एक अनुग्रह नाथ का, जानूं सर्व महान ।
कीन उजागर योग को, ऋषियों का जो ज्ञान ।। 4701
धरातल के हि गर्त में, जा छिपा था योग ।
प्रभु उद्धारा योग को, यह था दिव्य सुयोग ।। 4702
लेत नाम थे योग का, केवल विरले लोग ।
प्रभु बतलाया आन कर, दिव विद्या है योग ।। 4703
तन स्वस्थ यह रखत है, बल भी करे प्रदान ।
चित्त एकाग्र होत है, मिले योग से ज्ञान ।। 4704

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 683 आदि
[2] रामायण दोहा संख्या – 685 आदि

जग ऋणी है राम का, कीन योग उद्धार ।
कौन बचाता योग को, प्रभु न लेत अवतार ।। 4705
प्रभु बचाया योग 'हठ', 'राज' योग भी साथ ।
दोनों की उपयोगिता, दायां बायां हाथ ।। 4706
नाम लेत थे योग का, केवल कुछ ही लोग ।
आ प्रचारा नाथ ने, जग में 'पूर्ण' योग ।। 4707
जनता इतना जानती, वन में होता योग ।
प्रभु बतलाया सबन को, सब थां संभव योग ।। 4708
जन गृहस्थी कर सकत, साधन योग संपूर्ण ।
मानवता के है लिए, योग रचा संपूर्ण ।। 4709
ऐसा अनुग्रह नाथ जी, कीना जग में आय ।
भ्रांत मति जो जगत की, दीनी सकल दुराय ।। 4710
नारी नर करने लगे, प्रभु से आकर योग ।
प्रभु अनुग्रह पाय कर, सुखी भये बहु लोग ।। 4711
सरल रीति से दीनि प्रभु, सकल योग की सीख ।
जान लिया तब सबन यह, योग सकें हम सीख ।। 4712
[1] सप्त साधन हठ योग के, सभी बतलाये नाथ ।
षट्कर्म बतलाय कर, आसन भी उस साथ ।। 4713
प्रभु कीन अनुगह, प्राणायाम बताय ।
सीख मुद्रा की दीनि, प्रत्याहार सिखाय ।। 4714

[1] देखें रामायण का 'शिक्षा काण्ड'

दान दिया उन ध्यान का, समाधि में बिठलाय ।
योग 'संपूर्ण' दे दिया, यहां जगत में आय ।। 4715
[1] जन अधिकारी पाय कर, राज योग की सीख ।
प्रभु दीनी बहु जनन को, उनकी लेय परीख ।। 4716
आठ अंग जो योग के, प्रभु सिखलाये आन ।
यम नियम बतलाय कर, आसन का भी ज्ञान ।। 4717
दे दिया प्रभु जगत को, सकल योग का ज्ञान ।
बिन योग दुखी थे भये, साधन से अनजान ।। 4718
प्राणायाम की सीख भी, प्रभु दीन सब ताहिं ।
प्रभु अनुग्रह पाय कर, लगे योग के मांहि ।। 4719
आते न यदि जगत में, लेय प्रभु अवतार ।
मिल पाता न ज्ञान यह, जग को किसी प्रकार ।। 4720
शिक्षा प्रत्याहार की, मोक्ष प्रदायी मीत ।
प्रभु बतलाई सबन को, जिनकी प्रभु से प्रीत ।। 4721
प्रभु अनुग्रह पाय कर, सिद्ध धारणा होय ।
ध्यान धरे फिर नाथ को, समाधि को जन गोय ।। 4722
पूर्ण इस विध योग का, जग ने पाया ज्ञान ।
फैला जग में योग तब, अनुग्रह प्रभु महान ।। 4723
दिया प्रभु ने और इक, साधन योग महान ।
जीवन तत के नाम से, 'सेवक' करे बखान ।। 4724

[1] देखें रामायण 'विचार काण्ड'

[1] जीवन तत के साधन, प्रकट किये जो आन ।
विशेष अनुग्रह नाथ का, साधन सात महान ।। 4725
भूल गया था जग इसे, ये साधन प्राचीन ।
प्रभु सिखलाये जगत को, समझें लोग नवीन ।। 4726
अनेक साधन योग के, भूल गया संसार ।
प्रकट किये प्रभु आन कर, प्रभु का यह उपकार ।। 4727
वर्णन जीवन तत का, है रामायण बीच ।
जन करे अभ्यास जब, पाता लाभ समीच ।। 4728
प्रभु के इस उपकार ने, अनेकों किये स्वस्थ ।
रोग शोक से मुक्त हो, हैं सुखी बहु गृहस्थ ।। 4729
दुख से मुक्ति पाय कर, करें प्रभु गुण गान ।
आजीवन साधन करें, प्रभु की दया महान ।। 4730
देश विदेश में हो रहा, जीवन तत प्रचार ।
इससे पाकर लाभ को, सिमरें प्रभु उपकार ।। 4731
रोग अनेकों दूर हों, इस साधन से मीत ।
करते नित्य हैं साधन, जिन्हें योग से प्रीत ।। 4732
करता 'सर्वोत्तान' है, सारी सुस्ती दूर ।
'स्कंध चालन' से ठीक हो, हृदय रोग जरूर ।। 4733
'नाभि चालन' जभी करें, उदर रोग हों दूर ।
बढ़ा हुआ यदि पेट हो, जाता घाट ज़रूर ।। 4734

[1] रामायण दोहा 689 आदि

मंदाग्नी भी ठीक हो, जो खायें पच जाय ।
भूख बढ़ावे साध की, तन पुष्ट हो पाय ।। 4735
'पग चालन' बहु काम की, क्रिया जानो मीत ।
टांगों की शक्ति बढ़े, होत शीघ्र प्रतीत ।। 4736
जानुओं के प्रसार से, हो 'जानु प्रसार' ।
आंतों को शक्ति मिलत, करके जानो सार ।। 4737
'नाड़ी चालन' सीख कर, नित्य करें अभ्यास ।
शक्ति आवे कमर में, राखें मन विश्वास ।। 4738
'बाल मचलन' की मचलन, में है गुण महान ।
बच्चे की कर भावना, स्वस्थ रहत इन्सान ।। 4739
सात तत्व ये योग के, दीने प्रभु जी आय ।
ऐसा साधन यह मिला, सबके मन को भाय ।। 4740
सवांई के जन गण सभी, करते साधन आय ।
कच्ची सब्ज़ी खात वे, साधन से पच जाय ।। 4741
जो किसान देता घिये, खुला था उसका भाग ।
[1] प्रभु अनुग्रह जभी भया, खाली बेल घिये लाग ।। 4742
[2] सवांई में इक और भी, किरपा पात्र महान ।
दर्शन दीने नाथ ने, उड़े गगन जब जान ।। 4743
बस्तिन में बस एक था, सूखा धीमर जीव ।
उड़ते हुए जिस देखा, राम लाल सजीव ।। 4744

---

[1] रामायण दोहा 697 आदि

[2] रामायण दोहा 704 आदि

भाग्यवान वे जीव हैं, जिन पै किरपा होय ।
यह इक गूढ़ रहस्य है, किमि जन किरपा गोय ।। 4745
इस रहस्य को जानते, स्वयं नाथ दयाल ।
स्वयं चुनें वे पात्र को, स्वयं हि भयें कृपाल ।। 4746
इस विध कीन अनुग्रह, सवांई ऊपर नाथ ।
पथ गगन का ग्रहण कर, चले गये बिन साथ ।। 4747
उड़ते उड़ते आ गये, गंगा के प्रभु तीर ।
हरिद्वार को देख कर, उतरे गंगा तीर ।। 4748
मन में प्रभु के आ गया, यहां बसें बहु साध ।
यहां प्रचारें योग हम, साधुन में निर्बाध ।। 4749
रहन लगे प्रभु गंग पर, वे आराधें योग ।
आन लगे तब साध गण, सुन्दर बना सुयोग ।। 4750
प्रभु के आये संग में, जो वहां के साध ।
शिक्षा प्रभु से ग्रहण कर, लिया योग आराध ।। 4751
प्रभु अनुग्रह पाय कर, सीखा प्राणायाम ।
[1] 'नाड़ी शुद्धि' आदि वे, करें प्रातः शाम ।। 4752
[2] गुण बतलाया सबन को, इस क्रिया का मीत ।
[3] योगावस्था हो सके, जो करे सप्रीत ।। 4753
कीन सभी सचेत जन, कैसा हो आहार ।
ग्रहण करे क्या योगिजन, त्यागे क्या आहार ।। 4754

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 709 आदि
[2] रामायण दोहा संख्या – 715 आदि
[3] रामायण दोहा संख्या – 716 आदि

साथ ही यह बतलाया, रोग किमि रहें दूर ।
[1] प्राणायामी जो भये, रहता स्वस्थ ज़रूर ।। 4755
अन्तर्मुखी जिमि भयें, दीना प्रभु जी ज्ञान ।
भीतर ही सब देवता, वहीं ज्ञान की खान ।। 4756
[2] योगी के जो तन रहें, षट्चक्र हे तात ।
उनका दीना ज्ञान था, साधुन को इक प्रात ।। 4757
बीज मन्त्र प्रतिचक्र के, सब बतलाये नाथ ।
चक्र मध्य जो देवता, दिखलाये प्रभु साथ ।। 4758
[3] सभी चक्रों का ज्ञान दे, सहसार उस बाद ।
दशम द्वार का जो थल, जिसमें तेज अगाध ।। 4759
उसका दीना तब प्रभु, साधुन को था ज्ञान ।
धन्य धन्य सब हो गये, पा अनुग्रह दान ।। 4760
किरपा सद्गुरु जब करें, तब मिलत यह ज्ञान ।
साधुन को तो थे मिले, गुरु रूप भगवान ।। 4761
की साधुन तब वेनती, सुनें आप से नाथ ।
गुरु माहात्म्य जो कथा, कहें प्रभु इस साथ ।। 4762
[4] कर कृपा तब नाथ ने, सब बतलाई बात ।
गुरु महिमा का रहस्य जो, योगी को साक्षात ।। 4763
भया सबन को बोध तब, योग हि एक उपाय ।
योग बिना जो गुरु मिले, उससे क्या जन पाय ।। 4764

---

[1] रामायण दोहा संख्या – 720 आदि
[2] रामायण दोहा संख्या – 724 आदि
[3] रामायण दोहा संख्या – 745 आदि
[4] रामायण दोहा संख्या – 747 आदि

कर अनुग्रह सबन पर, प्रभु कीन प्रस्थान ।
ब्रह्मपुरी की ओर तब, चल पड़े भगवान ।। 4765
ब्रह्मपुरी में साध इक, हीरागिरि था नाम ।
वयोवृद्ध था हो गया, भया न मन उपराम ।। 4766
[1] किरपा उस पर करन हित, वहां पधारे राम ।
नित्य नेम वह करत था, था न चित्त उपराम ।। 4767
उसको शिक्षा देन हित, पधारे प्रभु उस देश ।
दोष भक्त का दूर हो, पा योग उपदेश ।। 4768
राग द्वेष शत्रु बड़े, परमार्थ के पाथ ।
संग नहीं ये छोड़ते, चलें साथ ही साथ ।। 4769
साधु होय या महात्मा, बचा न इनसे कोय ।
योगी सद्गुरु जब मिले, योग सिखावे सोय ।। 4770
योग सिखावे सोय जब, जन करत प्रयास ।
शत्रुन से वह जूझता, गुरु पै रख विश्वास ।। 4771
गुरु किरपा तब करत है, रक्षा हेतु मीत ।
वीर पुरुष फिर लेत है, इन शत्रुन को जीत ।। 4772
एक योग ही ज्ञान है, इन को कीलन हेत ।
प्रभु पधारे देश उस, हीरा गिरि के हेत ।। 4773
साध और इक रहत था, नाम कृपाला नन्द ।
हीरा गिरि के पास वह, आकर खाता कन्द ।। 4774

[1] रामायण दोहा 754 आदि

आता प्रभु के पास वह, प्रभु से उसका प्यार ।
हीरागिरि था मानता, उसे धूत आवार ।। 4775
उसे हि शिक्षा देन हित, प्रभु आये उस देश ।
साधु को नहीं चाहिए, करे किसी से द्वेश ।। 4776
हीरागिरी पै नाथ ने, ऐसी कृपा कीन ।
जो दोष उस चित्त बसत, दूर उसे कर दीन ।। 4777
प्रभु अनुग्रह था किया, हीरागिरि पै आप ।
साधना में न बाध हो, दूर भये संताप ।। 4778
दीन दयाल महान है, राम लाल भगवान ।
हो संस्कारी भक्त जो, करें अनुग्रह आन ।। 4779
[1] ब्रह्मपुरी से लौटकर, आये हरि के द्वार ।
बैठे थे उपराम जब, आ मिला परिवार ।। 4780
हठ कीना जब सबन ने, मान गये तब नाथ ।
अमरितसर को हम चलें, आप सबन के साथ ।। 4781
अनुग्रह पात्र लोग जब, क्यों न निज परिवार ।
मान गये थे नाथ जी, घार चलें इक बार ।। 4782
अमरितसर में आ गये, अमृत के प्रभु धाम ।
उनके दर्शन मात्र से, भये जन पूर्ण काम ।। 4783
अमृतसर में नाथ तब, अमृत वर्षा कीन ।
योग धर्म की गंग उन, प्रवाहित हि कर दीन ।। 4784

[1] रामायण दोहा – 794 आदि

धर्म स्थापन हित प्रभु, आये ले अवतार ।
श्री गणेश उन कर दिया, आकर अमरितसार ।। 4785
नींव रखी उन योग की, कटड़ा भाई संत ।
बिगुल बजाया योग का, गूंज उठी बे अन्त ।। 4786
सुन प्रभु के नाद को, खड़े सबन के कान ।
जान लिया सब जनन ने, प्रकटे हैं भगवान ।। 4787
आन लगे प्रभु शरण में, नर नारी बे अन्त ।
लागा होन अनुग्रह, जनता पर बे अन्त ।। 4788
जो आया प्रभु शरण में, लगने लागा ध्यान ।
फैली चरचा जगत में, प्रकटे हैं भगवान ।। 4789
अनुग्रह का प्रवाह तो, बहन लगा दिन रात ।
धूम जगत में मच गई, प्रकटे प्रभु साक्षात ।। 4790
प्रभु सिखलाते योग थे, दृढ़ देते विश्वास ।
देय दृष्टांत समझाते, ज्ञान योग है खास ।। 4791
[1] विजना के दृष्टांत से, कीना प्रभु स्पष्ट ।
पापी भी तर जात है, दूर होत है कष्ट ।। 4792
गिरी पाप थी संग वश, विजना युवती जोय ।
अधोगती उसकी भयी, हुई कुष्टी थी सोय ।। 4793
योग साधना जब करी, गुरु कृपा को गोय ।
दूर भया था कुष्ट सब, बनी सिद्ध थी सोय ।। 4794

[1] रामायण दोहा – 820 आदि

प्रभु समझाया सबन को, "गुरु आज्ञा धर चीत ।
सुखमय जीवन होत है, होय योग से प्रीत ।। 4795
पाप ताप से मुक्त हों, दूर भयें सब रोग ।
गुरु किरपा से जन करे, जब संपूर्ण योग" ।। 4796
अमृतसर प्रभु वास था, बस्ती में निर्बाध ।
युक्त योगी के हेत तो, हो न कहीं कुछ बाध ।। 4797
अमृतसर थे आय प्रभु, वन देश को त्याग ।
वनवासी कई योगी, भी तब आने लाग ।। 4798
ऐसा ही एक योगी, आया अमृत सार ।
प्रतीख्व में प्रभु दर्श की, रहा ध्यान वह धार ।। 4799
लोग कहें योगी बड़ा, वन को आया छोड़ ।
बैठ रहा है समाधि में, जग से मुख को मोड़ ।। 4800
वन से आया सीखने, प्रभु से वह सप्रीत ।
परम अनुग्रह नाथ का, उलट चलाई रीत ।। 4801
प्रभु स्वयं थे वन गये, योगी खोजन हेत ।
मिला न योगी जगत में, खिन्न प्रभु को चेत ।। 4802
ले आये प्रभु जगत में, महा प्रभु से योग ।
केन्द्र स्थापित कर दिया, जहां सीखें सब लोग ।। 4803
उसी केन्द्र में आ गया, वन से वह था साध ।
कीन अनुग्रह नाथ ने, साध की पूजी साध ।। 4804
सब जनता थी देखती, यह अनोखी बात ।
कहते "वन में योग है, अब बस्तिन में साक्षात ।। 4805

चमत्कार यह नाथ ने, कीना ले अवतार ।
वन विलीन जो योग था, उसका कीन उद्धार ।। 4806
सदियों से था जो छिपा, योग साधन वन बीच ।
अवतारी प्रभु राम जी, लाये बस्तिन खींच ।। 4807
परम अनुग्रह राम का, किमि भूले संसार ।
योग प्राण जो धर्म का, उसका कीन उद्धार ।। 4808
शिव शंकर के पास खुद, थे गये भगवान ।
योग को आदि नाथ ने, जग हित कीन प्रदान ।। 4809
सूत्रधार इस क्रांति के, जानों हैं प्रभुराम ।
जग में योग विस्तारा, रहें स्वयं निज धाम ।। 4810
युग अवतारी राम का, जग पै जो उपकार ।
उसकी उपमा न मिलत, 'सेवक' करत विचार'' ।। 4811
योग धाम जब खुल गया, अमृतसर के बीच ।
योग शक्ति संचार तब, लागा होन समीच ।। 4812
योग शक्ति प्रसार से, प्रभु कीना उपकार ।
वर्णन जिसका क्या करें, घटन हैं बेशुमार ।। 4813
[1] जान बचाई मुलख की, जलियांवाले बाग ।
गोलिन की बौछाड़ से, निकाल लिया बेदाग ।। 4814
उसे तभी संभाल कर, कर आकर्षित पास ।
लिया उसे निज शरण में, और चढ़ाये श्वास ।। 4815

[1] रामायण दोहा 882 आदि

दश वर्ष की समाधि में, डाल दिया तत्काल ।
रूप बनाया आपना, होकर परम दयाल ।। 4816
बहुत अनुग्रह नाथ के, भक्तों पर मम मीत ।
घर घर में जन गा रहे, प्रभु कृपा के गीत ।। 4817
नाथ दीनी समाधि जो, मुलख राज को मीत ।
एक अनोखा अनुग्रह, 'सेवक' मन प्रतीत ।। 4818
आँख मूंद ही चलत थे, आँख मूंद सब काम ।
हाटी पर वे बैठते, करते वनिज तमाम ।। 4819
यह अनुग्रह नाथ का, जो मुलख पै होय ।
यह स्थिति न पा सका, पूर्व काल में कोय ।। 4820
[1] हाटी बैठे मुलख को, जभी ठगा कुम्हार ।
आ गये तब नाथ खुद, पकड़ लिया तत्काल ।। 4821
क्षमा मांगी कुम्हार ने, और दिये सब दाम ।
तब छोड़ा कुम्हार को, ऐसे दयालु राम ।। 4822
[2] नाथ अनुग्रह की कहूं, एक और मैं बात ।
अचरज लागे सबन को, सुन कर वह मम तात ।। 4823
प्रभु बैठे काश्मीर में, मुलख था अमृतसार ।
धड़ाम गिरा वह छत से, खाड़ भया तत्काल ।। 4824
चोट लगी न लेश भी, लोग भये हैरान ।
बाजू टूटा नाथ का, सभी भये परेशान ।। 4825

[1] रामायण दोहा – 794 आदि
[2] रामायण दोहा – 2525 आदि

यह अनुग्रह नाथ का, जिसके वे प्रतिपाल ।
उसकी करते हैं प्रभु, सदा सार संभाल ।। 4826
[1] सुनो घटना इक और भी, इस प्रसंग में तात ।
मुलखराज को संग ले, प्रभु गये इक प्रात ।। 4827
पर्वत के इक शिखर पर, कांगड़ा के प्रदेश ।
लगी समाधी मुलख की, देह की सुधि न लेश ।। 4828
निवास वहां से दूर था, सब का चित्त उदास ।
अब चालें किमि गेह को, इसी सोच में खास ।। 4829
चिन्तित सब को देखकर, प्रभु कहा "हे तात ।
मुलखराज तुम उठ चलो, लाय होश निज गात" ।। 4830
मुलख राज उठ खड़ भया, प्रभु का पा आदेश ।
'चलो' प्रभु ने जब कहा, देर लाई न लेश ।। 4831
भाग चला वह शिखर से, ऊबड़ खाबड़ पाथ ।
न जाने क्या होत तब, प्रभु न होते साथ ।। 4832
अनुग्रह होय नाथ का, बांका होत न बाल ।
'सेवक' खूब पहचाने, सोचे जब निज हाल ।। 4833
पर्वत नीचे आय कर, गिरा समाधि बीच ।
देखी आकर नाथ जी, दशा देह समीच ।। 4834
उसी दशा में ले गये, कृपा कर के नाथ ।
भक्तन पर जो अनुग्रह, 'सेवक' गाता गाथ ।। 4835

[1] रामायण दोहा 1259 आदि

मुलख राज पर नाथ की, कृपा का सदा हाथ ।
'सेवक' को प्रतीत यह, प्रभु मुलख के साथ ।। 4836
एक बार प्रभु देखा, मुलख को बहुत उदास ।
[1] पत्नी के देहान्त पर, दीना प्रभु आश्वास ।। 4837
पत्नी उतरी स्वर्ग से, दिव्य रूप को धार ।
लागी कहन वह मुलख को, "त्यागो शोक विचार ।। 4838
सुखी हूँ मैं नाथ मम, प्रभु अनुग्रह पाय ।
संतोष मुझे है जो तुझे, गुरु पूर्ण मिल पाय ।। 4839
बहुत अनुग्रह है भया, हम दोनों पै नाथ ।
लोक और परलोक का, सुख तो प्रभु के हाथ" ।। 4840
चली गई फिर लोक निज, मुलख को शीश झुकाय ।
शोक भया तब दूर सब, ऐसी प्रभु की दाय ।। 4841
प्रभु अनुग्रह से भया, जगति योग विस्तार ।
इस समान न ज्ञान है, दूसर इस संसार ।। 4842
यह ज्ञान प्रभु जी दिया, ले कर जग अवतार ।
भूल गया था जगत यह, शक्ति योग अपार ।। 4843
प्रभु बतलाया जगत को, "शक्ति योग महान ।
को शक्ति नहीं दूसरी, जो हो योग समान" ।। 4844
दीने बहु दृष्टांत उन, हो जिमि जग को ज्ञान ।
अभ्यास व वैराग्य से, शक्ति मिलत महान ।। 4845

[1] रामायण दोहा – 1126

[1] उपाख्यान धृतराव का, प्रभु सुनाया आप ।
राजा से योगी भया, मिटा सकल संताप ।। 4846
राज पाट को छोड़ कर, दे पुत्र को राज ।
शून्य में योग कमाया, त्यागे जग के काज ।। 4847
देह की शक्ति से बड़ी, मन की शक्ति जोय ।
प्राप्त किया उस शक्ति को, दीर्घ काल संजोय ।। 4848
आत्म लाभ भी कर लिया, दीर्घ काल अभ्यास ।
आत्मिक बल के सामने, टिके न कुछ भी खास ।। 4849
ईश्वर्य शक्ति जानिये, आत्म बल जो होय ।
राजा को वह मिल गई, गुरु कृपा से सोय ।। 4850
उसी शक्ति को पाय कर, भया था पूर्ण काम ।
शरणी आया पूत जब, कीना उसका काम ।। 4851
सत्य बात है यह कही, जिस कुल योगी होय ।
जो हों उसके बांधव, भला सभी का होय ।। 4852
रघावरराय सपूत था, धृतराव का जोय ।
परास्त भया ललाह से, च्युत राज से सोय ।। 4853
बहुत विनय जब उस करी, आय पिता के पास ।
दिव्य दीन आशीश उस, दिव्य शक्ति भी खास ।। 4854
निज पिता से ग्रहण कर, दिव आशिष को सोय ।
परास्त कीन ललाह उस, पुनः राज्य को गोय ।। 4855

[1] रामायण दोहा 919 से आगे

समस्त कथा प्रसंग से, दें ज्ञान यह नाथ ।
योग से शक्ति बढ़त है, आत्मिक बल के साथ ।। 4856
उस शक्ति के सामने, अन्य शक्तियां हीन ।
[1] योग से बढ़ कर शक्ति न, ज्ञान सबन को दीन ।। 4857
यही अनुग्रह नाथ का, मानवता पर जोय ।
कहा "करे जो योग को, शक्ति वही संजोय" ।। 4858
जनता ग्राहे सीख जब, इस कथा से मीत ।
जगती का कल्याण हो, करे योग से प्रीत ।। 4859
प्रभु के सन्मुख लक्ष्य यह, होय योग प्रचार ।
योग के अभ्यास से हि, जन गण का उद्धार ।। 4860
जो भी आया शरण में, लगाया मार्ग योग ।
जीवन उसका बन गया, योग किया तज भोग ।। 4861
[2] ऐसे बहुत उदाहरण, जहां अनुग्रह कीन ।
डाक्टर राम गोपाल, प्रभु जी शरणी लीन ।। 4862
भटक रहा था जगत में, भ्रांतिन के पड़ बीच ।
माटी की इक चुटकी से, भया ज्ञान समीच ।। 4863
रहत मुरादाबाद में, जाता आर्य समाज ।
प्रीती उसकी योग में, रुचि न ले निज काज ।। 4864
गुरु योगी की खोज में, रहता दिन व रात ।
पूर्ण योगी नहीं मिला, थी उलझन साक्षात ।। 4865

---

[1] नास्ति योगात् परं बलम्
रामायण दोहा – 926

[2] रामायण दोहा – 950 से आगे

नाथ सहारनपूर में, ठहरे थे इक बार ।
सुन महिमा वह नाथ की, चला चित्त कुछ धार ।। 4866
देखा जब उस नाथ को, पण्डित जैसा वेश ।
मुड़ चला तभी दूर से, श्रद्धा भई न लेश ।। 4867
किसमत में कुछ और था, लौटा मित्र साथ ।
प्रभु ने उस को निरख कर, बिठा लिया इक हाथ ।। 4868
अंतर्यामी नाथ ने, वह अधिकारी देख ।
चुटकी लीनी राख की, और कीन उल्लेख ।। 4869
"मुख में रख इस राख को, निज जा बैठो ध्यान ।
इच्छा तेरी पूर्ण हो, करें कृपा भगवान" ।। 4870
माटी के संकेत से, प्रभु अनुग्रह कीन ।
सिद्ध भया वह योग में, और भया प्रवीण ।। 4871
शिष्य भया फिर नाथ का, वह डाक्टर प्रवीण ।
[1] सेवा आश्रम की करत, पुस्तक लिखीं नवीन ।। 4872
धर्म स्थापनार्थ प्रभु, आवें ले अवतार ।
लोप धर्म का निरखकर, उपदेशें आचार ।। 4873
भक्तों को उपदेश दें, रोचक कह इतिहास ।
[2] कुमुद का दृष्टांत देंय, जिसमें शिक्षा खास ।। 4874
मात-पिता की सेव है, सर्वधर्म का मूल ।
अपनाया था कुमुद ने, धर्म का यह असूल ।। 4875

---

[1] 'नेत्र ज्योति प्रकाशिनी नेति' और 'योग सिद्धि' पुस्तकें

[2] रामायण दोहा 957 से आगे

महा अनुग्रह नाथ का, दी शिक्षा यह मीत ।
मात पिता की सेव में, रहे सदा ही चीत ।। 4876
बेला नारी कुमुद की, पति परायण पूर्ण ।
बितावे धर्म कर्म में, निज समय संपूर्ण ।। 4877
बेला के इस कर्म से, शिक्षा दीनी जोय ।
उस को नहीं जग भूले, जन पाले हर कोय ।। 4878
दान दिये धन बढ़त है, शिक्षा दीनी नाथ ।
जीव दुखी वह होत है, जिस के चित्त स्वार्थ ।। 4879
दान की महिमा जो कथी, इस कथा में नाथ ।
नाथ अनुग्रह कर कहें, दो धर्म इक साथ ।। 4880
स्वर्ग मिलत है दान से, सुख जहां पर पूर्ण ।
जो चाहे जन सुख मिले, हो दानी संपूर्ण ।। 4881
बेला पाया स्वर्ग को, जो उसे अभिप्रेत ।
सुख में थी वह रह रही, खिन्न कुमुद का चेत ।। 4882
बेला ने था कह दिया, सुख मिला संपूर्ण ।
स्वर्ग में शांति पर नहीं, इस विध सुख अपूर्ण ।। 4883
लौटा कुमुद स्वर्ग से, योग साधना हेत ।
जिस से उस को मिल सके, मुक्ति जो अभिप्रेत ।। 4884
महा अनुग्रह नाथ का, दिया सत्य का ज्ञान ।
मोक्ष योग का लक्ष्य है, यत्न करें यह जान ।। 4885
गति धर्म की गहन है, इसमें न संदेह ।
नीर क्षीर विलग किया, प्रभु ने बिन संदेह ।। 4886

महा अनुग्रह नाथ का, गहें सत्य का पक्ष ।
जग को जिमि प्रतीत हो, सत्य धर्म का लक्ष्य ।। 4887
घटन कहूं इक नाथ की, मिले सत्य का ज्ञान ।
माया बाधक न बने, प्रभु जीवन में जान ।। 4888
[1] प्रभु जीवन की घटन यह, लाकर सुनिये ध्यान ।
भक्तों के प्रभु संग में, थे निज बैठे स्थान ।। 4889
था गोपाला नन्द भी, प्रभु चरणों में लीन ।
उद्दण्डी ने इक आकर, अपशब्द कह दीन ।। 4890
उस शब्द को श्रवण कर, चित्त सबन के रोष ।
बैठे प्रभु गंभीर थे, गिनें लेश न दोष ।। 4891
उसको तो अभिमान था, निज शक्ति का मीत ।
गोपाल पर न सह सका, रोष भया उस चीत ।। 4892
ताड़ दिया उस सिद्ध को, जिमि हो उसको बोध ।
अच्छा लगा न नाथ को, उस कीना जो क्रोध ।। 4893
दोष भक्त का देख कर, कीन अनुग्रह नाथ ।
दोष जिमि वह दूर हो, और मिले सत पाथ ।। 4894
क्रोध कीन गोपाल ने, दण्ड दिया तब नाथ ।
"दूर रहो तुम जाय कर, रहो न हमरे साथ" ।। 4895
दण्ड भी एक अनुग्रह, गुरु जनों का जान ।
दण्ड से हि तो होत है, शिष्यन का कल्याण ।। 4896

[1] रामायण दोहा – 982 से आगे

दण्ड पाये न शिष्य यदि, दोष किमि हों दूर ।
उसके सदा ही मन में, रहे ग़रूर ज़रूर ।। 4897
इस में एक रहस्य भी, जानें जो भगवान ।
इक संस्कारी भक्त का, था होना कल्याण ।। 4898
निज मग पै था जा रहा, ध्यान मग्न गोपाल ।
मग में उसको मिल गया, इक महन्त उस काल ।। 4899
निरखा उस गोपाल पर, तेज विशेष महान ।
कहन लगा महन्त तब, 'तव को गुरु सुजान' ।। 4900
गोपाल महिमा दी कथ, प्रभु जी की उस पास ।
इच्छा उस मन ऊपजी, आया प्रभु के पास ।। 4901
था संस्कारी पुरुष वह, मिला ध्यान का दान ।
कीन अनुग्रह नाथ जी, भक्ति कीन प्रदान ।। 4902
करें भक्ति प्रदान जब, करें दोष भी दूर ।
अहंकार का दोष तो, प्रभु को न मंजूर ।। 4903
महन्त में बहु दोष था, अहं भाव का मीत ।
दण्डित उसको प्रभु किया, एक विलक्षण रीत ।। 4904
[1] आया अवसर कुंभ का, प्रभु जी गये प्रयाग ।
बाल कृष्ण महन्त तब, गया प्रभु पग लाग ।। 4905
गंगा तट पर जब गये, कीना नाव विहार ।
नाविक भक्त अनन्य था, प्रभु चरणों में प्यार ।। 4906

[1] रामायण दोहा – 1001 से आगे

लौटत समय कुछ न दिया, नाविक को प्रसाद ।
अनुग्रह आशिर्वाद हि, नाविक मन आह्लाद ।। 4907
मार्ग में तब महन्त ने, बात प्रभु से कीन ।
'भूल भई है नाथ जी, न उतराई दीन' ।। 4908
प्रभु जी ने मुस्करा कर, दस का नोट थमाय ।
कहा "नाविक को देना, हमरी भूल बताय" ।। 4909
जा महन्त ने दे दिया, दस का उस को नोट ।
नाविक के मन पै लगी, एक अनोखी चोट ।। 4910
और उसे तब कह दिया, "हे साधु महाराज ।
प्रभु अनुग्रह छीन लिया, मुझसे तुम ने आज ।। 4911
मेरा मन यह कहत है, जिस कर में था नोट ।
उस कर में तुम को लगे, कुष्ट रोग का खोट" । 4912
महन्त के मन गर्व था, उत्तर कुछ न दीन ।
लौटा विस्मित होय कर, अहं भाव में लीन ।। 4913
इक साधारण भक्त से, मिला हुआ वह शाप ।
नाथ अनुग्रह से भया, महंत को अभिशाप ।। 4914
नाथ अनुग्रह से भये, दो कार्य इक साथ ।
भक्ति पाई एक ने, कुष्ट अन्य के हाथ ।। 4915
कुष्ट रोग को पाय कर, गर्व भया था चूर ।
गुरु में गल्ती देखनी, प्रभु को न मंज़ूर ।। 4916
इक बार प्रभु चल दिये, काश्मीर की ओर ।
जाने न क्या भाव था, समझे न को और ।। 4917

था करना कल्याण उन, बहु जनों का मीत ।
दूर स्थित प्रदेश वह, जहां वैदि की रीत ।। 4918
कश्यप मुनि का देश वह, भारत का सिरमौर ।
आदि नाथ का वास जो, चले प्रभु उस और ।। 4919
पावन देश विशेष वह, शंकर का लो जान ।
उपासक सब जन शिव के, सदैव से लो मान ।। 4920
शिव भूमी वह जानिये, खास विश्व में एक ।
ज्ञान पीठ विख्यात थी, दार्शनिक भये अनेक ।। 4921
भारत तो विख्यात था, सकल विश्व में मीत ।
शक्तिशाली देश जो, सकत जगत को जीत ।। 4922
ब्राह्मण ब्रह्म ज्ञानी, क्षात्रि शूर में वीर ।
वैश्य समान कुबेर के, सेवक गहन गंभीर ।। 4923
शक्ति शाली देश था, सब विध लेवो जान ।
असुर यहां जब आ गये, बिगड़ी इसकी शान ।। 4924
सबल देश में आ घुसे, निर्बल आसुर जीव ।
यह अनोखा खेल इक, लागे बहुत अजीब ।। 4925
आसुरालय तब बन गये, जहां शिवालय मीत ।
छवि बिगड़ी काश्मीर की, चली आसुरी रीत ।। 4926
प्रदेश उसमें जा रहे, विश्व नियन्ता नाथ ।
गुरु माता को लेय कर, करने भक्त सनाथ ।। 4927
अमरितसर से चलि कर, आये पिंडी नाथ ।
अनुग्रह पात्र बन गई, मासी भयी सनाथ ।। 4928

मासी मुलख राज की, मुलख मात की बहन ।
भाग्य उदय उसका भया, वहां बितायी रैन ।। 4929
वहां बिताई रैन उन, यात्रा करें प्रात ।
आज्ञा प्रभु की थी भयी, सुख में बीती रात ।। 4930
मासी को संग लेकर, सकल जगत के ईश ।
कोह मरी की ओर को, प्रात चले जगदीश ।। 4931
कोह मरी को पार कर, आता है काश्मीर ।
मार्ग में कई दृश्य थे, शीतल जल समीर ।। 4932
गुरुमाता को नाथ ने, सकल कराया ज्ञान ।
मारग जिस पर जा रहे, सुन्दर सकल स्थान ।। 4933
प्रश्न किये कुछ मात ने, जो थे मन में आय ।
कृपा कीनी नाथ तब, दिया सकल समझाय ।। 4934
किरपा सागर नाथ से, मिलता सब को ज्ञान ।
इस यात्रा में मात पर, अनुग्रह भया महान ।। 4935
शिव का जो काश्मीर है, किमि भया अपवित्त ।
प्रभु बतलाया मात को, खिन्न प्रभु का चित्त ।। 4936
ऐसा भी इक काल था, भक्त सभी नर नार ।
असुरों का तो नाम भी, न था इस संसार ।। 4937
शिव मन्दिर थे सब जगह, भक्तों की भरमार ।
गूंज रहत था गगन तब, हर हर की पुकार ।। 4938
अनेक शिवालय देश के, असुरन कीन पलीत ।
पाप कर्म करते असुर, असुरन की यह रीत ।। 4939

अब तो कुछ ही रह गये, शिव के पूज्य स्थान ।
हो एकत्र भक्त जहां, निज करें अनुष्ठान ।। 4940
अमर नाथ बहु दूर है, शंकराचल समीप ।
क्षीर भवानी मात भी, जा सकत वहां जीप ।। 4941
'मटन' आदि कुछ तीर्थ हैं, मिलते स्थान स्थान ।
खण्डित असुरों ने किये, शिव के बहुत स्थान ।। 4942
लता पाप की बढ़ गई, धर्मी भये परास्त ।
बेला कड़वी बढ़ गयी, कट जाये साक्षात ।। 4943
प्रभु बतलाया मात को, हैं शंकर भगवान ।
देव सभी मन से करें, सेव शंकर की आन ।। 4944
मुख्य स्थान काश्मीर का, श्री नगर लो जान ।
मासी के वहां गृह में, वास कीन भगवान ।। 4945
मासी मासड़ दंपती, सेव करें मन लाय ।
अनुग्रह पात्र बन गये, प्रभु कृपा को पाय ।। 4946
प्रभु करते उपदेश थे, उसी भवन में मीत ।
जनता चल कर आत थी, जिनें योग से प्रीत ।। 4947
बैंक का इक बाबू भी, नित आये प्रभु पास ।
प्रभु का दिव्य रूप वह, मनन करे हर श्वास ।। 4948
सभी कहें यह भक्त है, अनन्य प्रभु का मीत ।
विरले को ही होत है, ऐसी प्रभु से प्रीत ।। 4949
इक सज्जन था और भी, आता प्रभु के पास ।
वह दारोगा जेल का, प्रभु चरणि विश्वास ।। 4950

बग्घी में इस्वार हो, आता प्रभु के पास ।
बाबू से हम बात करें, उपजी इच्छा खास ।। 4951
सायं को जब घर चला, बाबू लीना संग ।
बैठे गाड़ी में तभी, चला योग प्रसंग ।। 4952
आधा मार्ग जभी भया, कहन लगा दारोग ।
"बाबू अब तुम जा सकत, था इतना संयोग" ।। 4953
गाड़ी से उतराय कर, चला गया निज धाम ।
बाबू पैदल चल पड़ा, घनी भयी थी शाम ।। 4954
बाबू के मन रोष था, घर छोड़ा न मोय ।
इच्छा पूरी जब भये, कौन किसी का होय ।। 4955
रात बिताई रोष में, प्रात गया प्रभु पास ।
बाबू देखा मुलख ने, बात लगी कुछ खास ।। 4956
आज न इसका ध्यान है, डूबा चिंता मांझ ।
यह था मग्न ध्यान में, जब गया था सांझ ।। 4957
मुलख निवेदन कर दिया, प्रभु से उसका हाल ।
प्रभु मुस्काये लेश तब, बोले दीन दयाल ।। 4958
चिरञ्जीव तुम जानते, इसका लगता ध्यान ।
रोष हो मन योगी जब, होत अनर्थ महान ।। 4959
योगी जिस पै करत है, अपराधी पै रोष ।
उस पै संकट आ गिरत, योगी पै भी दोष ।। 4960
प्रभु ने देखा जब प्रिय, उपजा इस मन रोष ।
दारोगा के कर्म पर, इस को रही न होष ।। 4961

वञ्चित कीना ध्यान से, अनर्थ होय न कोय ।
यही अनुग्रह नाथ का, शरणागत जो गोय ।। 4962
पाप कर्म से एक जन, संकट से था अन्य ।
प्रभु अनुग्रह से बचे, दोय भये जन धन्य ।। 4963
तारे जन अनेक उन, श्रीनगर के बीच ।
कैदी पाया अनुग्रह, जोय जेल के बीच ।। 4964
आज्ञा दीनी मुलख को, संग दारोगा जाय ।
देखो उसके जेल को, फिर बतलाना आय ।। 4965
एक पुरुष था कैद में, पड़ा जेल के बीच ।
देखा जा जब मुलख ने, उसके चित्त समीच ।। 4966
उसके मन में राम का, हो रहा था प्रकाश ।
प्रकट किया उस मुलख को, राम प्रभु उस पास ।। 4967
वह ही राम उस देखा, मुलख चित्त के मांझ ।
आभारी वह मुलख का, मिला जेल के मांझ ।। 4968
सकल अनुग्रह नाथ का, कहा मुलख जी राज ।
"आप सरीखे भक्त से, मेल भया है आज" ।। 4969
कौन भक्त था जानते, वह विधर्मी एक ।
समदर्शी हैं नाथ जी, सब भक्तों की टेक ।। 4970
उसी भक्त के कारणे, मुलख प्रेरा नाथ ।
नाथ अनुग्रह सबन पर, कौन सकत कथ गाथ ।। 4971
अनाचार को देख कर, व्यापत जग में जोय ।
प्रभु सिखलावें सबन को, पाप करे न कोय ।। 4972

पाप करे न कोय जन, डरें पाप से लोग ।
मदिरा जान पिशाचिनी, उस का त्यागें भोग ।। 4973
उपाख्यान मदिर यज्ञ का, प्रभु सुनाया खास ।
मदिर यज्ञ के कारणे, भया नगर का नाश ।। 4974
महा अनुग्रह नाथ का, जग पै जानो मीत ।
[1] दीनी शिक्षा जगत को, न हो सुरा से प्रीत ।। 4975
सीख प्रभु की जो सुनें, बच पायें वे लोग ।
अधः पतन में जा पड़ें, करें सुरा का भोग ।। 4976
सीख प्रभु की ग्रहण कर, भक्त भये कृतार्थ ।
अनुग्रह मानें नाथ का, हाथ लगा परमार्थ ।। 4977
सीख प्रभु की भूल कर, दुखी सदा जन होय ।
स्मरण करें प्रभु के वचन, लिपि बद्ध जो होंय ।। 4978
अन्त पाप का दुख है, मिलत धर्म से सुख ।
यह अपेल सिद्धांत जो, रहे सदा सन्मुख ।। 4979
पाप पुण्य का फल कथा, प्रभु ने जग के हेत ।
[2] मृत्यु का भी रहस्य कथा, हो ज्ञान अभिप्रेत ।। 4980
स्पष्ट रूप से कथ दिया, गूढ़ सृष्टि का ज्ञान ।
यह जानों है नाथ का, अनुग्रह इक महान ।। 4981
यह सृष्टि इक वृक्ष है, रोपा जो भगवान ।
जड़ ऊपर है वृक्ष की, विस्तृत शाखा जान ।। 4982

---

[1] रामायण दोहा 1078 से आगे

[2] रामायण दोहा 1094

ऊपर नीचे सब जगह, शाखा का विस्तार ।
अंधकार है छा रहा, दीखत आर न पार ।। 4983
उसी वृक्ष के आश्रित, सभी जीवों का वास ।
फल लगें जो वृक्ष पर, भोग सबन का खास ।। 4984
मधुर फल भी लगत हैं, कड़वे खाटे कोय ।
रुचिकर जिसको जो लगत, जीव गाहे सोय ।। 4985
बार बार इस वृक्ष पर, जन्मत मरता जीव ।
अंधकार में जी रहा, यह इक चक्र अजीव ।। 4986
पांच तत्व की शाख हैं, तीन गुणों के संग ।
प्रकृति बांधत जीव को, अनादि है प्रसंग ।। 4987
इस बंधन से छूटना, सरल नहीं है काम ।
अज्ञ तज्ञ सब ही बंधे, जिनके मन में काम ।। 4988
काम करे निज काम को, बचे न उससे कोय ।
योगी गुरु जिस को मिले, छूटन चाहे सोय ।। 4989
छूटन चाहे सोय यदि, योग करे मन लाय ।
कई जन्म की साधना, से अभीष्ट फल पाय ।। 4990
जन्म मरण का क्रम बन, इससे आत्म विकास ।
योगी गुरु को पाय जो, उसके मन विश्वास ।। 4991
मृत्यु से जन सभी डरें, योगी डरे न लेश ।
डर मृत्यु का जोय कथा, वह है एक "क्लेश" ।। 4992
अविद्या से है उपजा, नाम है "अभिनिवेश" ।
मृत्यु को ध्रुव जान कर, योगी डरे न लेश ।। 4993

जन्म लिया जब जीव ने, ध्रुव मरण भी होय ।
परम सत्य यह तथ्य है, क्यों जन भय को गोय ।। 4994
मृत्यु के बिना मोक्ष भी, पा सकता न कोय ।
मृत्यु ध्रुव इक तथ्य है, क्यों जन भय को गोय ।। 4995
जीवन का यह रहस्य सब, और मृत्यु का ज्ञान ।
दीना प्रभु जी जगत को, परम अनुग्रह मान ।। 4996
है अनुग्रह प्रभु किया, सकल विश्व के हेत ।
स्थापित आश्रम कीन उन, शिक्षा सब जग लेत ।। 4997
सीख जहां है योग की, हठ व राज समेत ।
भक्ति का भी लाभ जहां, आय भक्त जन लेत ।। 4998
अमृतसर में लेय जन्म, पावन वह थल कीन ।
ग्राम छेहरटा में फिर, स्थापित आश्रम कीन ।। 4999
ग्राओं के उस खेत पर, अनुग्रह भया विशेष ।
कन कन उसका हो गया, पावन दिव्य निशेष ।। 5000
दो नगरों के मध्य में, आश्रम भया प्रसिद्ध ।
दूर दूर से आय कर, जन भये बहु सिद्ध ।। 5001
पश्चिम में था लवपुर, पूर्व अमृत सार ।
दोनों नगरों पर भयी, प्रभु की कृपा अपार ।। 5002
प्रभु अनुग्रह पाय कर, सीखा लोगन योग ।
रोगी रोग मुक्त भये, धन्य भये बहु लोग ।। 5003
लवपुर था पंजाब का, केन्द्र मुख्य स्थान ।
अमृतसर प्रसिद्ध था, धार्मिक नगर महान ।। 5004

दोनों नगरों में प्रभु, कीन योग प्रचार ।
प्रभु अवतारी राम ने, कीन योग उद्धार ।। 5005
लवपुर में भी आश्रम, का कीन निर्माण ।
चमत्कार जो वहां भये, सब जन करें बखान ।। 5006
मरणासन्न एक स्त्री, वर्षों से बीमार ।
कर कर के उपचार बहु, मानी डाक्टर हार ।। 5007
ठीक किया उस नार को, प्रभु कीना उपकार ।
धूम मची सब नगर में, प्रभु की जय जय कार ।। 5008
कैदी था इक जेल में, पागल भी था साथ ।
पास लाय कर नाथ के, सौंप दिया उन हाथ ।। 5009
राम लाल ने देख कर, जाना उनका भाव ।
लेय रहे मम परीक्षा, इनका न सद्भाव ।। 5010
महा प्रभु का स्मरण कर, कह दिया उन तांहि ।
मम नदी पर संग चलो, ठीक करें उस थांहि ।। 5011
मान गये वे लोग सब, गये प्रभु के साथ ।
रावी नदी पर पहुंच कर, खड़ भये इक हाथ ।। 5012
प्रभु लीनी इक औषधि, उस जंगल से मीत ।
पागल को सुंघाई जब, स्वस्थ भया सब रीत ।। 5013
महा अनुग्रह नाथ का, था हुआ उस काल ।
ला-इलाज पागल भया, स्वस्थपूर्ण तत्काल ।। 5014
लवपुर पुरातन नगर को, कहते लोग लाहौर ।
विस्तृत प्रभु की कीर्ति, नगरी चारों ओर ।। 5015

स्वस्थ भये अनेक जन, कर के प्रभु से योग ।
नाथ अनुग्रह से भये, रोगी बहुत निरोग ।। 5016
महा अनुग्रह नाथ का, जान गया संसार ।
बिन औषध ही रोग का, करते थे उपचार ।। 5017
भूल गया था योग को, उस काल संसार ।
कीना तब आ नाथ ने, पुनः योग उद्धार ।। 5018
लवपुर जिन जिन योग को, कीना प्रभु से आन ।
निरोग भये वे सब जन, दुख से जो परशान ।। 5019
महा अनुग्रह नाथ का, भया जगत पै मीत ।
क्रान्ति लायी योग की, एक अनोखी रीत ।। 5020
भागीरथ लाया गंग तब, कीन देश खुशहाल ।
राम ले आया योग अब, देश जभी बेहाल ।। 5021
समान अनुग्रह दो का, उपमा जिस की नांहि ।
महा पुरुष इतिहास के, चरचा है सब थांहि ।। 5022
योग विरोधी लोग भी, लागे करने योग ।
की ग्रहण प्रभु शरण तब, त्याग जगत के भोग ।। 5023
षट्कर्म सब योग के, आसन मुद्रा साथ ।
प्रभु सिखलाते सबन को, खुद अपने ही हाथ ।। 5024
गोपाला नन्द को प्रभु, लाये लवपुर साथ ।
दीना अवसर सेव का, भया था वह सनाथ ।। 5025
उस पै कीन अनुग्रह, सेव करत मन लाय ।
प्रभु भक्ति और योग को, नगरि दीन फैलाय ।। 5026

लोकप्रिय वह हो गया, उस नगर के बीच ।
प्रभु भक्ति की लहर वहां, विस्तृत भयी समीच ।। 5027
साधन सब हठ योग के, राज योग भी साथ ।
जनता को सिखलात वह, जन गण भये सनाथ ।। 5028
राम की कृपा जब भये, होत सफल सब काम ।
राम अनुग्रह मुख्य है, राम हि सुख के धाम ।। 5029
कुछ काल के बाद फिर, आये मुलख लाहौर ।
प्रभु ने था गोपाल को, भेजा दूसर ठौर ।। 5030
लवपुर का आचार्य जब, भया मुलख जी राज ।
प्रभु कृपा से और अधिक, लागा होने काज ।। 5031
सभी योग के साधन, प्रभु भक्ति भी साथ ।
प्रभु कृपा से होन लगी, जनता भयी सनाथ ।। 5032
षट्कर्म के साधन, और प्राणायाम ।
स्वामी जी से सीखते, आय प्रात व शाम ।। 5033
परम अनुग्रह नाथ का, देश परतन्त्र मांझ ।
करते आ जन योग थे, प्रातः अथवा सांझ ।। 5034
रोगी ला इलाज बहु, कीने योग निरोग ।
जान लिया संसार ने, योग निवारे रोग ।। 5035
प्रभु किरपा से योग का, हुआ पुनरुद्धार ।
लवपुर में तो योग का, भया बहुत प्रचार ।। 5036
साधन सब हठ योग के, सीखें आकर लोग ।
दूर भये बहु जनन के, नज़ला आदि रोग ।। 5037

उतरे चश्में आंख के, मस्तक के वा रोग ।
दमा आदि बहु व्याध से, मुक्त भये बहु लोग ।। 5038
प्रभु विराजत अमृतसर, मुलखराज लाहौर ।
फैल गई थी योग की, प्रसिद्धि चारों ओर ।। 5039
मल्लहन इक अंग्रेज का, बिगड़ा बहुत जुकाम ।
नेति किरया से भया, पूर्ण उसे आराम ।। 5040
जाकर निज उस देश में, कीना सबन बखान ।
भारत का जो योग है, जानो ज्ञान महान ।। 5041
अनुग्रह इस विध नाथ का, होत सभी पै मीत ।
भेद भाव न चित्त धरें, प्रभु की सबसे प्रीत ।। 5042
दें निशुल्क वे सीख थे, उनका यह फरमान ।
यौगिक विद्या बेचना, एक गुनाह महान ।। 5043
सब जन आ थे सीखते, साधन वे बिन खोद ।
दरिद्र वा अदरिद्र का, प्रभु चरणि नहीं भेद ।। 5044
प्रभु देते उपदेश थे, सबल बनो कर योग ।
दुर्बलता इक दोष है, महा दोष है रोग ।। 5045
'षट्कर्म' सिखलाय कर, 'जीवन तत्' भी साथ ।
बिठलाते थे ध्यान में, खुद योगेश्वर नाथ ।। 5046
दही दूध व सब्जियां, यह यौगिक आहार ।
वर्जो राजसिक खाना, जिसका है प्रचार ।। 5047
जन भूले थे योग को, प्रभु जी कीन सचेत ।
मानव जीवन है मिला, योग-मोक्ष के हेत ।। 5048

तीर्थन में भी योग का, न था मिलत निशान ।
ऋषिकेश में जाय कर, प्रभु लीना इस्थान ।। 5049
योग साधन का आश्रम, वहां बनाया नाथ ।
योग धाम इक खुल गया, गंगा तट के साथ ।। 5050
साधु जन अनभिज्ञ जोय, योग धर्म से मीत ।
आकर शरणी नाथ की, योग करें ला चीत ।। 5051
परम अनुग्रह नाथ का, तीर्थ था भया पवित ।
हृषिकेश जोय कृष्ण का, होय योग वहां नित ।। 5052
साधु और गृहस्थिजन, समझ लीन उन बात ।
योग बिना जो धर्म है, बने न उस से बात ।। 5053
ईश्वर घट घट बसत है, सभी कहें यह बात ।
योग बिना न हो सकत, ईश्वर का साक्षात ।। 5054
योगाश्रम की स्थापना, कीनी जब भगवान ।
नियम बनाये नाथ ने, दीना सबन ज्ञान ।। 5055
दिनचर्या जो सबन की, वह भी दीन बताय ।
प्रभु अनुग्रह से भक्त, थे उस पर चल पाय ।। 5056
दिनचर्या नर नारी की, पृथक पृथक लिखवाई ।
साधुन की भी नाथ ने, अलग ही बनवाई ।। 5057
कर अनुग्रह सबन पर, कीना प्रभु सचेत ।
योग धर्म ना सुगम है, है जो मुक्ति हेत ।। 5058
आसन अनेक योग के, प्रभु सिखलाये आन ।
योग मुद्रा का प्रभु जी, दीना सूक्ष्म ज्ञान ।। 5059

इक्कीस मुद्रा योग की, सब का दीना ज्ञान ।
इन के लाभ विशेष जो, सबन बतलाये आन ।। 5060
प्रभु का यह उपकार तो, रहे सदैव स्मरण ।
ऋषि मुनियों की सीख पर, होय सदा आचरण ।। 5061
'महाबेध' अभ्यास से, जागृत कुण्डली होय ।
महा अनुग्रह नाथ का, बोध कराया जोय ।। 5062
भ्रमित भया संसार था, माया के पड़ पाश ।
प्रभु छुड़वाया जगत को, करा स्वयं अभ्यास ।। 5063
होत कुण्डली का जभी, सहस्रार में वास ।
काल चक्र से मुक्त जन, बात बताई खास ।। 5064
मुद्रन का अभ्यास तो, जिन कीना जग आन ।
रोग मुक्त वे हो गये, प्रभु अनुग्रह मान ।। 5065
दिव्य ऋषियन की विद्या, को भूला संसार ।
मुद्रा प्राणायाम का, प्रभु कीना प्रचार ।। 5066
दुखी जीव बहु जगत में, सुखी दीखे न कोय ।
शरण प्रभु की जो गहे, छूटे दुख से सोय ।। 5067
बहुत ऐसे प्रमाण हैं, हुए सुखी जो लोग ।
प्रभु शरण में आय कर, कीना जब उन योग ।। 5068
विधवा नारी एक थी, ऋषि देवी था नाम ।
मिली शरण जब नाथ की, दुख का रहा न नाम ।। 5069
प्रभु भक्ति में लग गई, बैठ समाधि बीच ।
ब्रह्मानन्द प्राप्त भया, सुख भया समीच ।। 5070

प्रभु सेवा में रह रत, सबन कराती योग ।
धन्य धन्य कहते उसे, आश्रम में आ लोग ।। 5071
ऐसी ही इक और भी, दुख की मारी नार ।
वैधव का दुख सह रही, रहती प्रभु पुकार ।। 5072
नहीं सुनें प्रभु बात को, बिना गुरु के मीत ।
बहुत दुखी हो बोलती, किसमत मम विपरीत ।। 5073
गुरु रूप वहां थे प्रभु, जानें उसका हाल ।
आ गई जब शरण में, द्रौपदि भयी निहाल ।। 5074
अनुग्रह उस पै जो भया, वह था आशातीत ।
भूल गया सब दुख उसे, लगा योग में चीत ।। 5075
सीखा उसने योग को, नित आश्रम में आय ।
आज्ञा प्रभु की पाय कर, नारिन को सिखलाय ।। 5076
प्रभु भण्डारी योग के, जो शरण में आय ।
योग साधना सीख वह, जनता को सिखलाय ।। 5077
सकल विश्व पर नाथ का, है अनुगह मीत ।
चर अचर सब जगत पर, जान अनोखी प्रीत ।। 5078
द्वापर तारी द्रौपदी, साड़ी दे भगवान ।
कलियुग तारी द्रौपदी, दे योग का दान ।। 5079
दर्शन की थी लालसा, ललना को हर काल ।
बिन दर्शन के होत थी, द्रौपदी बेहाल ।। 5080
करते प्रभु जी ज्ञान की, उससे जब कुछ बात ।
अर्ज़ करत थी द्रौपदी, प्रभु से तब साक्षात ।। 5081

नम्रता से कहत वह, "हे मेरे भगवान ।
अपने मन की मैं कहूं, समझ सकूं न ज्ञान ।। 5082
[1] 'दर्शन' की है लालसा, [2] 'दर्शन' की न चाह ।
दर्शन से भक्ति मिलत, दर्शन भ्रम अथाह" ।। 5083
इतना कहकर गिर पड़ी, प्रभु चरणी बेसुध ।
प्रभु दर्शन में खो गयी, उसकी सारी सुध ।। 5084
कृपा कर तभी नाथ ने, दीना उसे उठाय ।
गहन वचन जो उस कहे, सुन प्रभु मुस्काय ।। 5085
गूढ़ बात को श्रवण कर, मुस्काये भगवान ।
दीना दिव आशीश तब, और कृपा का दान ।। 5086
कहा नाथ "हे द्रोपदे, कथी गूढ़ तू बात ।
सरस्वती का वास हो, तव घट में साक्षात ।। 5087
काव्य कला तुम को मिले, रचो भक्ति के गीत ।
भक्तों के मन में बढ़े, जिमि प्रभु पग प्रीत ।। 5088
प्रभु अनुकम्पा पाय कर, रचने लागी गीत ।
मधुर स्वर उसको मिला, गाती रहती गीत ।। 5089
वरदानी हैं नाथ जी, देते हैं वरदान ।
लेने वाला चाहिए, खुला भण्डारा जान ।। 5090
प्रभु जी ने इक और भी, था कीन उपकार ।
रचे योग के ग्रंथ कुछ, योग का हो प्रचार ।। 5091

[1] भगवद् दर्शन
[2] दार्शनिक ज्ञान

रचीं योग की पुस्तकें, जो पढ़ सके हर कोय ।
योग प्रति हो आस्था, रुचि साधन में होय ।। 5092
रहस्य भक्ति व योग के, प्रभु खोल बतलाय ।
की अनुकम्पा जगत पर, ज्ञान विशद दे पाय ।। 5093
योग भक्ति की पुस्तक, जो लिखी थी नाथ ।
मुद्रित वह करवाय कर, भक्तन कीन सनाथ ।। 5094
है 'योग भक्ति दर्पण', पुस्तक का अभिधान ।
भक्ति विषय व योग का, उस में विशद बखान ।। 5095
इस पुस्तक में प्रेरणा, है दीनी भगवान ।
जीवन में गुण धार कर, योगी बनो सुजान ।। 5096
चंचल मन को वश करें, करके साधन योग ।
गुरु योगी की शरण को, ग्रहण करें सब लोग ।। 5097
मोक्ष का मार्ग योग है, स्पष्ट बताया नाथ ।
प्राण साधना हो किमि, भी बतलाई साथ ।। 5098
मन प्राण की एकता, योग का आधार ।
उपासना ओंकार की, करती भव से पार ।। 5099
महा अनुग्रह नाथ का, है जगती पै मीत ।
गूढ़ रहस स्पष्ट किये, अति सरल ही रीत ।। 5100
जो ज्ञान था लुप्त भया, उसे उजागर कीन ।
ज्ञान साधना योग की, थी जनता ने लीन ।। 5101
और ग्रंथ भी नाथ ने, लिखवाये उस काल ।
नूतन जिनमें ज्ञान था, विदित न था उस काल ।। 5102

'नेत्र ज्योति प्रकाशिनी', इस ग्रंथ का नाम ।
आकार लघु पर ग्रंथ है, योग साधन का धाम ।। 5103
यह अनुकम्पा नाथ की, 'नेति' जो सिखलाई ।
नेति के अभ्यास से, जनता दृष्टि पाई ।। 5104
उस काल नहीं विदित था, नेति का कुछ बोध ।
योग साधना से भी, जनता परम अबोध ।। 5105
जिन को नाथ करवाया, 'नेति' का अभ्यास ।
स्वस्थ भये वे सभी जन, उपजा मन विश्वास ।। 5106
नज़ले से जो ग्रस्त जन, अथवा दृष्टि रोग ।
'नेति' क्रिया कीन जब, स्वस्थ भये वे लोग ।। 5107
उसी काल कुछ और भी, भया ग्रंथ निर्माण ।
जनता के भ्रम दूर हों, योग को दें अधिमान ।। 5108
सुगम नहीं यह काम था, उस काल लो जान ।
फारसी का प्रचार था, वा उर्दू का मान ।। 5109
आंगल भाषा पनपती, उस सर्वत्र काल ।
अपनी भाषा संस्कृत, थी भयी बेहाल ।। 5110
योग को न को जानता, इसका था अपमान ।
भीख मंगों की विद्या, इस विध लेते जान ।। 5111
ऐसे काल कराल में, प्रभु कीन ललकार ।
"ऋषि मुनियों के वंशज, मेरी सुनो पुकार ।। 5112
योग धर्म का मूल है, संस्कृति का आधार ।
भूल इसे क्यों भटकते, योग सुखों का सार ।। 5113

आओ सीखो योग को, बिन औषध उपचार ।
शांति चित्त को भी मिले, खर्च न किसी प्रकार" ।। 5114
'योग सिद्धि' इक पुस्तक, तब लिखवाई नाथ ।
पनप रहे जो भ्रम अब, मिटें सभी इक साथ ।। 5115
हठ योग का ज्ञान बहु, योग भक्ति उस संग ।
अन्य विषय भी और हैं, इस ग्रंथ के अंग ।। 5116
ज्ञान यहां पर है दिया, कर कृपा भगवान ।
योग साध कर हो सकत, किस विध जन बलवान ।। 5117
धर्म कर्म सिद्ध होत है, योग के आधार ।
सुख देह का मिलत है, शांति चित्त अपार ।। 5118
केवल गुरु से मिलत है, यह योग का ज्ञान ।
क्लेश मिटें जिससे सकल, सकल रोग निदान ।। 5119
सभी सकें कर योग को, वृद्ध होय या बाल ।
योगी दर समान सभी, धन पद का न सवाल ।। 5120
योगी के दर आय कर, खाली जात न कोय ।
होत भाव अनन्य जहां, कृपा उसी पै होय ।। 5121
ऐसे ऐसे भाव हैं, लिखे ग्रंथ के मांझ ।
पुस्तक 'योग सिद्धि' की, पढ़िये प्रातः सांझ ।। 5122
योग प्रति जो भ्रांत थी, क्रमशः होती दूर ।
योग साधना हित जन, आश्रम आत जरूर ।। 5123
कीना था विचार यह, राम लाल भगवान ।
फीके हैं बिन भक्ति के, साधन योग महान ।। 5124

रचवाया तब ग्रंथ उन, 'वर्षा योग प्रेम' ।
मुलख राज निज शिष्य से, जिस मन अखण्ड प्रेम ।। 5125
इक इक पंक्ति ग्रंथ की, भक्ति रस से पूर्ण ।
भक्ति रस में रम रहें, ग्रंथ पढ़ें सम्पूर्ण ।। 5126
मुलख राज ये राग थे, रचे समाधि काल ।
श्रद्धा से जो जन पढ़े, भक्ति मिले तत्काल ।। 5127
प्रभु अनुग्रह जगत पर, भया अपूर्व जान ।
इन ग्रंथन के माध्यम, फैला योग जहान ।। 5128
हठ योग के साथ ही, भक्ति योग का दान ।
दोनों को इक साथ ही, नाथ कीन प्रदान ।। 5129
और अनुग्रह नाथ जी, कीना जो जग बीच ।
साधन आश्रम योग के, सुन्दर रचे समीच ।। 5130
उन आश्रम में नाथ की, सदा शक्ति का वास ।
श्रद्धा जिन के मन वसत, होत उन्हें आभास ।। 5131
प्रथम छेहरटा आश्रम, का कीना निर्माण ।
अमृतसर से दूर कुछ, सुन्दर शांत स्थान ।। 5132
कीन अनुग्रह जगत पर, दीनी शिक्षा खास ।
होता शांत स्थान में, साधन का अभ्यास ।। 5133
कच्चे कमरे नाथ ने, बनवाये खुद आप ।
ग्रीष्म में नहीं तपत जो, न शीत में संताप ।। 5134
कुछ दूरी पर नाथ जी, कीन गुफा निर्माण ।
जिसमें कर प्रवेश जन, हो समाधिस्थ जान ।। 5135

कलिकाल में आय कर, वही रीत चलाई ।
जो पुरातन काल में, ऋषियन थी बताई ।। 5136
धर्म स्थापन हेत ही, लेते प्रभु अवतार ।
बिगड़ गई मर्याद का, आते करन सुधार ।। 5137
प्रभु का जग पै अनुग्रह, सदा रहेगा याद ।
योगधर्म उद्धार कर, स्थापित कीन मर्याद ।। 5138
अमृतसर से नित्य प्रति, आने लागे लोग ।
आ छेहरटा सीखते, प्रभु से साधन योग ।। 5139
सब जन थे पहचानते, प्रभु की शक्ति महान ।
और अनुग्रह नाथ का, सब ने लीना जान ।। 5140
रहना एक स्थान पर, ऐसा नेम न कोय ।
स्थान अन्य प्रभु जाते, कृपा पात्र जो होय ।। 5141
गये कांगड़ा में प्रभु, ले मुलखा को साथ ।
करने पवित्र वह स्थल, सकल विश्व के नाथ ।। 5142
कांगड़ा का प्रदेश जो, महान पवित्र जान ।
देवियों के स्थान वहां, जिन का यश महान ।। 5143
अपने अपने काल जिन, कीन असुर संहार ।
रक्षा कीनी देश की, और धर्म उद्धार ।। 5144
इक देवी है कांगड़ा, फिर चौमुण्डा जान ।
चिन्तपूरणी तीसरी, चौथी ज्वाला मान ।। 5145
इन देविन ने था किया, भागासुर को क्षीन ।
भाग गया व जा छिपा, कहीं शरण जा लीन ।। 5146

जिस थल में था वह छिपा, वह थल 'भागसु नाथ'।
सैरानिन की है बनी, सैरगाह उस साथ ।। 5147
देविन के जो और भी, मन्दिर उस प्रदेश ।
पूज्य सभी हैं वे स्थल, ऐतिहासिक विशेष ।। 5148
वे सभी इस्थान बने, उन देविन के धाम ।
असुरों का जिन था किया, रण में काम तमाम ।। 5149
उन धामों में जात हैं, भक्त दर्शनों हेत ।
या इच्छा कुछ लेय कर, भक्ति से अभिप्रेत ।। 5150
गहमा गहमी रहत है, सदा वहां मम मीत ।
शुद्ध भाव जो चाहिए, नहीं सभी के चीत ।। 5151
पापिन के संसर्ग से, होत अपावन तीर्थ ।
योगी के जब पग पड़ें, पावन होता तीर्थ ।। 5152
नाथ अनुग्रह करत हैं, सब तीर्थन पै मित्त ।
भक्तों को संग लेकर, करत उन्हें पवित्त ।। 5153
धर्म स्थापन हेत तो, प्रभु लीना अवतार ।
तीर्थन की तो दुर्दशा, न उन्हें स्वीकार ।। 5154
इस कारण ही जाय कर, बहु तीर्थन के बीच ।
पावन करते तीर्थ थल, करके योग समीच ।। 5155
शास्त्र विदित यह बात है, हो योगी का वास ।
थल पावन वह होत है, 'सेवक' चित्त विश्वास ।। 5156
जल तो एक निमित्त है, थल भी जान निमित्त ।
वास्तव में वह तीर्थ है, जहां योग हो नित्त ।। 5157

देश काल थल पूत हों, योगी के प्रभाव ।
मानव का भी जानिये, बदल जात स्वभाव ।। 5158
कुबुद्ध का दृष्टांत दे, प्रभु दीना उपदेश ।
कुबुद्ध सुबुद्ध हो गया, योगी के आदेश ।। 5159
कथा संपूर्ण देख लो, है ग्रंथ के बीच ।
कुबुद्ध नृप था देश का, करत कर्म था नीच ।। 5160
योगी गुरु जब मिल गये, साधा उस ने योग ।
कुबुद्ध सुबुद्ध हो गया, सुखी देश के लोग ।। 5161
कुबुद्ध का दृष्टांत यह, प्रभु सुनाया आप ।
अनुग्रह भक्तन पै किया, दूर भया संताप ।। 5162
प्रतिष्ठित कीना योग को, जन जीवन में नाथ ।
दृढ़ कीना विश्वास भी, सुना योग की गाथ ।। 5163
खास अनुग्रह था किया, भक्त जनों पै नाथ ।
दिनचर्या सब जनन की, लिख दी अपने हाथ ।। 5164
चार बजे नित तुम उठो, भक्तन को आदेश ।
शौचादि से निपट कर, आश्रम चलो हमेश ।। 5165
दो घंटे वहां रह कर, करिये साधन योग ।
ध्यान में भी बैठ रहो, तन मन रहे निरोग ।। 5166
अपने अपने कार्य में, व्यस्त रहे हर कोय ।
मार्ग में जब जन चलत, दृष्टि नीचे होय ।। 5167
सदा सत्य ही बोलना, मीठी होय ज़बान ।
बचना राग द्वेष से, सभी को मित्र जान ।। 5168

छः घंटे की नींद हो, करना पाठ ज़रूर ।
ध्यान भजन में बैठना, उचित नहीं ग़रूर ।। 5169
यम नियम सभी पालना, गुरु आज्ञा अनुसार ।
गुरु आज्ञा शिरधार्य हो, जो जीवन आधार ।। 5170
रात्री को जन बैठ करें, दिन चर्या पड़ताल ।
अपनी त्रुटियां देख ले, हो सुधार तत्काल ।। 5171
दिनचर्या को पालते, होय यदि कठिनाई ।
उसको करना सहन तुम, इसमें तव भलाई ।। 5172
सर्व–कर्म जो तुम करो, ईश्वर अर्पण होय ।
भुलावे न इस नेम को, भक्त कभी भी कोय ।। 5173
कृपा कर प्रभु सीख दी, सब भक्तों के हेत ।
दिनचर्या के मिस उन, कीने भक्त सचेत ।। 5174
यह अनुग्रह नाथ का, रहे सदैव स्मरण ।
दिनचर्या जो प्रभु कही, होय सदा आचरण ।। 5175
देविन को भी नाथजी, दिनचर्या सिखाई ।
भारत की जो नारियां, उन हित उन बताई ।। 5176
पति से पूर्व चार बजे, उठे प्रातः काल ।
दर्शन पति का प्रथम कर, निपटे वह तत्काल ।। 5177
तलक पाँच से छः बजे, होय ध्यानासीन ।
स्मरण प्रभु का वह करे, भक्ति में हो लीन ।। 5178
छः बजे से सात तलक, बच्चों को बिठलाय ।
उनके संग स्वंय करे, साधन सब मन लाय ।। 5179

सात से बारह फिर तलक, कार्य घरेलू सर्व ।
सेव बड़ों की संग में, करे बिना वह गर्व ।। 5180
बारह से तक तीन वह, कुछ करे विश्राम ।
वह स्वाध्याय भी करे, लेय प्रभु का नाम ।। 5181
फिर तीन से पांच तलक, सतसंग में जाय ।
कार्यक्रम हो वहां जिमि, उससे लाभ उठाय ।। 5182
पांच से नौ तलक तब, करे घरेलू काम ।
निपटे जब वह कार्य से, सिमरे मन में राम ।। 5183
दिनचर्या भी आपनी, ले रात पड़ताल ।
कमी बेशी जो अपनी, उसको ले संभाल ।। 5184
रात्रि नौ से दस तलक, पाठ करे मन लाय ।
सेवा पति की भी करे, प्रसन्न वदन रह पाय ।। 5185
ऐसी शिक्षा दी प्रभु, मिले कहीं न और ।
नाथ अनुग्रह जानिये, हो रहा सब ठौर ।। 5186
शिक्षा यह भी नाथ जी, दीनी नारिन ताहिं ।
भेद कन्या व बाल में, कभी न मन में लाहिं ।। 5187
नाथ अनुग्रह है बड़ा, नर नारिन पै मीत ।
साधुन का भी ध्यान था, राम लाल के चीत ।। 5188
साधु कई हैं जगत में, भटक रहे बिन लक्ष्य ।
उनके हित भी नाथ ने, शिक्षा दीन समक्ष ।। 5189
सीख साधुन को है यह, त्रय बजे उठ जाओ ।
शौच आदि से निपट कर, प्रभु में मन लगाओ ।। 5190

दृढ़ करे संकल्प यह, पालूं गुरु आदेश ।
क्रोध काम से दूर रह, संयम करूं हमेश ।। 5191
रहूं ध्यान में सात तक, स्थिर आसन को धार ।
चित्त वृत्ति को स्थिर करूं, योग का हि आधार ।। 5192
सात बजे से नौ तलक, दैहिक उन्नति हेत ।
करे करावे साधन, जो योग अभिप्रेत ।। 5193
नौ से ग्यारह फिर तलक, पढ़े योग के ग्रंथ ।
अपने अनुभव वह लिखे, कीने हों जो मंथ ।। 5194
ग्यारह से बारह तलक, हो भोजन विश्राम ।
ध्यान रहे इस बात का, भूले न कभी राम ।। 5195
बारह से फिर तीन तलक, होवे ध्यानासीन ।
दृढ़ आसन में बैठ मन, होय प्रभु में लीन ।। 5196
तीन बजे फिर जाय कर, गहे गुरु के चरण ।
ध्यान स्थिति बतलाय कर, आदेश करे ग्रहण ।। 5197
चार बजे तक रह वहां, करे गुरु की सेव ।
गुरु सेवा से मिलत है, गूढ़ योग का भेव ।। 5198
चार बजे से छः तलक, लौट के निज स्थान ।
यौगिक आसन वह करे, कराय अन्य जनान ।। 5199
छः बजे से सात तलक, हो भोजन का काल ।
प्रसन्न मन भोजन करे, हो भी जो उस काल ।। 5200
सात बजे से नौ तलक, फिर जा गुरु के पास ।
सुन कर गुरु उपदेश को, दृढ़तर हो विश्वास ।। 5201

नौ बजे से तीन तलक, हो शयन का काल ।
सोने से पहले करे, दिनचर्या पड़ताल ।। 5202
प्रभु ने कृपा परम करी, साधुन पर इस रीत ।
दिनचर्या बतलाय कर, उपदेशा सब रीत ।। 5203
व्यर्थ गंवाओ न समय, कीन उन्हें सचेत ।
जीवन के क्षण जा रहे, जिमि हाथ से रेत ।। 5204
साधु की पहचान यही, साधन से हो प्रीत ।
जीवन उसका शुद्ध हो, कथि जिमि शास्त्रन रीत ।। 5205
मारग पर जब वह चले, दृष्टि नीचे होय ।
भूमी को ही देखता, मन ध्यान में खोय ।। 5206
प्रभु जी का उपदेश यह, अधोमुखी चल पाय ।
नारिन के संसर्ग को, साधु सदैव दुराय ।। 5207
निन्दा किसी की न करे, ईश स्तुति कर पाय ।
बात चीत में रहत भी, प्रभु में ध्यान टिकाय ।। 5208
मधुर वचन मुख पै रहे, और सत्य जो बात ।
मादक वस्तु से बचे, सात्विक अन्न हि तात ।। 5209
योग हि उसका कर्म हो, साधन से हो प्यार ।
ब्रह्मचर्य का व्रत धर, त्यागे सकल श्रृंगार ।। 5210
द्वन्द्व सकल को सहन कर, जीवन कठिन कठोर ।
मग अपने पै दृढ़ रहे, देखो ओर न ठोर ।। 5211
महा अनुग्रह नाथ का, यह साधुन पै मीत ।
स्पष्ट बात सबको कही, गहो न मग विपरीत ।। 5212

स्पष्ट बात इक मैं कहूं, सुनो लगाकर कान ।
प्रभु अनुग्रह के बहुत, मिलते हैं प्रमाण ।। 5213
प्रभु भक्तों के भक्त हैं, जगत कहे यह बात ।
सिद्ध कीन यह नाथ ने, जाय समांहि तात ।। 5214
भक्त समांहि उडीक में, कब मिलेंगे नाथ ।
जा पहुँचे खुद थे प्रभु, लेय मुलख को साथ ।। 5215
जो लीला समांहि करी, वा अनुकम्पा तात ।
लेखनी सब न लिख सके, प्रभु कृपा की बात ।। 5216
समांहि में थे खेलते, नन्हें नन्हें बाल ।
रूह फूंकी उन में प्रभु, कीना उन कमाल ।। 5217
सांपों की भरमार थी, जहां प्रभु आसीन ।
बच्चों ने सब पकड़कर, फैंक दूर थे दीन ।। 5218
इक नामी पिलवान था, निज को माने शूर ।
एक बालक से था प्रभु, गर्व कराया चूर ।। 5219
प्रभु अनुकम्पा क्या कहें, बच्चों पर जो कीन ।
योग कराया था सबन, कुशती में प्रवीण ।। 5220
अन्धी कन्या आ गई दृष्टि उसको दीन ।
जगती ने तब नाथ की, ली अनुकम्पा चीन ।। 5221
चैतन्य पर कृपा करी, जड़ पर भी उन कीन ।
रूखो सूखो खेत में, लगा घिये उन दीन ।। 5222
समांहि के इक कूप पर, भयी प्रभु की दाय ।
जहां गंगा थी प्रकटी, रूप अनूप सुहाय ।। 5223

संकट में को भक्त जब, प्रकट वहां हो पाय ।
प्रभु अनेकों रूप निज, थे वहां प्रकटाय ।। 5224
समाधि की उस भूमि में, जो गुफा बन पाई ।
भाग्य बना था ग्राम का, कीर्ति जग में छाई ।। 5225
कीन अनुग्रह नाथ ने, बहु रोगिन पै मीत ।
जीवन से निराश जन, दीन शफ़ा सब रीत ।। 5226
प्रभु के दिव प्रभाव से, भये बहुत के काम ।
मिली किसी को नौकरी, मिला किसी को दाम ।। 5227
किसी के पुत्र हो गया, कन्या का उद्वाह ।
अनोखा नाथ अनुग्रह, उसकी मिले न थाह ।। 5228
समाई के उन जनन पर, जो कृपा थी कीन ।
सभी जनन को स्मरण है, धन्य भये जन दीन ।। 5229
सूखे धीमर पर भाई, जो दया उस काल ।
मिले न उसकी ऊपमा, जग में कहीं त्रिकाल ।। 5230
नाथ को उड़ते देखा, नभ के मध्य प्रात ।
देखा न यह दृश्य कभी, जग में किसी भी तात ।। 5231
प्रभु दरिद्र नारायण, प्रसिद्ध 'दरिद्र नाथ' ।
दरिद्र धीमर को किया, प्रभु ने स्वयं सनाथ ।। 5232
दिखा दिया संसार को, कर कृपा योगेश ।
यौगिक जो हैं सिद्धियां, वे न झूठी लेश ।। 5233
महा अनुग्रह नाथ का, हम सबन पै मीत ।
ऋषियों की संतान हम, करें योग से प्रीत ।। 5234

प्रभु ने इक और भी, कीनी बात स्पष्ट ।
बिन योग नहीं हो सकत, जीवों का दुख नष्ट ।। 5235
और गुरु बिन योगी के, संभव न हो मीत ।
जग के दुख से छूटना, हो योगी से प्रीत ।। 5236
रक्षा जन की गुरु करत, धर भावी का ध्यान ।
तीन काल को जानता, योगी गुरु सुजान ।। 5237
शिष्य परन्तु चाहिए, दृढ़ विश्वासी मीत ।
पड़े न संशय में कभी, बेशक सब विपरीत ।। 5238
दे दृष्टांत बतलाया, निज शिष्यन को नाथ ।
[1] सद्गुरु का दृढ़ भक्त था, उस पर गुरु का हाथ ।। 5239
गुरु आज्ञा शिरधार कर, अपने ही उस पूत ।
चार पूत दफ़ना दिये, पंचम भया सुपूत ।। 5240
गुरु किरपा से पांचवां, जिस के शुभ संस्कार ।
रक्षा उसकी कीन थी, सुखी भया परिवार ।। 5241
गुरु गुरु कहते बहुत हैं, माने विरला एक ।
मानन वाला जो भये, मिले उसी को टेक ।। 5242
इस दृष्टांत से मिलत है, शिक्षा जन को मीत ।
गुरु आज्ञा को मानना, है सर्वोत्तम रीत ।। 5243
गुरु तो जन का मीत है, हित करे सब रीत ।
गुरु पै संशय जो करे, उसकी मत विपरीत ।। 5244

[1] रामायण दोहा 13 16 से आगे

कड़वी औषध के सम, होता गुरु आदेश ।
कड़वी औषध बिन पिये, किमि हो दूर क्लेष ।। 5245
माने मन की बात को, और न गुरु आदेश ।
ऐसे जन का मीत मम, किमि हो दूर क्लेष ।। 5246
श्रद्धा गुरु पै चाहिए, मिलता तब ही ज्ञान ।
बिन ज्ञान के मुक्ति न, कहते संत सुजान ।। 5247
गुरु से मिलता योग है, पूर्ण जिस के अंग ।
[1] सप्त अंग हठ योग के, आठ राज के अंग ।। 5248
सात अंग हठ योग के, प्रभु सिखलाये आन ।
महा अनुग्रह नाथ का, जाने सकल जहान ।। 5249
सब सिखलाये नाथ ने, भक्त जनों को मीत ।
नेति तीन प्रकार की, वा धौति बारह रीत ।। 5250
नौली त्राटक नाथ ने, वस्ति भी उस संग ।
कपाल भाति सिखलाई, षट्कर्म के सब अंग ।। 5251
षट्कर्मन के साथ ही, दूजा अंग महान ।
योग आसन सिखलाये, जिन को करत जहान ।। 5252
महा अनुग्रह नाथ का, किया इनका प्रचार ।
स्वास्थ्य लाभ जन करत है, इन से सब प्रकार ।। 5253

---

[1] हठ योग के सात अंग : 1. षट्कर्म, 2. आसन, 3. प्राणायाम, 4. मुद्रा
5. प्रत्याहार, 6. ध्यान, 7. समाधि

राजयोग के आठ अंग : 1. यम, 2. नियम, 3. आसन, 4. प्राणायाम,
5. प्रत्याहार, 6. धारणा, 7. ध्यान, 8. समाधि

दीनीं मुद्रा नाथ ने, जग के हित ही हेत ।
जिन के लाभ अनेक हैं, स्वास्थ्य के अभिप्रेत ।। 5254
प्राणायाम सिखलाया, जो भूला संसार ।
यह साधन बतलाय कर, कृपा कीन अपार ।। 5255
और योग के साधन, भी बतलाये नाथ ।
प्रत्याहारी जन बने, ध्यान लगाये साथ ।। 5256
सातों साधन योग के, समाधि उनके साथ ।
प्रचारित कीने आकर, कीना जगत सनाथ ।। 5257
षट्कर्म से जगत का, हुआ बहुत कल्याण ।
रोग निवारण हेत वे, हैं राम के बाण ।। 5258
प्रभु से सीखे जिस किसी, यौगिक आसन मीत ।
दृढ़ता आई देह में, स्वस्थ भया सब रीत ।। 5259
प्राणायामी जो भया, आय प्रभु के पास ।
कर्म विलक्षण कीन उस, संयमित कर श्वास ।। 5260
देखा प्रभु ने जगत में, संयम का अभाव ।
सीख दी प्रत्याहार की, बदले जिमि स्वभाव ।। 5261
अन्तर्मुखी जन होय कर, करे प्रभु का ध्यान ।
ध्यान योग से ही भये, मानव का कल्याण ।। 5262
यह सब शिक्षा नाथ ने, दीनी जग में आय ।
अनुग्रह जगति पर किया, मोक्ष लाभ हो पाय ।। 5263
ये सब साधन योग के, हठ व राज तमाम ।
लुप्त भये थे जगत से, उनकी सुध ली राम ।। 5264

योग हिमालय था छिपा, असुरों से भय मान ।
हिमगिरि में जाय प्रभु, वह लाया सह मान ।। 5265
परम साहसी थे प्रभु, कीन योग प्रचार ।
आश्रम लाहौर बनाया, व नगरी अमृतसार ।। 5266
लाहौर नगर महान था, अनुग्रह उस पै कीन ।
झंडा गाड़ा योग का, जनता शिक्षा लीन ।। 5267
भवन किराये पर लिया, सिखलाने को योग ।
"योगाश्रम है बन गया", जान गये सब लोग ।। 5268
अपना भवन बनायें न, ऐसा था आदेश ।
त्रिकालज्ञ थे जानते, बंट जायगा देश ।। 5269
लवपुर के सब जनन को, मिला योग का ज्ञान ।
और भक्ति भी संग में, प्रभु अनुग्रह जान ।। 5270
मुलख राज को था प्रभु, भेजा उस स्थान ।
योग गंग तब बह चली, किरपा प्रभु महान ।। 5271
बड़े बड़े जो लोग थे, लवपुर में उस काल ।
अपना लिया उन योग को, और भये निहाल ।। 5272
ग्रस्त रोग से जनन ने, करके साधन योग ।
शफा पायी उन रोग से, मिला सबन सुयोग ।। 5273
भया विशेष अनुग्रह, अति रोगी कुछ लोग ।
ला-इलाज उनको कहें, प्रभु जी कीन निरोग ।। 5274
इस विध ख्याति योग की, फैल गई सब थांहि ।
जान लिया था जनन ने, गुण योग के मांहि ।। 5275

अनुग्रह पात्र बहु बने, लवपुर में उस काल ।
सेवा का अवसर दिया, प्रभु ने होय दयाल ।। 5276
लाला हुकुम चन्द तभी, शरण लीन सपरिवार ।
कुन्दन लाल पर प्रभु, भी बहु भये दयाल ।। 5277
सेवा उनसे लीन बहु, योग हेतु प्रचार ।
और भी कई जनन की, सेवा की स्वीकार ।। 5278
अनुग्रह पात्र वे सभी, जीवन उनका धन्य ।
करत रहे बहु सेव वे, सेवक भये अनन्य ।। 5279
इक सेवक था और भी, मास्टर लक्ष्मण दास ।
रहत सदा ही ध्यान में, प्रभु पग बहु विश्वास ।। 5280
अनुग्रह पात्र बन गया, प्रभु का जप जप नाम ।
प्रभु को प्यारे भक्त वे, भक्ति करें निष्काम ।। 5281
कृष्ण देव को जानता, 'सेवक' भली प्रकार ।
रह आश्रम में करत था, खूब योग प्रचार ।। 5282
अनुग्रह पात्र और भी, कुछ भक्त हो पाय ।
ग्राही दीक्षा योग की, प्रभु शरण में आय ।। 5283
नृसिंहमूर्ति एक था, दूजा चन्द्र मोहन ।
मथुरा दास उन संग था, काला राम व सोहन ।। 5284
प्रभु अनुग्रह पाय कर, रहते ध्यानासीन ।
योग प्रभु से सीखते, साधनों में प्रवीण ।। 5285
हो ध्यान की बात जब, दो का ध्यान महान ।
एक गोपालानन्द व, दूज मुलख भगवान ।। 5286

महा अनुग्रह था भया, भये वे योग प्रवीण ।
दीर्घ काल समाधि में, रहते वे आसीन ।। 5287
विशेष अनुग्रह था किया, एक पुरुष पै नाथ ।
मल्लहन वह अंग्रेज था, रोग न छोड़े साथ ।। 5288
रोग न छोड़े साथ था, आया प्रभु के पास ।
अनुग्रह उस पै था भया, उपजा मन विश्वास ।। 5289
साधन कीने योग के, पाय प्रभु आदेश ।
स्वास्थ्य लाभ उसको मिला, मिटे सकल क्लेश ।। 5290
जो भी आया शरण में, धन्य भया वह जीव ।
भाग्य उदय उसका भया, अनुग्रह प्रभु अजीव ।। 5291
योग सिद्धि जो नाथ में, राखें उसे छिपाय ।
भक्तन के हित हेत पर, प्रयोग में ले आंय ।। 5292
ऐसा इक प्रसंग है, प्रभु चरित के बीच ।
दिखलाई जब नाथ जी, शक्ति योग समीच ।। 5293
ले नारायण दास को, वनहिं गये थे नाथ ।
घनी भयी थी रात बहु, दीखता न निज हाथ ।। 5294
ऐसे घान अन्धेर में, था घाबराया दास ।
चमत्कार ऐसा किया, आये आश्रम पास ।। 5295
जान लिया तब भक्त ने, जन वत्सल भगवान ।
निज शक्ति से उन हि किया, सेवक का है त्राण ।। 5296
जन वत्सल भगवान का, सब से सम प्यार ।
बाल युवा व वृद्ध हो, हो सब का सत्कार ।। 5297

बाल एक था अति लघु, आता प्रभु के पास ।
कृष्ण रूप में देत थे, दर्शन उसको खास ।। 5298
घुग्घु घुग्घु उसे कहत सब, प्यारा था वह बाल ।
बैठ जात वह आय कर, गोद प्रभु तत्काल ।। 5299
आती उसकी मात भी, सदैव घुग्घु के साथ ।
घुग्घु बतलाता नाथ को, निज ध्यान की गाथ ।। 5300
कहती मां थी नाथ से, मो भी बख्शो ध्यान ।
प्रभु अनुग्रह तभी किया, मिला उसे भी ध्यान ।। 5301
खुली आंख से कृष्ण ने, दीने दर्शन आन ।
करत अनुग्रह प्रभु जिमि, को सके कर ब्यान ।। 5302
नाथ अनुग्रह की तब, सब के मुख पै बात ।
निज सुत के है कारणे, तर गई है मात ।। 5303
जो रहा प्रभु शरण में, तर गया वह जीव ।
यह अनोखी बात इक, लागे सबन अजीब ।। 5304
दुख दर्द सभी जनन के, करते हैं प्रभु शांत ।
नाथ मसीहा आ गये, रही न लेश भ्रांत ।। 5305
नारी एक शकुंतला, तपदिक से बीमार ।
छूत के उस रोगी का, कौन करे उपचार ।। 5306
जग में जिसका न कोई, प्रभु उसके आधार ।
प्रभु ने द्रौपदि को कहा, कर इसका उपचार ।। 5307
गुरु आज्ञा को मान कर, घर उसे ले आई ।
आज्ञा गुरु की जान कर, कर योग वह पाई ।। 5308

किरपा उस पै हो गई, साधन आये कार ।
जाता जीर्ण रोग रहा, नाथ दया अपार ।। 5309
प्रभु किरपा से बहुत से, रोग जीर्ण भये दूर ।
पागल का पागलपन, था भया काफूर ।। 5310
देवी जो लाहौर की, चिर काल बीमार ।
अनुग्रह उस पै था भया, पाया जब दीदार ।। 5311
कई और भी भक्त थे, भया जिनका कल्याण ।
प्रभु अनुग्रह प्राप्त कर, सुखी भये महान ।। 5312
मानक चन्द दलाल तो, पाया जीवन दान ।
ज्ञान देवी जब लायी, उसे प्रभु के स्थान ।। 5313
शांति प्रकाश का पिता, था बहुत लाचार ।
बेटा हैज़े में पड़ा, दवा आए न कार ।। 5314
पास प्रभु के आ गया, निज विथा कह दीन ।
लेकर बालक को प्रभु, लटका उलटा था दीन ।। 5315
स्वस्थ भया कुछ काल में, दौड़ गया घर मांझ ।
निराश पिता था लाया, उसको पूर्व सांझ ।। 5316
अनुग्रह की जो रीत है, जानें प्रभु ही आप ।
जग पर कृपा करन हित, उतरे जग में आप ।। 5317
किस मुख से 'सेवक' कथे, अपना अनुभव तात ।
चुप रहती है लेखनी, सके न लिख सब बात ।। 5318
प्रभु परलोक सुधारते, एक ही दृष्टि डाल ।
माला देवी की गति, सुधारी प्रभु दयाल ।। 5319

वर्षों से बीमार था, वकील नियामत राय ।
उसकी पीड़ा प्रभु हरी, स्वयं वर्णन कर पाय ।। 5320
'सेवक' को उस खुद कथा, सारा अपना हाल ।
द्रवित भया सुन चित्त मम, कैसे प्रभु दयाल ।। 5321
नाथ अनुग्रह पात वह, जन अधिकारी मीत ।
जिसकी सद्गुरु चरण में, साची सात्विक प्रीत ।। 5322
प्रभु में शक्ति अपार है, सिद्धिन के भण्डार ।
विरला ही जन जानता, प्रभु सिद्धिन का सार ।। 5323
सिद्धिन से ही करत हैं, योगिजन कल्याण ।
करुणा उनके मन बसत, दुखी देख जहान ।। 5324
आठ सिद्धिन के धाम हैं, राम लाल भगवान ।
उन सिद्धिन के कारणे, करते जग कल्याण ।। 5325
'अणिमा' सिद्धि तन बसत, 'महिमा' भी तन मांहि ।
'गरिमा' प्रभु के संग रहे, 'लघिमा' देह समांहि ।। 5326
'प्राप्ति' और 'प्रकाम्या', प्रभु जी के हैं संग ।
'ईशिता' 'वशिता' गुप्त हैं, सदा प्रभु के अंग ।। 5327
इन सिद्धिन से कर रहे, प्रभु योग उद्धार ।
इन सिद्धिन से हो रहा, भक्तों का उपकार ।। 5328
योगी का धन सिद्धियां, राखें सब संभाल ।
प्रयोग तब ही करत है, होवे जब दयाल ।। 5329
होवे जब दयाल वह, जन का हो कल्याण ।
ऐसा धन वह है कथा, और न उस समान ।। 5330

गुप्त रूप से ही करें, निज जन का कल्याण ।
इस विध से ही अनुग्रह, सदा करें भगवान ।। 5331
तन बन्धन है जीव का, सके न उससे छूट ।
जैसा कैसा रूप हो, वह तो रूप अटूट ।। 5332
योगी को न बांध सके, बन्धन मेरे मीत ।
सिद्धियों के प्रयोग से, प्रकृति को ले जीत ।। 5333
जगती के कल्याण हित, करता देह निर्माण ।
अथवा बदले रूप निज, आवश्यकता पहचान ।। 5334
प्रभु पास वही सिद्धियां, दें बंधन जो तोड़ ।
जैसी इच्छा होत है, प्रकृति को लें मोड़ ।। 5335
सिद्धियों के प्रभाव से, बंधन रहत न कोय ।
स्वतंत्र हैं वे सब विध, करें जो इच्छा होय ।। 5336
अनुग्रह उसके मन बसे, करुणामय है रूप ।
सर्व जगत के हित अर्थ, बदल सकें स्वरूप ।। 5337
इच्छा जब उन मन बसे, 'अणिमा' कर प्रयोग ।
अनु वत कर लें देह को, देख सके न लोग ।। 5338
इस रूप में आय कर, करते ऐसे काम ।
देह से जो न हो सकत, ऐसे प्रभु हैं राम ।। 5339
अन्य सिद्धि उन पास जो, "महिमा" उसका नाम ।
विशाल करें बहु देह को, ऐसे प्रभु हैं राम ।। 5340
उस सिद्धि के प्रभाव से, करें भक्त का काम ।
अनुग्रह पात्र जो होय, ऐसे प्रभु हैं राम ।। 5341

'गरिमा' सिद्धि संग प्रभु, भारी तन जिमि होय ।
भक्तन के कल्याण हित, प्रभुत्व भी हो सोय ।। 5342
देख कष्ट में भक्त कभी, इस का हो प्रयोग ।
प्रभु जानें इस भेद को, क्या जानें हम लोग ।। 5343
जिस विध सुख हो भक्त को, शुभ हो उस का काम ।
वही अनुग्रह वे करें, ऐसे प्रभु हैं राम ।। 5344
तन हलका जिमि हो सके, उठ जाये आकाश ।
प्रभु में ऐसी सिद्धि है, 'लघिमा' जो है खास ।। 5345
इस सिद्धि के कारणे, सिद्ध होय बहु काम ।
हित भक्तन का नाथ मन, ऐसे प्रभु हैं राम ।। 5346
पञ्चम सिद्धि नाथ तन, 'प्राप्ति' जिस का नाम ।
इच्छा मन में होय जो, पूर्ण हो वह काम ।। 5347
इस सिद्धि के कारणे, कीने प्रभु बहु काम ।
प्रभु अनुग्रह जनन पर, ऐसे प्रभु हैं राम ।। 5348
जिस सिद्धि का नाथ जी, कर रहे हैं प्रयोग ।
सकल विश्व में विचर कर, प्रभु प्रचारें योग ।। 5349
सिद्धि वही हम जान लें, 'प्रकाम्या' उसका नाम ।
अदृश्य भयें इक क्षण में, ऐसे प्रभु हैं राम ।। 5350
सृष्टि कर्ता राम हैं, रचना उनका काम ।
स्वामी "ईशिता" के प्रभु, ऐसे प्रभु हैं राम ।। 5351
"ईशिता के प्रयोग से, हों भक्तों के काम ।
जग में उन सम कौन है, जैसे प्रभु हैं राम ।। 5352

'वशिता' सिद्धि और इक, जान प्रभु के पास ।
विचरण होवे विश्व में, यह सिद्धि है खास ।। 5353
इसी सिद्धि के कारणे, सब भक्तन के पास ।
और विश्व में योग का, होवे योग विकास ।। 5354
[1] लेय कर सर्व सिद्धियां, उतरे जग भगवान ।
राम लाल के नाम से, करें जगत कल्याण ।। 5355
दया भयी बहु दास पर, शरण गुरु की दीन ।
मुलखराज गुरु मिल गये, क्लेश सकल हर लीन ।। 5356
क्लेश सकल उन लीन हर, ज्ञान भी संग दीन ।
अनुभव गम जो ज्ञान है, गुरु से 'सेवक' लीन ।। 5357
पुस्तक ज्ञानी बहुत हैं, विरला योगी कोय ।
योग साधना करत जो, अनुभव उसको होय ।। 5358
अनुभव गुरु से मिलत है, सिद्ध पुरुष से मीत ।
सिद्ध पुरुष थे मुलख जी, उन चरणि मम प्रीत ।। 5359

---

[1] योग की आठ सिद्धियां :

1. अणिमा – परमाणु वत तन हो जाये ।
2. महिमा – देह को महान विशाल कर लेना ।
3. गरिमा – देह को भारी कर लेना ।
4. लघिमा – देह को हल्का कर लेना ।
5. प्राप्ति – जो मन में आये पूर्ण हो जाये ।
6. प्रकाम्या – दृश्य – अदृश्य हो जाना ।
7. ईशिता – ईश्वर जैसी शक्ति आनी ; जग की रचना कर पानी ।
8. वशिता – तीन लोकों में विचरण कर सकना ।

राम प्रभु से था मिला, मुलख राज को ज्ञान ।
राम लाल से मुलख ने, सिद्धि पायी महान ।। 5360
[1] पुस्तक पण्डित की प्रभु, कथा सुनाई मीत ।
सकल शास्त्रों को पढ़ जिस, भ्रांति फिर भी चीत ।। 5361
गुरु योगी जब मिल गया, दूर भया अज्ञान ।
शास्त्रों में जो उस पढ़ा, स्पष्ट मिला प्रमाण ।। 5362
योग मार्ग में लग गया, दूर भयी थी भ्रांत ।
योग बिना न ज्ञान हो, चित्त भी न हो शांत ।। 5363
प्रभु ने जग में आन कर, दीना यह उपदेश ।
योग करो, सब जन करें, सिद्धि मिले विशेष ।। 5364
भक्त प्रभु के कई भये, जिनका गूढ़ ध्यान ।
ग्राम दुभेटा का युवक, इक सुन्दर प्रमाण ।। 5365
जो किरपा उस पर हुई, विरले पर ही होय ।
अमरनाथ अभिधान से, था प्रसिद्ध जन सोय ।। 5366
प्रभु अनुग्रह पाय कर, बैठे समाधि रोज़ ।
धरती से उठ जात था, उसका आसन रोज़ ।। 5367
भक्त सभी यह देख कर, धन्य धन्य कर पात ।
अमर नाथ पर जो दया, अनोखी हि दिखलात ।। 5368
शिक्षा देने योग की, लीना है अवतार ।
जन अधिकारी जो भये, करें दया करतार ।। 5369

[1] श्री योग महा दिव्य रामायण – दोहा 1365 से आगे – वेदान्ती का उपाख्यान

योग का उपदेश जब, भूला था संसार ।
प्रभु ने आ कर फिर कथा, ले मानव अवतार ।। 5370
गूढ़ विषय जो योग का, कीना सब स्पष्ट ।
मन में माया जो बसी, योग से होवे नष्ट ।। 5371
प्रभु के इस उपदेश से, भया जगत कल्याण ।
योग मार्ग में लग गये, अधिकारी इन्सान ।। 5372
अनुग्रह उन पै हो गया, करने लागे योग ।
प्रभु चरणों में आकर, त्याग जगत के भोग ।। 5373
योग चित्त की साधना, चंचल मन है मीत ।
वृत्तियों का प्रवाह तो, लेता मन को जीत ।। 5374
प्रभु जी के उपदेश से, भयी स्पष्ट है बात ।
योग साधना हेत जन, यत्न करें बहु तात ।। 5375
वृत्तिन सकल निरोध कर, रहता घट जो मांहि ।
योगी उसको कहत हैं, पुरुष लोकोत्तर तांहि ।। 5376
वृति रहित जो चित्त हो, योग साध कर मीत ।
बिंबित उसमें पुरुष हो, आत्म ज्ञान प्रतीत ।। 5377
मन को यदि हो जीतना, करिये दृढ़ अभ्यास ।
युक्ति गुरु से पाय कर, ग्रहण करो विश्वास ।। 5378
योगी बनना होय जो, धारो दृढ़ वैराग ।
दीर्घ काल अभ्यास कर, उज्ज्वल होगा भाग ।। 5379
चित्त एकाग्र जो करे, धार इष्ट का लक्ष ।
निर्देश गुरु का पाय कर, प्रकटे इष्ट समक्ष ।। 5380

दीर्घकाल अभ्यास को, करे निरन्तर साध ।
क्यों न दृढ़ता फिर गहे, अपना इष्ट आराध ।। 5381
श्रद्धा जननी योग की, इसमें भ्रम न कोय ।
योग के मग पै जो चले, मोक्ष पायेगा सोय ।। 5382
अधिमात्र संवेग से, करे जो नर आ योग ।
मन उस का क्षण में टिके, यह मानें सब लोग ।। 5383
योग बिना किमि जन लखे, ईश्वर जग के मांहि ।
'नेति नेति' सब ग्रंथ कहें, योग बिन को पांहि ।। 5384
निराकार जो ईश है, जग का कर्ता मीत ।
उस के भी स्वरूप को, योगी करत प्रतीत ।। 5385
निराकार जो ईश है, जगत कर्ता भगवान ।
केवल योगी को मिलत, उस ईश्वर का ज्ञान ।। 5386
तीन गुणों से रहित जो, निर्गुण सिरजन हार ।
अछूता पंच क्लेश से, ऐसा जो करतार ।। 5387
स्वामी सकल सृष्टी का, सर्व ज्ञाता जान ।
केवल योगी को मिलत, उस ईश्वर का ज्ञान ।। 5388
अनामी का भी नाम है, ओंकार लो जान ।
केवल योगी को मिलत, उस ईश्वर का ज्ञान ।। 5389
करे नाम की साधना, नामी का हो ज्ञान ।
ईश्वर के दिव्य रूप को, नाम साध लो जान ।। 5390
प्रभु जी ने इमि ईश का, दीना जग को ज्ञान ।
कहें योग से मिलत है, उस ईश्वर का ज्ञान ।। 5391

चित्त एकाग्र करत जो, योग से मम मीत ।
केवल उसको होत है, ईश्वर की प्रतीत ।। 5392
चित्त एकाग्र करन हित, विघ्न अनेकों मीत ।
ज्ञान सबन का प्रभु दिया, करें उनकी प्रतीत ।। 5393
प्रभु अनुग्रह जानिये, कीना सबन सचेत ।
चित्त जभी विक्षिप्त हो, कष्ट जीव को देत ।। 5394
देह रहत है दुख में, रहता चित्त उदास ।
कंपन हो प्रति अंग में, उखड़े जन का श्वास ।। 5395
नाथ अनुग्रह है किया, जगती कीन सचेत ।
चित्त को चंचल न करें, सुख यदि अभिप्रेत ।। 5396
मन दुखी तो तन दुखी, संशय है न लेश ।
सदा करे जन यत्न यह, चित्त का मिटे क्लेश ।। 5397
जब तक चंचल मन रहे, क्लेश मिटे न लेश ।
मन स्थिर तब ही हो सके, निर्मल रहे हमेश ।। 5398
निर्मलता के हेत भी, कहे हैं प्रभु उपाय ।
मैत्री करुणा मुदिता, उपेक्षा जन कर पाय ।। 5399
उपेक्षा जन कर पाय जब, निर्मल होगा चित्त ।
एकाग्र मन तब हो सके, अपने इष्ट निमित्त ।। 5400
मन निर्मल जब होत है, सहज एकाग्र होय ।
एकाग्रता का लक्ष्य वह, गुरु बतलावे जोय ।। 5401
एकाग्रता के लक्ष्य तो, हैं अनेकों जान ।
ग्रहण एक ही करत है, ले वह गुरु से जान ।। 5402

कर अनुग्रह नाथ ने, जग को दिये उपाय ।
अनेक लक्ष्य जो हैं कथे, स्थिर जहां मन हो पाय ।। 5403
प्राणायाम से हो सके, मन एकाग्र मीत ।
साधक को ही होत है, गुण इसका प्रतीत ।। 5404
दिव्य विषय के ध्यान में, भी एकाग्र होय ।
ज्योति आदि दिव्य विषय, दिखें ध्यान में सोय ।। 5405
विरक्त पुरुष के ध्यान से, होवे चित्त विरक्त ।
विरक्त पुरुष के रूप में, मन रहता आसक्त ।। 5406
प्रभु अनुग्रह खास यह, कीना भक्तन तांहि ।
मन जहां भी रुक सकत, रोको उस थल मांहि ।। 5407
मन रुके जभी भक्त का, प्रभु कृपा हो पाय ।
सबीज समाधि में रमे, ज्ञान अलौकिक आय ।। 5408
प्रज्ञा मिले 'ऋतंभरा', पूर्ण जहां हो ज्ञान ।
भ्रमे न मन अज्ञान में, भ्रांति का अवसान ।। 5409
नाथ अनुग्रह होय यदि, निर्बीज समाधि पाय ।
जन्म मरण का बीज सब, नष्ट वहां हो जाय ।। 5410
परम अधिकारी चाहिए, ऐसी कृपा हेत ।
विरला ही जन दीखता, जो यह कृपा लेत ।। 5411
प्रभु अनुग्रह असीम है, जाने सीमा नांहि ।
जात पात का भेद भी, न हो अधिकारी तांहि ।। 5412
अहमद एक मलेच्छ था, जूते गांठन हार ।
अनुग्रह उस पै भी भया, दर्शन दीन करतार ।। 5413

उसे अधिकारी जान कर, ऐसी कृपा कीन ।
बंसी वाले कृष्ण में, सुध बुध भयी विलीन ।। 5414
जो भी शरणी आ गया, तारा तारन हार ।
राम रती परिवार पर, थी कृपा भयी अपार ।। 5415
दशा खूब निज जानता, 'सेवक' भटकन हार ।
थाम लिया है हाथ मम, और किया उद्धार ।। 5416
प्रभु जी ने अवतार ले, कीना जगत सनाथ ।
ब्राह्मण कुल उज्ज्वल किया, जिसमें प्रकटे नाथ ।। 5417
अष्टवंश में सिद्ध पुरुष, साईं दत्त समान ।
उसी वंश में उपज कर, प्रभु कीना कल्याण ।। 5418
योगेश्वर के जन्म से, वंश भया विख्यात ।
पूत से कुल का नाम हो, सब जन कहते बात ।। 5419
[1] पितरों को भी तारता, योगी जो हो पूत ।
स्पष्ट कीन यह नाथ ने, देकर एक सबूत ।। 5420
योगी गुरु को पाय जब, कीन योग मन लाय ।
अधम योनि में पितर जो, छूट वहां से पाय ।। 5421
अनुग्रह भक्तन पर किया, कुल पर भी उन कीन ।
ऐसे दयालु नाथ ने, शरणी सेवक लीन ।। 5422
परम अनुग्रह नाथ ने, मुलख राज पर कीन ।
दर्शन हरि के द्वार में, विराट रूप से दीन ।। 5423

[1] श्री योग महा दिव्य रामायण – दोहा संख्या 1499 से आगे

देखा मुलख राज था, प्रभु का वह स्वरूप ।
न देखा था कभी किसी, ऐसा प्रभु का रूप ।। 5424
अखण्ड मण्डला कारं, व्याप रहा सब ओर ।
तेज था कोटि सूर्य सम, दीखत ओर न छोर ।। 5425
यह अनुग्रह नाथ का, पूर्ण कथनी न आय ।
केवल मुलख राज पर, कीन जो शरणि लाय ।। 5426
आ अवतार हि कर सकत, भक्तन पर उपकार ।
जैसे कृष्ण भगवान ने, अर्जुन पर इक बार ।। 5427
वैसे ही प्रभु जी किया, मुलख राज के साथ ।
हरिद्वार में कुंभ पर, कीना उसे सनाथ ।। 5428
इस से हि सिद्ध होत है, भुषुण्डि की वह बात ।
"कलि में उतरेंगे प्रभु, राम लाल साक्षात" ।। 5429
काक भुषुण्डी जो लिखा, त्रेता युग में आन ।
उसका मिलता सकल है, इस समय प्रमाण ।। 5430
"राम लाल के नाम से, कलि में ले अवतार ।
पाप ताप जग के हरें, चित्त में कृपा धार ।। 5431
अखिल जगत के त्राण हित, और धर्म के हेत ।
कलि में प्रकटेंगे प्रभु, देख रहा हूँ त्रेत ।। 5432
हरें कष्ट वे भक्त के, बदलें उसका भाग ।
उस के संकट खुद गहें, चरणि जो जन लाग ।। 5433
केवल संकट न हरें, लेवें उसे उबार ।
योगी उसे बनाय कर, करें परम उद्धार ।। 5434

बीस वर्ष की आयु में, पिता से होय वियोग ।
राम त्यागें गेह को, साधन हेतु योग ।। 5435
उसी काल तब राम में, प्रकटें सिद्धि अनेक ।
शेष शारद न कर सकें, वर्णन जिनका नेक ।। 5436
गुरु शक्ति को वे गहें, अतुल असीम अनन्त ।
जिस पर कृपा वे करें, बने गुरु वह संत ।। 5437
जैसी जिसकी योग्यता, वैसी कृपा पाय ।
राम लाल की शरण रह, गुरु शक्ति आ जाय ।। 5438
चरित्र वे तब जो करें, कलि में ले अवतार ।
पूरण उसका हो सके, किसी से न विस्तार ।। 5439
कल्प अन्त तक वे धरें, विलक्षण हि वह देह ।
गुप्त भेद है ईश का, आये समझ न येह'' ।। 5440
भुषुण्डि के इस वचन से, सिद्ध होत है बात ।
राम लाल भगवान हैं, अवतारी साक्षात ।। 5441
अनुग्रह वे हैं कर रहे, रात दिवस मम मीत ।
भक्त जनों को हो रही, इसकी सब प्रतीत ।। 5442
भविष्यवाणि भुषुण्डि की, त्रिकाल सत्य हि होय ।
मुलख राज प्रत्यक्ष की, निज ध्यान में सोय ।। 5443
भक्तों को श्री मुलख ने, निज बतलाया ध्यान ।
भविष्यवाणि का सबन को, मिला प्रत्यक्ष प्रमाण ।। 5444
प्रभु अनुग्रह से दिया, मुलख राज उपदेश ।
कृतार्थ सब जन हो गये, सुन अमृत वचन विशेष ।। 5445

स्वयं निमाना जन रहे, औरों को दे मान ।
विनय शीलता योग में, कहा मुलखा प्रधान ।। 5446
शरण पड़े की लाज के, रक्षक प्रभु जी आप ।
मूक होय वाचाल जन, प्रभु जी के प्रताप ।। 5447
ऋषियों की संतान हम, निज को लें पहचान ।
सशक्त बनें हम योग से, करें आत्म कल्याण ।। 5448
चित्त दुराग्रही होय कर, प्रभु से रहत अलग ।
योग करें तब जा मिले, प्रभु से होय सलग ।। 5449
विषय चित्त को घेर कर, राखें प्रभु से दूर ।
संस्कारों के जाल में, करें पीस कर चूर ।। 5450
विषय विष सम जानिये, मन को करें मलीन ।
चंचलता चित्त में बढ़े, राग द्वेष में लीन ।। 5451
काम क्रोध को वर्जिये, वर्जो लोभ व मोह ।
अहंकार को वर्जिये, ईश मिलें तब तोह ।। 5452
जैसे कर्मन नर करे, वैसे फल को पाय ।
खायी खोदे अन्य हित, गिरे कूप में जाय ।। 5453
कर्म कारण त्रिताप का, भौतिक दैविक आत्म ।
रहस्य पावे त्रिताप का, समझे गुरु महात्म ।। 5454
नाम रूप जब जन गहे, सद्गुरु कृपा पाय ।
प्राणों का हो मथन भी, ईश्वर रूप लखाय ।। 5455
संशय कर के दूर सब, धार के मन विश्वास ।
ले प्राण की संबलता, पावो सिद्धि खास ।। 5456

सात्विकता से जन बने, निर्मलता का रूप ।
सर्वव्यापक जो प्रभु, उसमें वह तद्रूप ।। 5457
गुरु के मुख से श्रवण कर, उपजे तत्क्षण ज्ञान ।
मनन करें जो प्रेम से, होय एकाग्र ध्यान ।। 5458
योग में निश्चय जो धरे, और योग से प्रीत ।
सचमुच वह जन धन्य है, सुन्दर उसकी नीत ।। 5459
ऋषि जीवन अपनान हित, होय लगन यदि मीत ।
शरण प्रभु की आय कर, सीख योग ला चीत ।। 5460
श्वास श्वास में सुख बहे, श्वास श्वास आनन्द ।
योग युक्त योगी बने, पावे परमानन्द ।। 5461
पावे परमानन्द को, होय प्रभु में लीन ।
उसके सुख की क्या कहें, सन्मुख देव भी दीन ।। 5462
अमृत का करे भोग वह, निरत योग आसीन ।
उठता बैठता चलत वा, प्रभु में हो मन मीन ।। 5463
मिलता योग न गुरु बिन, ब्रह्म का हो न भान ।
चित्त एकाग्र न भये, निश्चय से लो जान ।। 5464
गुरु कृपा से जब भये, योगी पुरुष महान ।
काम क्रोध व लोभ के, दोष नाश हो जान ।। 5465
गुरु पारस जब मिल गये, स्पर्श तब उन का पाय ।
पलट गति मन की भयी, चित्त न हर्ष समाय ।। 5466
मुलख राज की श्रवण कर, अमृत वाणी पूर्ण ।
भक्तन के मन भक्ति से, द्रवित भये सम्पूर्ण ।। 5467

राम लाल भगवान का, यह अनुग्रह मीत ।
दीनि भक्तन को शिक्षा, मुलखा राज सप्रीत ।। 5468
प्रभु जी का उपदेश यह, जान योग का सार ।
"योगी भी भव बहत है, कर माया से प्यार" ।। 5469
[1] शंभू के दृष्टांत से, कीना प्रभु स्पष्ट ।
कर माया से प्यार तो, योगी भी हो नष्ट ।। 5470
परम अनुग्रह नाथ का, ज्ञान दिया सप्रीत ।
योगिन को सचेत किया, करें न धन से प्रीत ।। 5471
त्रय माया के रूप हैं, धन, जन, यश मम मीत ।
तीनों ही ये जान लो, योग के हैं विपरीत ।। 5472
वन में करता योग था, योगी मुक्ति हेत ।
फंस गया वह लोभ में, राज्य पाने के हेत ।। 5473
शंभू राजा मर गया, उस के तन में आय ।
भोगे भोग उस राज के, माया में भरमाय ।। 5474
इक योगी ने ठग लिया, उस तन कीन प्रवेश ।
तोते के तब देह में, गया फंस नरेश ।। 5475
[2] पूरी कथा सुनाय कर, जो रामायण आयी ।
अनुग्रह प्रभु जी कीनी, दें शिक्षा तब पायी ।। 5476
काम लोभ के वश भये, जो योगी महाराज ।
लानत उसको सब कहें, उसे न लागे लाज ।। 5477

[1] देखें श्री योग महा दिव्य रामायण – दोहा संख्या 1556 से आगे – शंभू का दृष्टांत
[2] देखें श्री योग महा दिव्य रामायण – दोहा संख्या 1555 से आगे – राजा शंभू का दृष्टांत

समझे न कुछ लाज को, मारी उसकी बुद्ध ।
गुरु मर्यादा भूल कर, विसराये वह सुध ।। 5478
शिक्षा प्रभु की श्रवण कर, सब कहे निज तांहि ।
माया ठगनी सब कहें, को भी न बच पांहि ।। 5479
मर्यादा के पुरुषोत्तम, राम लाल भगवान ।
योग मर्यादा पालें, योगिराज सुजान ।। 5480
है योगी जब जगत में, पाले जग मर्याद ।
यह भी शिक्षा राम की, राखो जगत संभाल ।। 5481
योग मर्यादा पालते, जग मर्यादा साथ ।
एक हाथ में योग है, जग है दूसर हाथ ।। 5482
जग मर्यादा त्यागनी, उन का नहीं उपदेश ।
जब तक जीवन जगत में, पालन करें हमेश ।। 5483
देख लिया सब जगत ने, प्रभु का यह आचार ।
निधन भया इक शिष्य का, प्रभु मन दुख अपार ।। 5484
उस शिष्य के निधन पर, त्याग के निज स्थान ।
सब शिष्यन के देखते, बैठे नीचे आन ।। 5485
चकित भये सब भक्त जन, देख नाथ आचार ।
प्रभु मर्यादानाथ हैं, जान लिया उन सार ।। 5486
अनुग्रह पात्र बहुत था, प्रभु भक्त गोपाल ।
जिस निधन पर था किया, प्रभु जी शोक अपार ।। 5487
उसकी ध्यान समाधि का, जो वर्णन है कीन ।
वह इक ध्यान अनूठ है, प्रभु जो अनुभव दीन ।। 5488

प्रभुजी ने गोपाल को, दीना बहुत ज्ञान ।
उन समझाया विश्व का, गूढ़ समस्त विज्ञान ।। 5489
पूर्व जन्म की गाथ भी, दिखलाई प्रभु आप ।
मिट गया संताप सब, प्रभु जी के प्रताप ।। 5490
गुरु भक्तों के भेद भी, जिमि सब का कल्याण ।
श्री प्रभु जी दिखलाया, भया अपूर्व ज्ञान ।। 5491
योगी में जो शक्ति है, 'आकर्षण' कहलाय ।
योगी उस के कारणे, प्रियदर्शी हो जाय ।। 5492
प्राणों के अभ्यास से, जन यह शक्ति पाय ।
प्रभु जी ने गोपाल को, दीना यह समझाय ।। 5493
और भी गोपाल पर, कीन महा उपकार ।
माता उस की को प्रभु, दुख से दीनि निकार ।। 5494
अधोयोनि में वह पड़ी, देखा था गोपाल ।
गोपाल कीन प्रार्थना, लीनी प्रभु संभाल ।। 5495
महा अनुग्रह नाथ का, गोपाल पर इक और ।
महा प्रभु का दर्शन पा, हर्ष का रहा न ठौर ।। 5496
महा प्रभु के रूप पर, ठहर न दृष्टि पाये ।
अनेकों भानु एक दम, उदय भये जिमि आये ।। 5497
महाप्रभु के तेज को, सह सका नहीं सोय ।
प्रभु के चरणों पर गिरा, चेतनता को खोय ।। 5498
विरले जन को होत है, दर्शन का संयोग ।
जब अनुकम्पा प्रभु करें, भये तभी यह योग ।। 5499

समाधि स्थित यदि हो जन, रक्षा उस की होय ।
उस के संग रहें प्रभु, काम न बिगड़े कोय ।। 5500
यह अनुकम्पा नाथ की, बहु प्रचारित होय ।
जन ऐसे बहु मिलत हैं, कथें स्व अनुभव जोय ।। 5501
ऐसा ही इक भक्त था, लाल बिहारी नाम ।
था वह बैठ समाधि में, प्रभु किए सभी काम ।। 5502
चकित भया जब वह गया, आफिस में वह लाल ।
मांगी क्षमा विलंब की, भया विदित तब हाल ।। 5503
रूप बिहारी लाल धर, गये थे आफिस नाथ ।
पूरे काम उस के किये, कीना भक्त सनाथ ।। 5504
प्रभु अनुग्रह का विस्तार, कौन सके कर मीत ।
दें दर्शन वे नाथ जी, अनेक अलौकिक रीत ।। 5505
जसवंत राय भक्त पर, जो कृपा थी कीन ।
चमत्कार ही समझ लो, दर्शन जिस विध दीन ।। 5506
बंद भवन में नाथ जी, थे विराजे प्रात ।
मार्ग चलते उसे मिले, थी अलौकिक बात ।। 5507
चमत्कार यह करत हैं, श्रद्धा वृद्धि हेत ।
श्रद्धा जननी योग की, दर्शन है अभिप्रेत ।। 5508
प्रभो अनुग्रह आप का, मम जीवन आधार ।
बिना अनुग्रह नाथ जी, जीवन शून्य निःसार ।। 5509
किरपा करके नाथ ने, सबन दीन उपदेश ।
दिनचर्या के रूप में, था उनका निर्देश ।। 5510

जगजननी जो नार है, उसे आवश्यक योग ।
जननी के महत्व को, हैं भूले बहु लोग ।। 5511
योग करें जब नारियां, योगी हो सन्तान ।
योग का विस्तार तभी, प्रभु दीना यह ज्ञान ।। 5512
नारी सहज आरूढ़ हो, योग धर्म में मीत ।
भाव भक्ति की खान वह, कोमल उस का चीत्त ।। 5513
जगद्गुरु नारी जन्म, बहु गुणों की खान ।
योग धर्म यदि वह गहे, नित्य मुक्त पहचान ।। 5514
मुक्ति पाना सरल है, योग करे यदि नार ।
भाव भक्ति की खान वह, नित्य मुक्त पहचान ।। 5515
प्रभु जी ने दृष्टांत से, समझाई यह बात ।
तार दिया निज पति था, एक नार साक्षात ।। 5516
सुकर्मा रानी राज की, पति परायण नार ।
गुरु योगी से था उस, पाया योग अपार ।। 5517
राजा योग न मानता, तीर्थन का शौकीन ।
तीर्थन में था भटकता, रानी योगासीन ।। 5518
गुरु कृपा को पाय कर, और साध के योग ।
सुकर्मा 'सुकर्मा' भई, भई मोक्ष के योग ।। 5519
कई दिवस रही बैठ वह, समाधि में लव लीन ।
द्वार दशम में प्राण थे, गुरु चरणी मन मीन ।। 5520
भटक भटक कर इत उत, तीर्थन मध्य नरेश ।
संकट जब उस पर पड़ा, देर न लागी लेश ।। 5521

दिव्य दृष्टि से ज्ञात कर, पहुंची रानी आन ।
संकट से उबार कर, कीना उस का त्राण ।। 5522
बोली रानी राज को, मम प्राण हे नाथ ।
तीर्थ का मग त्याग कर, योग करो मम साथ ।। 5523
करके निश्चित वास तुम, करिए साधन योग ।
तीर्थाटन की लालसा, भी इक मानस रोग ।। 5524
पूरण सुख आनन्द का, यदि चाहो तुम लाभ ।
त्याग स्वर्ग की चाह को, साध मोक्ष अमिताभ ।। 5525
प्रभु की शिक्षा जगत को, नार करे जब योग ।
विस्तृत हो तब जगत में, योग करें बहु लोग ।। 5526
उपाख्यान इक और भी, दे कर कीन स्पष्ट ।
नार करत जब योग को, हो कष्ट पति का नष्ट ।। 5527
राजा हरेन्द्र राव था , योगिन उस की नार ।
रक्षा कीनी राज की , संकट जभी अपार ।। 5528
रानी करती योग थी, राजा को न भाय ।
त्यागे रानी योग जिमि, राजा करत उपाय ।। 5529
योगी दुख न मानता, जग वैरी जो होय ।
सन्मारग पर ही चले, गुरु बतलावे जोय ।। 5530
गुरु बतलावे जो पथ, चले उसी वह राह ।
अन्य दिशा अवलोकन, उस के चित्त न चाह ।। 5531
दीने राजा कष्ट बहु, भयी न वह अधीर ।
लगी रही वह योग में, लेश न मानी पीर ।। 5532

राजा बंधन में पड़ा, संकट में थे प्राण ।
रानी ने तब आय कर, बचायी उस की जान ।। 5533
मर्यादा रानी धन्य है, पति परायण नार ।
योगी गुरु से योग कर, दिव्य कीनी उस कार ।। 5534
कीनि दिव्य उस कार थी, राखे पति के प्राण ।
यम से जिमि बचाय था, सावित्री ने सतवान ।। 5535
महा अनुग्रह नाथ का, नारि जगत पर जान ।
प्रतिष्टित कीना आ कर, नारिन का सन्मान ।। 5536
एक बात है और भी, प्रभु चरित में मीत ।
भूले भटके जनन पर, भी उन की है प्रीत ।। 5537
आ गया जो शरण में, उस का राखा मान ।
कीन पापिन को साधु, और किया कल्याण ।। 5538
गीता के उस वचन पर, दी छाप प्रभु लाय ।
शरणी ईश्वर आय कर, पापी भी तर जाय ।। 5539
सेवा में वह रहत पर, चोरी का स्वभाव ।
तस्कर का न बदल सका, जा लगाये दाव ।। 5540
पता लगा जब साध को, दीन समाधि योग ।
तस्कर से साधु भया, पूजें उस को लोग ।। 5541
प्रभु अनुग्रह से बहु, जन भये हैं साध ।
प्रवर्तित जीवन है भया, प्रभु से योग आराध ।। 5542
प्रभु अवतारे जगत में, करने योग प्रदान ।
उन की दृष्टी में सभी, जग के मनुष्य समान ।। 5543

उन की शिक्षा जगत को, सभी धर्म है एक ।
योग से आरंभ भया, था धर्म प्रत्येक ।। 5544
बानी धर्मो के सभी, योगी पुरुष महान ।
शिक्षा उन की जो भयी, उस में योग समान ।। 5545
आदिकाल से जो भये, जग में गुरु विख्यात ।
ग्रहण योग सब ने किया, शक न इस में तात ।। 5546
ईसा के दृष्टांत से, स्पष्ट कीन यह बात ।
यम वा नियम उपदेशा, ईसा ने साक्षात ।। 5547
अहिंसा सत्य अस्तेय की, स्पष्ट कथी थी बात ।
और सभी वा नेम उन, उपदेशे थे तात ।। 5548
प्रीती वैरी से करे, धर्मी जानो सोय ।
ऐसे नर के सामने, वैरी मित्र होय ।। 5549
सत्य छिपाये बात में, और लेत जो शपथ ।
चतुराई वह करत है, त्याग धर्म का पथ ।। 5550
वे नर सारे चोर हैं, आंख में झोंकें धूल ।
ऐसे नरन से हे मन, कर विश्वास न भूल ।। 5551
एक अंग के कारणे, पड़े नरक की आग ।
धिक है ऐसे अंग को, नर होत मंद भाग ।। 5552
चोर चुरावे जो धन, अथवा होता नाश ।
उस धन से क्या लाभ है, नर को करत हताश ।। 5553
कहा ईसा ने सब जन, श्रवण करो चित्त लाय ।
शुद्धि मन की कीजिये, निर्मल जिमि हो पाय ।। 5554

पक्षी बीज न बीजते, और न काटें खेत ।
भण्डार करें न अन्न का, ईश्वर सब को देत ।। 5555
जीवन दायी मग गहे, तपस्वी जो जन होय ।
विरले जन इस मग चले, चले जो सूरा होय ।। 5556
बालु की जो नींव पै, बना भवन हो मीत ।
टिके नहीं तोफान में, सोचो ला तुम चीत ।। 5557
तुम्हीं पिता हम दास हैं, स्वर्ग तुम्हारा वास ।
पतित पावन नाथ जी, शरणी आया दास ।। 5558
महान अनुग्रह नाथ का, धर्म जनों पै मीत ।
सब धर्मों का मान हो, धर्म से जिस की प्रीत ।। 5559
जैन धर्म की भी कही, प्रभु जी ने यह बात ।
जैन धर्म के बानी, थे योगी विख्यात ।। 5560
ऋषभदेव आदि भये, योगी परम ललाम ।
अखिल योग की सिद्धियों, के ऋषभ थे धाम ।। 5561
ऋषभदेव थे आदि में, जैन धर्म के देव ।
महान भये थे योग से, सिद्ध पुरुष अधिदेव ।। 5562
ऋषभदेव के बाद फिर, तेरह तीर्थंकर जान ।
वे भी सब योगी भये, योगी वर्य सुजान ।। 5563
योग धर्म को साध कर, भये योगी प्रवीण ।
जैन धर्म की लीक को, चालू था उन कीन ।। 5564
मौनी मन को जीत कर, मुनि भये विख्यात ।
जग की माया पंक वत, उन मन थी साक्षात ।। 5565

आत्म बोध के हेत हो, धर्म कर्म सब मीत ।
धर्म निरर्थक तब भये, फांदे माया चीत ।। 5566
अहिंसा सत्य अस्तेय को, ब्रह्मचर्य की लीक ।
अपरिग्रह को मान ले, समझो जैनी ठीक ।। 5567
यही अनुग्रह जानिये, धर्म की दी पहचान ।
अनुयायी जो धर्म के, लेंय प्रभु से ज्ञान ।। 5568
बौद्ध धर्म भी योग से, उपजा है जो जान ।
योग समाधि से भया, जग में बुद्ध महान ।। 5569
सभी धर्म जभी ऊपजे, योग से हि हैं मीत ।
होय सभी की सबन से, निश्चय से ही प्रीत ।। 5570
भिन्न-भिन्न जो धर्म हैं, योग में सब का सार ।
योग को जाना जन जिस, पाया धर्म का पार ।। 5571
एकता का जो सूत है, योग उसी का नाम ।
सब फैक्ट्रिन में है जिमि, विद्युत करती काम ।। 5572
विद्युत शक्ति एक है, करती काम अनेक ।
योग शक्ति भी एक है, उपजे मत अनेक ।। 5573
ऋषि मुनि जितने हुए, और हुए अवतार ।
सब को ही तो योग का, था केवल आधार ।। 5574
वेदों में भी योग का, मिलता सार तमाम ।
योगी ऋषि महान इक, वाम जिस का नाम ।। 5575
[1]साक्षात किया उस ईश का, कर के साधन योग ।
पूर्व जन्मों की कथा, सुनते उस से लोग ।। 5576

[1] ऐतरेयोपनिषद् – II 1.5 : III 1.41

प्रभु जी का उपकार है, संस्कृति पर भी मीत ।
विस्मृत वेद ज्ञान की, करायी उन प्रतीत ।। 5577
कठोपनिषद की कथा, का बतलाया सार ।
नचिकेता ने जिस रीत से, पाया योग अपार ।। 5578
नाथ अनुग्रह जानिये, वेदों का सब सार ।
लिख दिया इस ग्रंथ में, सरल रीत करतार ।। 5579
वेद कहें नचिकेत था, बालक परम सुजान ।
यम से शिक्षा पाय कर, योगी बना महान ।। 5580
नाड़िन का सब ज्ञान जो, दीना यम ने आप ।
उर्ध्व गति हो प्राण की, मोक्ष मिले बिन ताप ।। 5581
नाड़ी एक सौ एक है, हृदय के ही मांझ ।
सुषुम्ना सब के मध्य में, पंहुचे मूर्धा मांझ ।। 5582
ऋषि त्रिशंकु की कथा, प्रभु बतलायी आप ।
वैदिक ऋषि महान वह, ध्यान में जो आलाप ।। 5583
ज्ञान वचन उस का भया, वेदों में प्रख्यात ।
उन्मनी आवेश मांहि, कथी अनोखी बात ।। 5584
ईश्वर का स्वरूप जोय, वही जीव का रूप ।
व्यापक जो है विश्व में, मेरा वही स्वरूप ।। 5585
नाथ अनुग्रह जानिये, दीना हम को ज्ञान ।
वैदिक ऋषियों का प्रभु, योगी जोय महान ।। 5586
कोष पांच की साधना, भृगु ने जिस विध कीन ।
प्रभु जी ने है स्पष्ट वह, निज ग्रंथिन कर दीन ।। 5587

गुरु से आज्ञा पाय कर, भृगु तपस्या कीन ।
साध लिए उस ने सभी, कोष पांच थे लीन ।। 5588
प्रथम अन्नमय कोष का, जाना उस विज्ञान ।
पुनः प्राणमय कोष का, मिला उसे था ज्ञान ।। 5589
आगे मन का कोष था, उस का भी जो ज्ञान ।
उस ने था वह पा लिया, भृगु था शिष्य सुजान ।। 5590
चौथा कोष विज्ञान मय, मिला उस का भी ज्ञान ।
अगला तब आनन्दमय, उस का पाया ज्ञान ।। 5591
इन कोषों का भाव भी, प्रभु ने कीन बखान ।
अनुग्रह यह भगवान का, जग पै परम महान ।। 5592
योग बिना न मुक्ति है, और नहीं कल्याण ।
प्रभु जी ने समझाया, दे दे कर प्रमाण ।। 5593
सूक्ष्म से भी अति सूक्ष्म, दीना जग को ज्ञान ।
यह अनुग्रह नाथ का, लेवो जान महान ।। 5594
स्पष्ट किया है नाथ ने, 'इन्द्रयोनि' का ज्ञान ।
मारग जिस से गुजरती, कुण्डलि परम ललाम ।। 5595
कुण्डली परम ललाम जो, सहस्रार में जाय ।
मारग 'इन्द्रयोनि' का, भेदन वह कर पाय ।। 5596
'इन्द्रयोनि' को योगि जन, जान ब्रह्म का द्वार ।
इसी मग से प्रयान कर, होते भव से पार ।। 5597
[1]'प्राचीनयोग्य'की जो कथा, वेदन में है आई ।
उसी प्रसंग में नाथ ने, 'ब्रह्म योनि' बतलाई ।। 5598

[1] तैंतिरीयोपनिषद – I.6 देखो रामायण दोहा – 1796

किरपा कर के नाथ ने, वेदों मध्य ज्ञान ।
है आया जो योग का, स्पष्ट कीन भगवान ।। 5599
[1] दीना जो पिपलाद ऋषि, ऋषिकुमारों को ज्ञान ।
रामलाल भगवान ने, कीना स्पष्ट बखान ।। 5600
बिन तप के जो ज्ञान है, और जो तप बिन सेव ।
दोनों ही निष्प्राण हों, विरला जाने भेव ।। 5601
प्राण शक्ति है रम रही, सकल देह के मांझ ।
उसी शक्ति की साधना, करो प्रात व सांझ ।। 5602
प्राण के आश्रित हैं सकल, जग में जितने जीव ।
आंख कान व सकल अंग, प्राण बिना निर्जीव ।। 5603
इस विध लेवो जान तुम, प्राण का बहु अधिकार ।
देह में कारज यह करे, धार बहुत आकार ।। 5604
परवश भोगें कर्म फल, धर्म करें व पाप ।
योगी जाने भेद को, हरता अपने ताप ।। 5605
मन करे विश्राम जब, अन्तर में हो लीन ।
सुषुप्ति अवस्था जानिये, दुख सभी हों क्षीण ।। 5606
स्वप्न अवस्था जानिये, सुषुप्ति से जो भिन्न ।
उस में तो विश्राम नहीं, चित्त रहे बहु खिन्न ।। 5607
इस विध अपने प्राण को, जो जाने यज्ञ रूप ।
श्वास – श्वास प्रभु को भजे, प्रभु में हो तद्रूप ।। 5608
आहुति सांस निसांस को, समझे जो नर विज्ञ ।
घट मांहि वह यज्ञ रचे, योगी बने सुविज्ञ ।। 5609

[1] श्री योग महा दिव्य रामायण – दोहा संख्या 1797 से आगे

परब्रह्म वह ओम् है, आदि न जिसका अन्त ।
अक्षर पुरुष असीम जो, वेद कहें बे-अन्त ।। 5610
त्रिमात्रक उस को जान कर, करे जो उस का ध्यान ।
लौट जगत न आय वह, ज्योति ज्योत समान ।। 5611
षोडश कला संयुक्त जो, गूढ़ पुरुष है भाई ।
सब देहन में बसत वह, महिमा कथी न जाई ।। 5612
षोडश कला सम्पूर्ण तो, स्वयं ब्रह्म सर्वेश ।
योगेश्वर भगवान जिमि, कृष्ण चन्द्र परमेश ।। 5613
सभी कुमारों को मिला, जो निज गुरु से ज्ञान ।
राम लाल भगवान ने, इमि कथा जग आन ।। 5614
भये अवतरित हैं प्रभु, योग स्थापन हेत ।
युग-युग लें अवतार वह, धर्म स्थापन हेत ।। 5615
उन अवतारों का चरित, भी कथा भगवान ।
जो जो कर्म उन थे किए, सब का कीन बखान ।। 5616
अवतारि नर नारायण, ईश्वर जग में आय ।
योगी परम ललाम वे, भारत में उपजाय ।। 5617
नारायण की तपभूमि, बद्रिकाश्रम जान ।
प्रकट भये इस लोक में, यह अवतार महान ।। 5618
नारायण की सीख यह, नर तन को जन पाय ।
योग तपस्या जब करे, देह से मोक्ष कमाय ।। 5619
सनक सनन्द भी हुए, प्रसिद्ध यहां अवतार ।
प्रभु ने उन का कथन कर, जग पै कीन उपकार ।। 5620

ब्रह्मचर्य अपनाय कर, कीना साधन योग ।
प्रकट भये चित्त आत्मा, यश गायें सब लोग ।। 5621
'सनक' 'सनन्द' ही तभी, और जो 'सनत्कुमार' ।
'सनातन' रूप बनाय कर, प्रकटे जगदाधार ।। 5622
योग शिक्षा उन से तभी, ऋषियों ने थी लीन ।
लुप्त भया जो योग था, शिक्षा उस की दीन ।। 5623
वराह लीन अवतार था, जग दुख हरने हेत ।
जगती जब दुख में पड़े, प्रभु अवतार तब लेत ।। 5624
मनु से मानव का भया, जग में जब विस्तार ।
एक समस्या पर रही, सर्वत्र जल प्रसार ।। 5625
रहने को भी भूमि न, धरा के ऊपर नीर ।
नीर-नीर ही सब जगह, मानव भया अधीर ।। 5626
ईश्वर स्वयं पधारा, बदला रचना रूप ।
'सेवक' सिमरन जब करे, पावे भक्ति अनूप ।। 5627
नारद के अवतार का, भी प्रभु कीन बखान ।
भक्ति वा संग योग का, जो अवतार महान ।। 5628
हरिरसिक तहां ही रमें, जहां हो हरि का नाम ।
हरि का नाम न हो जहां, भक्त का वहां न काम ।। 5629
भक्ति हीन जो कर्म है, बन्धन का वह रूप ।
ब्रह्म ज्ञान भी भक्ति बिन, हो न शुद्ध स्वरूप ।। 5630
ईश्वर अर्पण सब कर्म, करता भक्त सुजान ।
दुख रूप संसार से, इस विध पाता त्राण ।। 5631

नारद का उपदेश यह, शास्त्र करें बखान ।
पालन इस का जो करत, पावत सुख महान ।। 5632
मोक्ष होता न कर्म से, भक्ति से ही होय ।
रोग उपजे जिस वस्तु से, निरोग करे न सोय ।। 5633
हरि चर्चा में मन लगे, हरि से ही कर हेत ।
नौका रूप हरि भक्ति है, हेय विषय चित्त चेत ।। 5634
कहे नारद जब मैं भजूं, ईश्वर को सप्रेम ।
दर्शन देवें चित्त में, विलक्षण हरि का नेम ।। 5635
सज्जन जिमि पुकारिये, आ कर खड़ता पास ।
ऐसे ही हरि आय कर, मन बंधावे आस ।। 5636
कपिल देव अवतार का, भी प्रभु कीन बखान ।
निज माता को कपिल ने, सांख्य का दीना ज्ञान ।। 5637
हेतु बंध वा मोक्ष का, चित्त को लो पहचान ।
विषयों से वैराग्य कर, हरि में धारो ध्यान ।। 5638
ऐसी अवस्था पाय कर, दुःख सुख मांहि समान ।
राग द्वेष जन न करे, योगी बने महान ।। 5639
माया के प्रभाव से, मुक्त होय जब साध ।
ईश्वर चित्त में दीखता, भक्ति बढ़त अबाध ।। 5640
सर्वव्यापक ईश में, हो उस का अनुराग ।
आत्म दर्शन पाय कर, भक्त बने महा भाग ।। 5641
श्रद्धा भक्ति जब बढ़े, करे हरि गुण गाण ।
वैराग्य भाव तब ऊपजे, मिले योग का ज्ञान ।। 5642

मिले योग का ज्ञान जब, मोह का होय अन्त ।
जीव करे अभ्यास को, जान पाय भगवन्त ।। 5643
कर्म सकल जिस कर दिये, समर्पण ईश्वर पास ।
ऐसा जन क्यों कर करे, मुक्ति की भी आस ।। 5644
इच्छा चाहे न करे, लगती मुक्ति हाथ ।
भक्ति के प्रभाव से, हरि रहें उस साथ ।। 5645
हरि भक्त तो मोक्ष का, भी राखे न ध्यान ।
हरि भक्त हरि प्रेम में, भूल जाये सब ज्ञान ।। 5646
तत्वों को जन जान कर, पावे आत्म बोध ।
सृष्टि का सब रहस्य तब, मिले उसे कर सोध ।। 5647
[1] प्रकृति के सब तत्व जब, रहें ध्यान दिन रात ।
पुरुष बंधन में न पड़े, रहे स्वतन्त्र मात ।। 5648
सांख्यशास्त्र जिन जगत को दीना ले अवतार ।
कपिल देव भगवान की, महिमा अतीव अपार ।। 5649
नृसिंह रूप का भी प्रभु, है बतलाया कार ।
प्रकटे थे भगवान जब, करें दुष्ट संहार ।। 5650
स्मरण किया जब भक्त ने, जग का सिरजन हार ।
निमेश मात्र में तब प्रभु, प्रकटे ले अवतार ।। 5651
भक्तों की हरि चेत लें, प्रकट भयें तत्काल ।
भीड़ पड़े जब भक्त पर, आ कर करें संभार ।। 5652
परशुराम अवतार का, प्रभु जी कीन बखान ।
स्वधर्म पालन की शिक्षा, इस में छिपी महान ।। 5653

[1] श्री योग महा दिव्य रामायण – दोहा संख्या 1853 से आगे

रक्षक ही जब हो गए, भक्षक जग के मीत ।
लेय परशु हरि आ गए, भये सभी भय भीत ।। 5654
त्रेता में तो राम का, था भया अवतार ।
रक्षा हो मर्याद की, शिक्षा दी करतार ।। 5655
यह अनुग्रह नाथ का, जग को दीनी सीख ।
आज भुलाई जगत ने, मर्यादा की सीख ।। 5656
पुरुषोत्तम मर्याद के, राम भये विख्यात ।
सींव धर्म की बांधि उन, किस की और बसात ।। 5657
नाथ अनुग्रह कथ सके, सेवक नहीं समर्थ ।
अवतारों के जिन कर्म का, गूढ़ बताया अर्थ ।। 5658
गूढ़ बताया अर्थ उन, जन्म लिया जिस हेत ।
प्रकट भये हैं स्वयं प्रभु, योग धर्म के हेत ।। 5659
कृष्ण चन्द्र भगवान की, भी कथ दी उन बात ।
सोलह कला भगवान जी, जो प्रकटे साक्षात ।। 5660
योग धर्म की नींव जिन, आ राखी जग मांहि ।
धर्म हेत जिन युद्ध में, हने दुष्ट सब थांहि ।। 5661
द्वारिका पुरी बसाय कर, नाना को दे राज ।
धर्म स्थापन कार्य में, लगे कृष्ण महाराज ।। 5662
पक्ष धर्म का लेय कर, कीना था संग्राम ।
धर्म क्षेत्र कुरुक्षेत्र में, दीना ज्ञान तमाम ।। 5663
कर्म करें जब शुभ हम, और करें न पाप ।
सुख स्वभाविक ही मिले, कहा कृष्ण यह आप ।। 5664

अर्जुन डूबा शोक में, देख युद्ध का रूप ।
कृष्ण चन्द्र के वचन सुन, शक्ति पायी अनूप ।। 5665
कृष्ण चन्द्र महाराज थे, योगेश्वर भगवान ।
ज्ञान योग का देय कर, किया जगत कल्याण ।। 5666
फल की इच्छा त्याग कर, कर्म करें नर नार ।
देह रमे तो कर्म में, मन में हरि का प्यार ।। 5667
कृष्ण चन्द्र ने जगत को, दीना योग ज्ञान ।
भ्रांत मति सब जगत की, हर लीनी भगवान ।। 5668
मन वाणी और बुद्धि से, शरण हरि की होय ।
स्मरण करे न और कुछ, योगि जन वह सोय ।। 5669
गमन करे हरि लोक को, रहे हरि के संग ।
नाश होवे न भक्त का, कृष्ण कथा प्रसंग ।। 5670
इधर-उधर की छोड़ जो, गहे हरि की शरण ।
पाप रहित उस के बनें, धर्म कर्म आचरण ।। 5671
मरे न देह के संग जो, अजर अमर इक रूप ।
नित्य सनातन पुरुष वह, देही देह में गूप ।। 5672
एक देह को त्याग कर, धारे देह नवीन ।
नूतन वस्त्र धारता, जिमि नर फैंक मलीन ।। 5673
ध्यान योग कर ध्यान में, सिमरे हरि का नाम ।
प्राप्त करे भगवान को, रहे उसी के ध्यान ।। 5674
आत्म दर्शन जब भये, सुख ऐसा जन पाय ।
बुद्धि में आनन्द बसे, कथन में जो न आय ।। 5675

ईश्वर को जन पाय कर, करता मुक्ति लाभ ।
रहत जगत के बीच भी, वह योगी अमिताभ ।। 5676
दीपक के प्रकाश वत, ज्ञान का हो प्रसार ।
ज्ञानी के प्रति कर्म से, बहे ज्ञान की धार ।। 5677
नित्य रहत वह एक चित्त, इष्टानिष्ट न देख ।
अनन्य भाव से हरि भजन, शुद्ध देश को पेख ।। 5678
कथ दीना संक्षेप से, पूर्ण योग का ज्ञान ।
कृष्ण चन्द्र भगवान ने, जो दिया जग आन ।। 5679
कृष्ण चन्द्र भगवान का, भक्ति योग का ज्ञान ।
कर्म योग वा सांख्य का, दीना कर बखान ।। 5680
परम अनुग्रह नाथ का, भक्त जनों पै मीत ।
ज्ञान मिलेगा योग का, प्रभु चरणी भी प्रीत ।। 5681
सब अवतार जो जग भये, सतयुग त्रेता द्वाप ।
उन की सुन्दर गाथ को, कीना वर्णन नाथ ।। 5682
नाथ अनुग्रह है भया, कीना सबन सचेत ।
यह कलियुग का प्रहर है, पाप में सभी अचेत ।। 5683
धर्म कर्म उपदेश जो, ग्रंथन में सब गुप्त ।
उन पर चलता न कोई, धर्म भया इमि लुप्त ।। 5684
मन की शुद्धि नहीं रही, वाणी भी न शुद्ध ।
कर्म पापमय हो गये, नष्ट भयी है बुद्ध ।। 5685
धर्म कर्म के अंग जो, भया सबन का लोप ।
कौन बचावे धर्म को, सब थां लीला पोप ।। 5686

सचेत प्रभु ने कर दिया, सर्व जगत को मीत ।
फल पाप का घोर होत, करो न उस से प्रीत ।। 5687
अनन्त अनुग्रह नाथ के, कैसे करें बखान ।
है ढीठाई दास की, करना चाहे ब्यान ।। 5688
अनन्त का तो अन्त न, कौन सके पा थाह ।
है ढीठाई दास की, कर रहा अवगाह ।। 5689
ढीठ बन कर चलत वह, जोड़त कण कण खोज ।
क्षमा करो प्रभु दास को, क्षमा पुकारत रोज ।। 5690
जो अनुग्रह जगत पर, सब से कीन महान ।
उस का वर्णन अब करूँ, करो क्षमा भगवान ।। 5691
त्याग दिया जब नगर को, दिया मुलख को राज ।
चले गये गुरु पास वे, मुलख ग्राह्या काज ।। 5692
मुलख समान न और था, इस कार्य के योग ।
जग अपनाया मुलख को, मुलख फिलाया योग ।। 5693
दी आज्ञा उन मुलख को, करना कार्य महान ।
योग धर्म सर्वोत्तम, न इस के को समान ।। 5694
आश्रम का सब काम जो, तुम्हें सौंप के तात ।
मिले हमें विश्राम अब, यही कहनी है बात ।। 5695
शुद्ध हमारा रूप तुम, लेश नहीं है भेद ।
कार्य करो उत्साह से, मन में मान न खेद ।। 5696
कर्म करे जग हेत जो, चित्त न राखे स्वार्थ ।
प्रभु भक्ति मन में बसे, जन पावे परमार्थ ।। 5697

गुरु भक्ति और योग की, महिम करो विस्तार ।
सन्मारग जग को मिले, भाये दूर अंहकार ।। 5698
जगत विसारा योग को, गुरु भी योग विहीन ।
साधन से सब च्युत भये, कथनी में वे लीन ।। 5699
आश्रम में जब आयकर, जिज्ञासा दिखलाय ।
सब विध शिक्षा योग की, वह जन तुम से पाय ।। 5700
साधन जो हठ योग के, यम नियम भी संग ।
सीखें जन सब आय कर, योग के आठों अंग ।। 5701
यही हमारी सीख है, ब्रह्मचर्य व्रत धार ।
सेवा में रत रह अब, करो योग प्रचार ।। 5702
नाथ अनुग्रह जानिये, जन हित के हित मीत ।
मुलख राज को सीख दी, हो जनता से प्रीत ।। 5703
योग साधन सिखाय कर, करिये जग कल्याण ।
मनुष्य मात्र के हित में, योग सर्वोत्तम जान ।। 5704
योग एक विज्ञान है, इस में भ्रम न लेश ।
योग विद्या जो न गहे, मोह में रहत हमेश ।। 5705
[1] प्रभु ने इक दृष्टांत से, कीनी बात स्पष्ट ।
मंगल मुग्ध ज्ञानि की, बुद्ध थी भयी भ्रष्ट ।। 5706
अपने को था कहत वह, मैं ब्रह्म साक्षात ।
मम शक्ति से हि ऊपजा, यह जगत साक्षात ।। 5707
व्यसन करत वह सकल ही, कह कर निजहिं समर्थ ।
बातें ऐसी करत वह, जो बिन अर्थ व्यर्थ ।। 5708

[1] श्री योग महा दिव्य रामायण – दोहा संख्या 1913 से आगे

योग आदि की साधना, कहता सभी व्यर्थ ।
'अहं ब्रह्म' इक बार ही, कह कर भयें समर्थ ।। 5709
मैं ब्रह्म परब्रह्म हूँ, मैं माया से दूर ।
ब्रह्म को दुख न होत है, इस विध करत गरूर ।। 5710
प्रभु समझाई जगत को, सत्य सनातन बात ।
जग में ऐसे मुग्ध जन, फिर रहे बहु तात ।। 5711
ऐसे ज्ञानी बहुत हैं, धर्म कर्म से हीन ।
साधन जानें लेश न, बनें सिद्ध प्रवीन ।। 5712
माया वश ही जानिये, कलियुग के ये लोग ।
धन लोभी गुरु जन भयें, हरें न शिष्य का शोक ।। 5713
प्रभु जी कीन सचेत है, सर्व जगत को मीत ।
मायावी गुरु छोड़ कर, करो योग से प्रीत ।। 5714
एक देह को त्याग कर, दूजा कर निर्माण ।
गुरु चरणों में पहुँचे, दिव यह कर्म महान ।। 5715
सुमेरु पर जो साध थे, उन को दीना ज्ञान ।
सब पै कृपा करत हैं, रामलाल भगवान ।। 5716
जग को भी वे दे गये, योग भक्ति का दान ।
स्थिर रहे सदा जगत में, भारत का विज्ञान ।। 5717
माया के प्रभाव से, भ्रष्ट होता है योग ।
माया ठगनी जानिये, ठग लेती बहु लोग ।। 5718
माया से सतर्क रह, सिमरो तुम भगवान ।
दृढ़ अभ्यासी बन रहो, शिथिल भये न ध्यान ।। 5719

सभी भक्त जन योग को, करें लगा कर चित्त ।
सीख मेरी यह सबन को, सिमरो प्रभु को नित्त ।। 5720
अजर अमर यह आत्मा, अविकारी भी मान ।
शोक करे फिर जन यदि, उस का काचा ज्ञान ।। 5721
ज्ञान जगत को उन दिया, प्रभु का यह उपकार ।
देह बदल वे चल गये, देह दूसरा धार ।। 5722
सुमेरु पर्वत आय कर, नित्य करें वे संग ।
ऋषियन का जो थे वहां, चले योग प्रसंग ।। 5723
गूढ़ विषय जो योग के, स्पष्ट बताये राम ।
राम की वार्ता श्रवण कर, भये सब पूर्ण काम ।। 5724
कहा प्रभु उस काल तब, किमि हो देह निर्माण ।
उसी सिद्धि के कारणे, कीन देह निर्माण ।। 5725
दूजा देह था प्रभु रचा, सिद्धि के आधार ।
प्रसन्न भये थे सब ऋषि, देख राम की कार ।। 5726
प्रभु ने अपने भाव जो, प्रकट किये उस देश ।
नाथ अनुग्रह जानिये, जग हित वह उपदेश ।। 5727
कैवल्य हेत जो योग हो, वही योग प्रवाण ।
भ्रष्ट भये वह साध जन, जिसको न यह ज्ञान ।। 5728
पूर्व के जो कर्म हों, क्षय वे सब हो जायें ।
योगी जन के कर्म तो, फल न लेश उपजायें ।। 5729
[1] अनादि काल से आ रही, जीव संग यह वास ।
फिर भी इस का अन्त हो, मेरा यह विश्वास ।। 5730

[1] वास : वासना अर्थात इच्छायें या संस्कार

हेतु अदि जो हैं कथे, वासना के आधार ।
योग साधन कर के नशे, मिले कैवल्य द्वार ।। 5731
शुभाशुभ जो कर्म होय, धर्माधर्म के हेत ।
धर्माधर्म से जान लो, सुख दुख ही जन लेत ।। 5732
सुख दुःख से फिर होत है, राग द्वेष मम मीत ।
राग द्वेष से आ बसे, धर्माधर्म जन चीत ।। 5733
धर्ममेघा समाधि में, सत्य का पूर्ण ज्ञान ।
संस्कारों का दहन हो, सब विध हो निर्वाण ।। 5734
पांच क्लेश जो हैं कथे, शुक्ल कृष्ण वा कर्म ।
ये सब तब निवृत्त हो, योगी जाने मर्म ।। 5735
अनन्त ज्ञान के कारणे, मल विक्षेप आवरण ।
लुप्त योगी के चित्त से, विलक्षण तब आचरण ।। 5736
पर वैराग्य में स्थित हो, योगी का तब चित्त ।
कृत कृत्य सभी गुण भयें, समाप्त भया सब वृत्त ।। 5737
बिन कृपा गुरु देव की, मुक्ति से जन दूर ।
मुक्ति लागे हाथ उस, गुरु पग पूजे धूर ।। 5738
यह ज्ञान जो प्रभु दिया, परम अनुग्रह जान ।
ज्ञान संग निज भक्ति भी, कीन प्रभु प्रदान ।। 5739
प्रभु के दर्शन पाय कर, और स्पर्श कर चरण ।
भक्त सभी थे जानते, हम तो प्रभु की शरण ।। 5740
ऐसे भक्त अनेक थे, चित्त बसे जिन हर्ष ।
एक समय में थल कई, देते प्रभु थे दर्श ।। 5741

ऐसे भी कुछ भक्त थे, सदा रहें प्रभु संग ।
क्षण एक न बिछुड़ते, बन के प्रभु के अंग ।। 5742
भक्त प्रभु के चित्त में, प्रभु भक्तन के चित्त ।
ऐसा योग अनुपम, प्रचारा जगत निमित्त ।। 5743
प्रभु थे बसते हिम गिरि, भक्त बसे घर माहिं ।
फिर भी प्रभु के दर्श हों, भक्तन को सब थाहिं ।। 5744
माया मोह को त्याग कर, धार प्रभु को इष्ट ।
भक्ति जिन के चित्त बसत, प्रभु जी हरें अनिष्ट ।। 5745
खास कृपा जो प्रभु करी, भक्तन ऊपर नाथ ।
मुलख राज के रूप में, थे सबन के साथ ।। 5746
भक्त शिरोमणि मुलख जी, योग युक्त दिन रात ।
सिमरत प्रभु को एक चित्त, बसत प्रभु उस गात ।। 5747
रामलाल प्रभु साथ रह, करते कारज नित ।
विरह खेद फिर भी बसे, सदा मुलख के चित्त ।। 5748
प्रभु की मूर्ति थाप कर, करें प्रभु की सेव ।
भक्त करें मिल आरती, प्रभु देवन के देव ।। 5749
सब भक्तन के मन बसी, मूर्ति प्रभु की दिव ।
प्रभु की पादुक भी रमी, मंगल कारी शिव ।। 5750
उस अलौकिक ठौर पर, जहां प्रतिष्ठित मूर्त ।
भक्त बैठें जब आय कर, चढ़े ध्यान में सुर्त ।। 5751
जो जन चल कर आ गए, मुलख राज की शरण ।
मुलख राज उनको कहें, प्रभु सब पीड़ा हरण ।। 5752

प्रभु दिखाते मुलख को, तेरा तन न तेरा ।
तेरे तन में मैं बसूँ, तेरा तन यह मेरा ।। 5753
प्रभु की आरती करत सब, प्रभु से बढ़त प्रीत ।
मुलख राज की भक्ति वश, भक्ति बढ़े यह रीत ।। 5754
मुलख राज गुरु देव थे, राम लाल जी इष्ट ।
योग भक्ति व ज्ञान थे, घर–2 भये प्रविष्ट ।। 5755
योग भक्ति से मन रंगे, रूप प्रभु का देख ।
मस्त भये नर नार बहु, बढ़ी प्रेम की रेख ।। 5756
प्रभु के आश्रित मुलख था, करत प्रभु का काज ।
प्रभु के आश्रित जो बसे, सफल उसी का साज ।। 5757
नर नारायण रूप ही, मुलख और प्रभु राम ।
योग उद्धारण हेत उन, रचना कीन तमाम ।। 5758
नर रूप श्री मुलख जी, करें आश्रम की कार ।
नारायण श्री राम जी, सब की करें संभार ।। 5759
तिमिर जगत का दूर हो, ज्ञान का हो प्रकाश ।
शुभ कर्मन का राज हो, अशुभ का हो विनाश ।। 5760
सब जन जीवन जगत में, ऐसा करें व्यतीत ।
मन वचन और कर्म से, जैसी वेद की रीत ।। 5761
प्रभु की सेवा में रहें, करें प्रभु का काम ।
धर्म स्थापन हेतु ही, प्रकटे जग में राम ।। 5762
देव कारज के हेतु ही, प्रकटे जग में राम ।
सभी राम के दास हम, नाथ हमारे राम ।। 5763

दुख निवारण कारण, वे प्रकटे जग आन ।
गुप्त रहें सब काल ही, उन की महिम महान ।। 5764
इमी मुलख उपदेशते, प्रभु का पा आदेश ।
अनुग्रह प्रभु की जानो, जग पै यह विशेष ।। 5765
दया धर्म का मूल जो, और सत्य आचार ।
इन दोनों का नाश है, कलियुग में इस काल ।। 5766
दूध जिमि है बिगड़ता, ऐसे बिगड़े बुद्ध ।
देर न लागत लेश भी, दीखे विरला शुद्ध ।। 5767
सत्य धर्म के लोप को, देख प्रभु कलि काल ।
अनन्त कला वे धार कर, प्रकटे दीन दयाल ।। 5768
रामलाल का नाम धर, प्रकट भये भगवान ।
योग योगेश्वर कृष्ण ही, योग प्रचारें आन ।। 5769
गण्डाराम के सुत प्रभु, योगेश्वर करतार ।
बाह्मण वंश में नाथ ने, लीना कलि अवतार ।। 5770
बह्म तेज धर वे प्रभु, करें जगत उद्धार ।
योग दण्ड को धार कर, करें धर्म विस्तार ।। 5771
प्रभु की भक्ति जन करे, सदा मिले फल ताहिं ।
धर्म अर्थ वा काम को, भक्त मोक्ष भी पाहिं ।। 5772
प्रभु की भक्ति जो करे, और रहे निर्लिप्त ।
जीवन मुक्त वह जानिये, बसे जगत में तृप्त ।। 5773
योगी का घट नाव सम, माया नीर स्वरूप ।
बाहर का दृश्य और है, भीतर और ही रूप ।। 5774

हर दम प्रभु को स्मरण कर, हर दम प्रभु को ध्याय ।
हर दम प्रभु उस भक्त के, रहते संग सहाय ।। 5775
मुलरवा राज उपदेशते, भक्तन को सब काल ।
अमृत प्रभु के प्रेम का, बरसाते हर हाल ।। 5776
अष्ट अंग जो योग के, राखो सदा समक्ष ।
करत करत अभ्यास ते, योग में हो जन दक्ष ।। 5777
प्रातः काल जन जाग कर, शौच कर्म कर पाय ।
तन मन को वह शुद्ध कर, ईश्वर को ले ध्याय ।। 5778
योग धर्म प्रभु राम ने, दीना जग को आन ।
पालन उसका जो करे, धर्मी नर वह जान ।। 5779
ऋषियन का यह ज्ञान है, चिर पुरातन मीत ।
भूल चुके हैं भारती, गहें विदेशी रीत ।। 5780
योग बिना जीवन विफल, विफल प्राण बिन देह ।
विफल धर्म बिन कर्म ही, सकल विफल बिन नेह ।। 5781
कण कण में प्रभु व्यापते, ऐसा जन लखा पाय ।
भक्त जनों के नाथ जी, हृदय में बस जाय ।। 5782
प्रभु की पूजा प्रेम से, करता जो नर नार ।
मनोरथ उस का पूर्ण हो, प्रभु की दया अपार ।। 5783
निराकार में चित्त को, करे लीन सब काल ।
उस योगी को जानिये, ज्ञान मिले तत्काल ।। 5784
पारब्रह्म की प्राप्ति, योग बिना न होय ।
योगी अपने ध्यान से, प्राप्त करे ब्रह्म सोय ।। 5785

शुद्ध मती जो जन भये, जगत प्रति निष्काम ।
मुमुक्षु उस को जानिये, शान्ति का शुद्ध धाम ।। 5786
उत्तमांग में ध्यान कर, अमर होय बिन खेद ।
अमर गति उस को मिले, पा कर गुरु से भेद ।। 5787
उत्तर मार्ग को गहे, दिन सम जहाँ प्रकाश ।
अनहद का संगीत भी, गूंजे उस आकाश ।। 5788
योगी जन की सेव से, पार लगे नर नार ।
सेवक योगी राज का, कुल का तारण हार ।। 5789
इस में न सन्देह कुछ, योगी सुख का सार ।
योगी के घट देव सब, योगी ज्ञान भण्डार ।। 5790
योग करो बिन खेद तुम, शिक्षा मेरी मान ।
सनक सनंदन आदि जो, करें योग यह जान ।। 5791
जग में ऋषि मुनि जो भयें, और भयें अवतार ।
होगा उन को योग का, केवल एक आधार ।। 5792
मेरा निश्चित ज्ञान यह, और यही विश्वास ।
योग बिना न मुक्ति हो, योग है विद्या खास ।। 5793
उन्मनी की वह दशा, दशम द्वार जब चित्त ।
चित्त आकर्षित हो नहीं, किसी भी और निमित्त ।। 5794
जन्म जन्म के बन्ध सब, शिथिल भयें अविलंब ।
योग युक्त जो जन रहे, गुरु का ले अवलंब ।। 5795
चंचल चित्त हो वश तब, गुरु करावें योग ।
गुरु शरणी जो जन रमे, त्याग तमोगुणी भोग ।। 5796

सीख गुरु से लेय कर, करें निरन्तर योग ।
मन वश हो उस साध का, कहते इमि सब लोग ।। 5797
गुरु की संगत बिन गहे, बली न मन हो शान्त ।
गुरु मन्त्र को धार कर, शान्त भये मन भ्रान्त ।। 5798
दण्ड तीन को धार कर, योगी बने पुमान ।
दोष निवारे दण्ड से, दण्डी होय सुजान ।। 5799
कर्म दण्ड वा वागदण्ड, योगी के ये दण्ड ।
कर्म वाक को वश करे, तीजा व मनोदण्ड ।। 5800
दण्ड तीन को धार कर, निरञ्जन का पा ज्ञान ।
ब्रह्म रूप हो वीचरे, संयमी वीर पुमान ।। 5801
ईश्वर भक्ति से मिले, मुक्ति सहज स्वभाव ।
करे कर्म जन धर्म युत, उच्च रहे मन भाव ।। 5802
सद्गुरु से जन ज्ञान ले, जिमि दीप से ज्योत ।
लीन होय फिर ज्ञान में, अन्तकरण उद्योत ।। 5803
लय योग की साधना, करे जीव को मुक्त ।
लय होय जन ज्ञान में, मिलें जो सद्गुरु युक्त ।। 5804
सत्य अहिंसा नेम जो, कथन करें सद्ग्रन्थ ।
राम लाल भगवान ने, वही दिखाया पंथ ।। 5805
कुल अकुलीन के हैं प्रभु, पंगुल के कर पांव ।
अंधे की वे ज्योति हैं, संग बसें सब ठांव ।। 5806
भूखों के मां बाप हैं, निराधार आधार ।
भव जल के प्रभु सेतु हैं, सब विधि सुख के सार ।। 5807

पतित हो पावन सब विधि, प्रभु का कर गुण गान ।
पत रावी जिस मुलख की, चरणों का दे दान ।। 5808
अपने हित के वासते, करो प्रभु से प्रेम ।
योग भक्ति का धार लो, दृढ़ जीवन में नेम ।। 5809
गुरु कृपा से जब भये, मन में ईश्वर प्यार ।
बिंबित तब मन में भये, निरंजन का दीदार ।। 5810
निर्मल बुद्धि होय जन, निर्मल मन का कोष ।
सद्गुरु फिर जो सीख दें, रहे शुद्ध निर्दोष ।। 5811
जगत भयंकर जानिये, भटके जीव अनाथ ।
रक्षक प्रभु पहचानिये, पग पग रहते साथ ।। 5812
दोषनिधि भी जन भये, गुरु लें यदि सम्भाल ।
दुर्गति से वह जन बचे, छुये न उस को काल ।। 5813
प्रभु सम्मुख जो दीन हो, भूले निज अभिमान ।
प्रिय प्रभु का होत वह, सब से पाता मान ।। 5814
प्रभु की शक्ति ध्याय कर, करे जो प्रभु से प्यार ।
प्रभु में ही तब मन बसे, होय न जीव खवार ।। 5815
पापी दुर्जन जन भये, पाप हो जिस का काम ।
उस को भी लें शरण में, ऐसे हैं प्रभु राम ।। 5816
पाप निवारें भक्त के, लगे न उस का दाम ।
शरण पड़े की पत गहे, ऐसे प्रभु हैं राम ।। 5817
दुखी जीव जो जगत में, विधना जिस के वाम ।
करें सुखी उस जीव को, ऐसे प्रभु हैं राम ।। 5818

जन्म जन्म का जो दुखी, यदि आये प्रभु धाम ।
कष्ट कटें उस जीव के, ऐसे प्रभु हैं राम ।। 5819
रे मन निशि दिन जपत रह, राम प्रभु का नाम ।
उन सम को तो है नहीं, जैसे प्रभु हैं राम ।। 5820
प्रभु अनुग्रह से दिया, मुलख राज यह ज्ञान ।
सब शास्त्रों का सार है, ले जगत यह जान ।। 5821
प्रभु अनुग्रह जगत पर, 'सेवक' पर विशेष ।
मुलख की शरणी भेज कर, कृपा कीन निःशेष ।। 5822
लवपुर में था मुलख ने, अपनाया यह दास ।
ज्ञान दिया था योग का, प्रभु चरणि विश्वास ।। 5823
गुरु कृपा को पाय कर, 'सेवक' भया कृतार्थ ।
योग मार्ग में लग गया, कर्म करे निःस्वार्थ ।। 5824
बहु नगरों में जाय कर, कीन योग प्रचार ।
नाथ अनुग्रह साथ था, वही करत सब कार ।। 5825
मुलख राज के रूप में, जो – 2 कीने कार ।
उनका वर्णन अब करें, प्रभु को मन में धार ।। 5826
प्रभु को मन धार कर, मुलख कीन बहु कार ।
जान अनुग्रह नाथ का, सर्वत्र योग विस्तार ।। 5827
प्रभु मुलख को ले गये, मद्रास नगरि मीत ।
वहां अनुग्रह जो किया, है वह कथनातीत ।। 5828
जो अनुग्रह प्रभु किया, आ जगत में आप ।
ऐसा न किसी ने किया, कहूं शपथ के साथ ।। 5829

उस नगर में आपका, भया स्वागत महान ।
प्रभु अनुग्रह से भया, यह सकल लो जान ।। 5830
मुलख राज ने जब दिया, जनता को उपदेश ।
ध्यान मग्न जन बहु भये, प्रभु की दया विशेष ।। 5831
जन्मान्ध एक नाथ की, महिमा सुन विशेष ।
चरणी आया नाथ की, ज्योति मिली निःशेष ।। 5832
नाथ अनुग्रह पाय कर, धन्य भया जन्मान्ध ।
धन्य–धन्य सब जन कहें, नयन मिले जन्मान्ध ।। 5833
सुन कर प्रभु की कीर्ति, दुखी जनों की भीड़ ।
आयकर आशिष पाती, होत दूर थी पीड़ ।। 5834
इक लंगड़े ने आय कर, टेका था जब माथ ।
मुलखराज ने पुष्प इक, दीना था निज हाथ ।। 5835
नाथ अनुग्रह से भया, उसका लंगड़ दूर ।
'जय जय' करता वह गया, भयी कामना पूर ।। 5836
जो अनुग्रह है किया, आ जगत में नाथ ।
ऐसा न किसी ने किया, कहूँ शपथ के साथ ।। 5837
राजा रंक व सबन को, कीना नाथ निहाल ।
जो भी आया शरण में, वृद्ध युवा व बाल ।। 5838
बोबली का नरेश जब, आया पत्नी साथ ।
अपना लिया उस को प्रभु, अनुचरों के साथ ।। 5839
दुःख दूर उस का किया, सुत का देकर दान ।
जान लिया सब जनन ने, हमें मिले भगवान ।। 5840

नाथ अनुग्रह से भया, मुलख राज का मान ।
योगेश्वर के रूप में, जानत उन्हें जहान ।। 5841
उनके दिव उपदेश को, सुनते कान लगाय ।
सब के मन में था बसत, ईश्वर हैं उतराय ।। 5842
मुलख कहत हे भक्त जन, रामलाल भगवान ।
कोटि कलायें लेय कर, उतरे जग में जान ।। 5843
उनके दिव उपदेश हैं, सब शास्त्रन का सार ।
उस पर चल कर भक्तजन, अपना करें उद्धार ।। 5844
आत्म संयम जो करे, आत्म में होय लीन ।
ऐसा योगी जगत में, करत चौरासी क्षीण ।। 5845
सद्गुरु सेवा योगिजन, करत श्रद्धा साथ ।
सद्गुरु कृपा के बिना, योग न लागे हाथ ।। 5846
शिष जो आवे लोह सम, पारस सद्गुरु होय ।
कञ्चन सम उसको करे, कलुष संपूर्ण धोय ।। 5847
जानो शिष्य ऐसा भला, जैसे माटी मोय ।
आपा सौंपि कुम्हार को, जो कुछ होय सो होय ।। 5848
सम दृष्टि गुरु जानिये, करत जगत उपकार ।
करुणा उसके मन बसे, सब सम सद्व्यवहार ।। 5849
गुरु मिले रंगरेज सम, रंगें प्रेम के रंग ।
सुन्दर पट जो श्वेत हो, चढ़े अनोखा रंग ।। 5850
प्रभु अनुकंपा जानिये, जग को दे उपदेश ।
ज्ञान मिले जिमि जगत को, भ्रांत रहे न लेश ।। 5851

[1] नाथ अनुग्रह की कथा, कीनी मुलख बखान ।
भक्त अचंभित थे भये, सुन वह घटन महान ।। 5852
पाकिस्तान जब बन रहा, मुस्लिम करें फसाद ।
हर स्वरूप के घर को, चाहें करन बरबाद ।। 5853
चांद पुरी के नगर में, हर स्वरूप के वास ।
मुस्लिम चढ़ कर आ गये, लूटन हेत आवास ।। 5854
काफिर का जिमि घर लुटे, और बचे न कोय ।
मुस्लिम चढ़ कर आ गये, क्षण में क्या कुछ होय ।। 5855
भक्त पुकारें नाथ को, नाथ आये तत्काल ।
विकट रूप उन धार कर, प्रकटे जिमि हो काल ।। 5856
तोबा–तोबा करने लगे, देख प्रभु का रूप ।
भाग गये सब दुष्ट जन, सुरक्षित हरस्वरूप ।। 5857
नाथ अनुग्रह की कथा, है विख्यात जहान ।
स्मरण करे जो भक्तजन, लागे चरणि ध्यान ।। 5858
[2] इक घटना का और भी, दिया नाथ प्रमाण ।
भक्त चण्डी प्रसाद के, प्रभु बचाये प्राण ।। 5859
खड़ा चण्डी प्रसाद था, इक चिता के पास ।
लपट आई थी आग की, घिर गया था दास ।। 5860
जिस ने उस को घेर कर, वस्त्र दीन जलाय ।
प्रभु–प्रभु ही कहने लगा, अग्नि से घबराय ।। 5861

---

1. श्री योग महादिव्य रामायण दोहा 2103 से आगे
2. श्री योग महादिव्य रामायण दोहा 2111 से आगे

काल उसी प्रभु प्रकट हो, थी बुझाई आग ।
प्रभु का झुलसा देह खुद, लगा न भक्त को दाग ।। 5862
प्रभु अनुग्रह देख कर, जनता भयी हैरान ।
'धन्य-धन्य' करने लगी, प्रभु बचाये प्राण ।। 5863
प्रभु अनुग्रह की बात इक, जिसका सबको ज्ञान ।
बसन्ती देवी भक्त थी, सैनिक पुत्र महान ।। 5864
ज्वर से वह पीड़ित भया, कीना बहु उपचार ।
आंगन में जब वह गई, पुष्प लेन उपहार ।। 5865
लिखा पत्तों पर उस पढ़ा, स्वस्थ भये तव पूत ।
उस का दुख प्रभु हर लिया, भया स्वस्थ था पूत ।। 5866
बसन्ती का दुख हर लिया, कीना पूत निरोग ।
जिन के सर पर राम जी, सुखी भये वे लोग ।। 5867
प्रभु अनुग्रह जगत पर, है अलौकिक मीत ।
बिन औषध ही रोग सब, के इलाज की रीत ।। 5868
रोग अनेकों शीश के, जिन से जग परेशान ।
'नेति' ही सिखलाय कर, कीन जगत कल्याण ।। 5869
बहु श्वास के रोग हैं, जिन का न उपचार ।
धौति क्रिया बताय कर, कीन जगत उद्धार ।। 5870
रोग उदर के जान लो, दुखदायी बहु मीत ।
आसन सुगम ही सीखकर, जन स्वस्थ सब रीत ।। 5871
मन्द दृष्टि का रोग भी, 'नेति' से हो दूर ।
नेत्र ज्योति प्रकाशिनी, है नेति मशहूर ।। 5872

यह सब दीना ज्ञान है, प्रभु ने जग को मीत ।
नाथ अनुग्रह हैं करत, जग पै अनेकों रीत ।। 5873
अनुग्रह 'सेवक' पै किया, सदा रखोगा याद ।
रोगों से मुक्ति मिली, मन में बसत आह्लाद ।। 5874
कण्ठन के तो रोग का, है सरल उपचार ।
धौति क्रिया का नाथ ने, कीन बहुत प्रचार ।। 5875
दमा दम के साथ होय, कहते हैं बहु लोग ।
योग साधन से नाथ ने, कीने लोग निरोग ।। 5876
यह अनुग्रह नाथ का, है अल्प नहीं मीत ।
जिन्हें शफा है मिल गई, उन की प्रभु से प्रीत ।। 5877
तन भीतर बहु अंग हैं, जिगर आदि लो जान ।
जिमि स्वस्थ वे सब रहें, प्रभु जी कीन पहचान ।। 5878
साधन प्रभुजी बहु दिये, यह अनुग्रह मीत ।
रोग शोक से बचन की, प्रभु सिखलाई रीत ।। 5879
ज्वर पीडित बहु जन रहें, अनेंको ज्वर के रूप ।
शंख प्रक्षालन प्रभु दिया, साधनों में जो भूप ।। 5880
होय ज्वर, या पेट में, कीड़ों की भरमार ।
वारिसार जब जन करे, रोग से हो निस्तार ।। 5881
उदर वृद्धि और कब्ज के, रोग व्यापक जान ।
जीवन तत्व के साधन, साधन करें सुजान ।। 5882
साधन जीवन तत्व के, लाये प्रभुजी आप ।
बहु जनन का है मिटा, इन से रोग संताप ।। 5883

मधुमेह प्रमेह हित, प्रभु करावें योग ।
किरया वारिसार से, स्वस्थ भये बहु लोग ।। 5884
मिरगी वा अपस्मार का, भी कथा उपचार ।
कीन अनुग्रह नाथ ने, उन पै जो लाचार ।। 5885
दैहिक साधन जन करे, मिरगी से जो ग्रस्त ।
घृत नेति जो साध ले, रोग राहु हो अस्त ।। 5886
मन में छिपे अनेक जो, जन्म-जन्म के कर्म ।
सद्गुरु योगी के बिना, कोई न जाने मर्म ।। 5887
प्रभु का नाम जहाज है, जो जपे दिन रात ।
रोग समुद्र पार कर, स्वस्थ करे निज गात ।। 5888
इस विध मिरगी रोग में, सावधान रह साध ।
करे निरंतर साधना, रोग करे न बाध ।। 5889
नाभि का होय टलना, 'धरण' जिसका नाम ।
अथवा दस्त जन को लगें, 'सर्वांग' देत आराम ।। 5890
अनुग्रह यह है नाथ का, सरल रीति से रोग ।
का निवारण हो सकत, प्रभु का अद्भुत योग ।। 5891
कृषता देह की हो यदि, अथवा तन हो स्थूल ।
दोनों का उपचार है, शिष्य जायें न भूल ।। 5892
चित्त प्रभु में लाय कर, करत साधन जब साध ।
प्रभु अनुग्रह हैं करत, उनकी दया अगाध ।। 5893
प्रभु कृपा से स्वस्थ हो, साधक का तन मीत ।
प्रभु अनुग्रह करत हैं, रहे सदा ही चीत ।। 5894

हृदय का यदि रोग हो, डाक्टर देंय जवाब ।
प्रभु बतलाई साधना, जो है ला–जवाब ।। 5895
पक्षाघात भी रोग है, जन हो पूर्ण निढ़ाल ।
हाथ पैर न हिल सकत, लेत योग संभाल ।। 5896
उस हालत में क्या करें, देह का जन उपचार ।
ऐसे साधन प्रभु कहे, रोग में आवें कार ।। 5897
जोड़ो में यदि दर्द हो, हर दम रहे बेहाल ।
प्रभु ने साधन हैं कहे, जिससे सुधरे हाल ।। 5898
ऐसे–ऐसे रोग जो, जिन का नहीं इलाज ।
बिना खर्च ही करत है, उनका योग इलाज ।। 5899
यह अनुग्रह नाथ का, हैं लाये जो योग ।
सुमेरु पर्वत जाय कर, रहते न जहां लोग ।। 5900
रक्त चाप इक रोग है, जिसका बहु विस्तार ।
प्रभु बतलाया योग वह, जिससे हो निस्तार ।। 5901
पीलिया से पीड़ित बहु, बाल वृद्ध नवजात ।
जो साधन हैं प्रभु कहे, शफ़ा उनसे मिल जात ।। 5902
जग पहचाने नाथ का, अनुग्रह जग पै मीत ।
उन की कृपा जान कर, करें प्रभु से प्रीत ।। 5903
सर्व साधारण को ग्रसे, आ खांसी का रोग ।
सरल उपाय प्रभु दिया, 'वमन' करें सब लोग ।। 5904
पेट दर्द किसी को भये, यदि करे सर्वांग ।
झट से होय हवा दर्द, हों स्वस्थ सब अंग ।। 5905

इस विध रोग अनेक का, योग से हो उपचार ।
जगती पर हम समझ लें, प्रभु का महा उपकार ।। 5906
जीवन का आदर्श भी, प्रभु ने दीन बताय ।
योग के अनुकूल ही, जन गण काल बिताय ।। 5907
भोग तजें हम योग हित, रहे स्वस्थ शरीर ।
ऐसा जीवन चाहिए , ग्रसे न भव की पीर ।। 5908
शांत रहें हम चित्त में, सुख से बहें प्राण ।
देह हमारा स्वस्थ हो, प्रथम बात लो जान ।। 5909
शुभ कर्म हम नित करें, राखें शुद्ध विचार ।
इस विध हमरा हो सकत, जीवन सुख का सार ।। 5910
साधन को जो नित करे, वह योगी तू जान ।
ऐसा योगी क्या भये, साधन से अनजान ।। 5911
षट् कर्म की साधना, जो शुद्धि की मूल ।
प्राणों की भी साधना, वही योगानुकूल ।। 5912
जो अनुग्रह प्रभु किया, देश बटवारे बीच ।
उपमा उसकी विश्व के, नहीं मिलेगी बीच ।। 5913
मुलखराज को डाल कर, बिस्तर में उस काल ।
बचा लिया निज जनन को, जिन ऊपर महाकाल ।। 5914
असंख्य जनों का घात तो, था हुआ उस काल ।
प्रभु भक्तन का ना सुना, हुआ हो बांका बाल ।। 5915
किया जगत पै अनुग्रह, उसका करूँ बखान ।
होश्यारपुर में आश्रम, का लीन इस्थान ।। 5916

निर्मित माडल टौन में, संख्या तीन मकान ।
दर्शन दीने आय कर, रहें हम इसी स्थान ।। 5917
[1]बीसशत और नौ तब, संवत विक्रमी जान ।
मुलखराज ने आय कर, आश्रम कीन निर्माण ।। 5918
प्रभु अनुग्रह स्थिर रहा, सदा यहां पै मीत ।
ध्यान भजन व योग की, चलत निरंतर रीत ।। 5919
असंख्य जनों ने आयकर, ग्राह्या योग ज्ञान ।
भाग्यवान वे जन सभी, लीना प्रभु जिन जान ।। 5920
ध्यान समाधिन का यहां, बहन लगा प्रवाह ।
अचरज सब को होत है, मिलत न इसकी थाह ।। 5921
रीति अनुग्रह की यही, स्थिर करावें ध्यान ।
समाधिन में बिठलाय कर, देते जन को ज्ञान ।। 5922
सबन समक्ष दृष्टांत है, मुलखराज का मीत ।
दश वर्ष की समाधि से, भया प्रकाशित चीत ।। 5923
पाठशाला में न पढ़े, ज्ञान मिला था पूर्ण ।
समाधि में ही बैठकर, पाया ज्ञान संपूर्ण ।। 5924
[2]आंख बंद वे देखते, आंख बंद सब कार ।
आंख बंद ही चलत थे, आंख बंद व्योपार ।। 5925
वे औकाड़ा थे गये, धन को लेकर साथ ।
बंद आंख ही खरीदी, मक्की छू निज हाथ ।। 5926

---

1. विक्रमी संवत – 2009, ई० सन् – 1952
2. दोहा – 2296 से आगे

यह अनुग्रह राम का, और किसी का नांहि ।
ऐसा प्रसंग न मिलत है, कहीं जगत के मांहि ।। 5927
प्रभु अनुकम्पा करत थे, स्वामी जी के रूप ।
भक्तन को उपदेशते, सिमरो प्रभु का रूप ।। 5928
प्रभु की दया स्मरण कर, लागे जभी ध्यान ।
चंचलता तब चित्त की, न कर सके परेशान ।। 5929
लागत बात अजीब है, भूले प्रभु को जीव ।
इस का इक उपचार है, सिमर दया हे जीव ।। 5930
जन करत जो योग है, उठ के प्रातः काल ।
प्रभु सेवक वह ही बने, सुखी रहे त्रिकाल ।। 5931
योग करे जो नित्य ही, सुखी रहे वह साध ।
प्रभु किरपा उस पर करें, दूर भये सब बाध ।। 5932
समत्व योग उपदेशते, निज भक्तन को दयाल ।
जगत सकल है ईश का, रहें सभी खुशहाल ।। 5933
तीन गुणों की सृष्टि यह, रच पायी करतार ।
एक रूप न सब रची, ले जन मन में धार ।। 5934
ऐसा मन में धार कर, त्यागे राग द्वेष ।
सृष्टि को जन देखकर, स्मरण करे सर्वेश ।। 5935
सम दृष्टि जन जानिये, योगी परम विशेष ।
सब का करता मान वह, द्वेष त्याग अशेष ।। 5936
प्रभु अनुग्रह से मिलत, ये सुन्दर उपदेश ।
मुलख राज बतलात थे, जिन के प्रभु हृदयेश ।। 5937

मिलत सबन को सीख थी, किमि बैठें ला ध्यान ।
किस आसन में बैठकर, सुख से करें ध्यान ।। 5938
घंटा भर जो नित करें, सिद्धासन हो सिद्ध ।
चित्त एकाग्र हेत यह, आसन बहु प्रसिद्ध ।। 5939
पद्मासन में बैठ कर, करता जो अभ्यास ।
सिद्धी पाता योग में, रह कर गुरु के पास ।। 5940
सिंहासन जो करत है, और रहत निर्भय ।
रोग शोक से मुक्त हो, पाप होंय सब क्षय ।। 5941
योगासन में बैठ कर, करे प्रभु का ध्यान ।
चित्त भक्ति में लीन हो, तभी मिलें भगवान ।। 5942
मुलखराज के रूप में, शिक्षा देते राम ।
अनुग्रह जानो राम का, ईश्वर जो अभिराम ।। 5943
सकल खेद को त्याग कर, जिस आराधा राम ।
वह ही प्राणी जगत में, भया है पूर्ण काम ।। 5944
भया है पूर्ण काम वह, ईश कृपा से मीत ।
विघ्न अनेकों जगत में, किसे न उन से भीत ।। 5945
विघ्नों से भय भीत जन, कभी न पावे चैन ।
प्रभु कृपा बिन जीव यहां, रहें दुखी दिन रैन ।। 5946
इस कारण तुम सज्जनों, करो प्रभु से प्यार ।
प्रभु भक्ति ही योग है, स्मरण रहे सब काल ।। 5947
यत्न अनेकों जन करे, भक्ति से रह दूर ।
निष्फलता उस के लगे, हाथों जान जरूर ।। 5948

अमृत का शुद्ध भोग भी, विष सम उस को होय ।
प्रभु भक्ति को छोड़ कर, जो जन जीवन खोय ।। 5949
मम शिक्षा को मान कर, अनन्य भाव से मीत ।
प्रभु चरणों को सिमर लो, दृढ़तम राखिये प्रीत ।। 5950
मेरा बस उपदेश यह, भजो राम ही राम ।
शुद्ध भाव से ग्रहण कर, राम लाल का नाम ।। 5951
चित्त भक्त का शुद्ध हो, रहे न अन्तर पाप ।
शरणागत का हो भला, यत्न करें प्रभु आप ।। 5952
भाग्य लिखा जो शूल हो, लुप्त भये इस रीत ।
ध्यान प्रभु का नित्य करो, शिक्षा मेरी मीत ।। 5953
प्रभु कृपा को पाय कर, रहे न जन में दोष ।
क्रोध काम सब दूर हों, नाशे मन का रोष ।। 5954
नाथ अनुग्रह से मिला, भक्तन को उपदेश ।
योग भक्ति से ही कटें, हमरे कर्म निःशेष ।। 5955
[1]एक अनुग्रह नाथ ने, कीना भक्तन ताहिं ।
नाम योगियों के कथे, थे जो भारत माहिं ।। 5956
द्वापर में मत्स्येन्द्र थे, कलि में गोरख नाथ ।
दोनों शिव के रूप थे, कीना विश्व सनाथं ।। 5957
चौरंगिया आदि योगी, वर्णन कीने नाथ ।
जिन योगिन के कारणे, भारत भया सनाथ ।। 5958

1. श्री योग महादिव्य रामायण दोहा 2362 से आगे

भुला दिया था योग को, योगिन को भी साथ ।
जब था शासन देश का, विदेशिन के हाथ ।। 5959
प्रभु आये अवतार ले, पुनः उजागर कीन ।
योग अपने देश का, व योग जिन था दीन ।। 5960
यह अनुग्रह नाथ का, सदा रहेगा याद ।
योग प्रचारित जो किया, था सदियों के बाद ।। 5961
पुरातन योगिन को दिया, उन समुचित मान ।
संस्कृति अपने देश की, जिन थी रची महान ।। 5962
[1]अनुग्रह कर वर्णन किया, उन ग्रन्थन का सार ।
उन ग्रन्थन में योग का, मिलता ज्ञान अपार ।। 5963
एक बात जो प्रभु कही, कीना सबन सचेत ।
योग धर्म का ह्रास तो, कभी न था अभिप्रेत ।। 5964
फिर भी ऐसा क्यों भया, प्रभु ने दीन बताय ।
नाथ अनुग्रह जानिये, दीना उन समझाय ।। 5965
सदा रहें सतर्क हम, प्रभु जी का उपदेश ।
ह्रास न होवे योग का, प्रभु जी का आदेश ।। 5966
करत रहें सब योग जन, त्यागें न अभ्यास ।
विस्तृत होगा योग तब, प्रभु जी का विश्वास ।। 5967
घर–2 हो जब योग का, दिवस प्रति अभ्यास ।
विस्तृत होगा योग तब, योग का नहीं ह्रास ।। 5968

1. श्री योग महादिव्य रामायण दोहा 2371 से आगे

योग मार्ग के ह्रास का, कारण बस है एक ।
करत नहीं थे योग को, योगी जो प्रत्येक ।। 5969
प्रभु अनुग्रह जानिये, उन लीना अवतार ।
कर रहे सभी विश्व में, योग का उद्धार ।। 5970
योग से वंचित होय कर, नर का बिगड़त हाल ।
प्रकट होय कर नाथ ने, लीना जगत संभाल ।। 5971
प्रभु बतलाया जगत को, घट में मन है जोय ।
उस में शक्ति अपार है, प्रकट योग से होय ।। 5972
देव व्यापक जगत में, घट में भी है जान ।
प्रति अंग में देव रहें, मन को इन्द्र मान ।। 5973
अंगों में जो शक्ति है, दैवी शक्ति जान ।
शक्ति रसना आदि की, सभी अलौकिक मान ।। 5974
उसी अलौकिक शक्ति का, स्वामी मन पहचान ।
उसी चित्त में देखिये, प्रभु का तेज महान ।। 5975
आत्म को परमात्म से, युक्त करें नर नार ।
योग उसी को जानिये, करता भव से पार ।। 5976
ध्यान प्रभु का जो करे, दिव्य रूप में मीत ।
योग निष्ठ वह जन बने, रहे प्रभु से प्रीत ।। 5977
करे प्रभु से प्रीत वह, मन में दृढ़ विश्वास ।
दिव्य योग वह जानिये, नित्य करो अभ्यास ।। 5978
दिव्य लोक में जाय कर, दिव्य दर्शन में लीन ।
भक्त भये दिव रूप ही, ध्यान योग प्रवीन ।। 5979

ऐसा दिव्य ज्ञान जो, प्रभु दीना जग आय ।
परम अनुग्रह नाथ का, मो से कथा न जाय ।। 5980
अपने अनुभव से कथूं, प्रभु अनुग्रह खास ।
नाथ 'बेज़र' को लाये, मुलखराज के पास ।। 5981
कवि एक विख्यात वह, चक्रधारी था नाम ।
'बेज़र' निज को कहत था, कविता रचना काम ।। 5982
मुलख राज से श्रवण कर, प्रभु लीला मन लाय ।
'दिव्य रामायण' पुस्तक, रच 'बेज़र' था पाय ।। 5983
बाल काण्ड ही लिख सका, गया परलोक सिधार ।
कई वर्ष उपरांत फिर, मुझे मिली यह कार ।। 5984
कविता मैं क्या जानता, था अधूरा ज्ञान ।
दीन निमाने को प्रभु, दीना था यह मान ।। 5985
आप बीती है कथ रहा, प्रभु अनुग्रह दास ।
'दिव्य रामायण' लिख सका, कौन करे विश्वास ।। 5986
यह अनुग्रह नाथ का, मूक करे वाचाल ।
कृपा जिन की से सदा, पंगु सके चल चाल ।। 5987
करें करावें आप ही, सेवक न कुछ चीज़ ।
चीज़ कभी कुछ चीज़ हो, 'सेवक' तो नाचीज़ ।। 5988
दिव्य रामायण ग्रन्थ दे, प्रभु कीना उपकार ।
भूले भटके जगत को, मिला ज्ञान भण्डार ।। 5989
रहस ग्रंथन में छिपा, खोल बताया नाथ ।
जाने बिन रहस को, कपोलिक लागें गाथ ।। 5990

[1] समुद्र मंथन की कथा, है रहसमयी गाथ ।
स्पष्ट प्रभु ने कर दीन, वह संकेतिक गाथ ।। 5991
जिस से भ्रांति दूर होय, और बढ़े विश्वास ।
गूढ़ ज्ञान जन को मिले, संस्कृति का खास ।। 5992
समुद्र मंथन जान लो, देव असुर मिल कीन ।
अमृत पाया रीत इस, देवन ने वह लीन ।। 5993
दैवी वृति देव हैं, असुर आसुरी जान ।
मस्तक क्षीर समुद्र, [2] मेरु पीठ पहचान ।। 5994
बनी सुषुम्ना मंथनी, डोरी बनें श्वास ।
गुरु विष्णु का रूप होय, गुरु शक्ति लक्ष्मी खास ।। 5995
श्वास सुषुम्ना में चले, शिर में माथन होय ।
अमृत टपकत भाल से, जागृत कुण्डली होय ।। 5996
समुद्र मंथन की कथा, देवासुर संग्राम ।
प्रभु समझाते सबन को, बैठ प्रातः शाम ।। 5997
यह अनुग्रह नाथ का, देवें ज्ञान अपार ।
भ्राँत मति के भँवर से, खे कर करते पार ।। 5998
किस मुख से मैं कथ सकूँ, प्रभु की दया अपार ।
काक भुषुण्डी की रचन, प्रकट कीन करतार ।। 5999
विदित भया तब जगत को, राम लाल अवतार ।
प्रकट करें न स्वयं को, शक्ति के भण्डार ।। 6000

1. महा दिव्य रामायण दोहा संख्या 2496 से आगे
2. पीठ में रीढ़ की हड्डी

काक भुषुण्डी जो लिखा, त्रिकाल सत्य वह जान ।
अनन्तकला अवतारी, प्रकटे हैं भगवान ।। 6001
लोप धर्म का देखकर, कीन योग प्रचार ।
यम नियम की दीनि सीख, उस पै चले संसार ।। 6002
अहिंसा सत्य अस्तेय, आ बतलाये राम ।
ब्रह्मचर्य का व्रत संग, अपरिग्रह अभिराम ।। 6003
शौच संतोष और तप, इन का कीन बखान ।
स्वाध्याय को हि मानता, व ईश्वर प्रणिधान ।। 6004
यही धर्म के मूल हैं, और धर्म आधार ।
यही सनातन धर्म है, किया धर्म उद्धार ।। 6005
नाथ अनुग्रह जानिये, बंधन तोड़े सर्व ।
धर्म मार्ग में जो अड़े, भ्रांति के बहु पर्व ।। 6006
सनातन धर्म कथ दिया, जो योग अनुसार ।
मनु ने भी जो था कथा, वेदन को स्वीकार ।। 6007
कृपा कर प्रभु ने कथा, हठ योग का ज्ञान ।
स्वास्थ्य लाभ जिस से भये, और रोग का हान ।। 6008
अनुग्रह 'सेवक' पै भया, दिया योग का ज्ञान ।
दान मंत्र का भी दिया, संग में स्थिर ध्यान ।। 6009
कृपा कर प्रभु ने किया, भक्तन को साचेत ।
माया बीच न रम रहें, है योग अभिप्रेत ।। 6010
विषयों का गुलाम बन, बैठ के नश्वर देह ।
भूल गया निज रूप जन, करता जग से नेह ।। 6011

सुख वह खोजत जगत में, मृग तृष्णा जिमि नीर ।
भूल गया निज रूप को, क्षण –2 बाढ़त पीर ।। 6012
निज रूप को भूल कर, देह से करता प्यार ।
इन्द्रिन सुख के कारणे, करता पाप अपार ।। 6013
अविकारी जो आत्मा, पड़े चौरासी आय ।
चौरासी से मुक्त हो, ऐसा करें उपाय ।। 6014
आत्म रूप को भूल कर, चाहे मुक्ति धाम ।
मूरख उस को जानिये, शास्त्र कथें तमाम ।। 6015
रहती देह में आत्मा, सकल करे वह काम ।
मनुआ उस को भूल कर, भटकत काल तमाम ।। 6016
विद्यावान वह जानिये, जिस को आत्म ज्ञान ।
आत्म द्रष्टा जन भये, कर के योग ध्यान ।। 6017
विघ्न अनेकों हैं रचे, अविद्या ने मम मीत ।
दुस्तर उन में इक कथा, तन से जो है प्रीत ।। 6018
तन से जन की प्रीत जो, उस का कठिन त्याग ।
'अभिनिवेश' उस को कथा, मुनिजनन महाभाग ।। 6019
मृत्यु से जन सभी डरें, मूरख व विद्वान ।
'अभिनिवेश' उस को कहें, विसरे आत्म ज्ञान ।। 6020
प्रभु ने दिव्य ज्ञान यह, दीना जग में आय ।
अनुग्रह उन के मन बसत, योग में जन चल पाय ।। 6021
खास बात इक और भी, कर कृपा कथ दीन ।
गुरु महत्व जन जान लें, गुरु समक्ष सब दीन ।। 6022

गुरु चरणों को जो भजे, विसर जगत जंजाल ।
उस जन की तो स्वयं ही, करते गुरु संभाल ।। 6023
विराट रूप गुरु देव हैं, परम दिव्य स्वरूप ।
बसें जहां सब देव गण, सभी तीर्थ भी गूप ।। 6024
गुरु मूर्ति के ध्यान से, सकल देव सन्तुष्ट ।
गुरु मूर्ति के ध्यान से, देव मानें यदि रुष्ट ।। 6025
जिस जन के मन में बसे, गुरु का मोहक रूप ।
उस जन की उपमा नहीं, वह तो ईश स्वरूप ।। 6026
गुरु बिन जीवन जानिये, चिन्ता का आगार ।
जन्म जन्म के दुष्कर्म, जन को करें खवार ।। 6027
जन्म जन्म के कर्म को, गुरु करें निर्मूल ।
गुरु चरणी जब जन लगे, सभी दूर हों शूल ।। 6028
सफल वही जन होत है, जिसे गुरु की टेक ।
विघ्न निवारक सद्गुरु, मुख्य बात यह एक ।। 6029
लाख करे जन यत्न यदि, मन न वश में होय ।
यही विघ्न सब से बड़ा, मुमुक्षु जाने सोय ।। 6030
सद्गुरु के उपकार से, ही मन वश में आय ।
गुरु कृपा ही युक्ति है, उत्तम यही उपाय ।। 6031
गुरु किरपा ही वश करे, यक्ष रूप यह चित्त ।
बिन गुरु कृपा होत नहीं, वश यह अन्य निमित्त ।। 6032
सद्गुरु द्वारे जाय कर, कीनी जिस गुरु सेव ।
उस सेवा के कारणे, वरद भयें सब देव ।। 6033

भव सागर की नाव यह, गुरु चरणों को जान ।
धन्य जन्म उस जीव का , जिसे मिले यह ज्ञान ।। 6034
गुरु की किरपा से भये, अहंकार का नाश ।
अहंकार के कारणे, जन बन्धा जग पाश ।। 6035
अहंकार के बीज को, भस्म करें गुरु आप ।
बीज रहे न जग रहे, सद्गुरु के प्रताप ।। 6036
गुरु पाप के बीज को, आप करें निर्मूल ।
अहंकार ही बीज वह, उपजें जिस से शूल ।। 6037
द्वन्द्व ताप जो करत हैं, शिष्यन के खुद दूर ।
ऐसा सद्गुरु पाय कर, भव से तरें ज़रूर ।। 6038
पास गुरु के जाय कर, और ठहर उन पास ।
सेवा निशिदिन वह करे, बने गुरु का दास ।। 6039
योग युक्त जब जन भये, गुरु चरणि ला चित्त ।
सुधि रहे न देह की, काम बने तब मित्त ।। 6040
अहं मिटे जन का तभी, यही उपाय एक ।
तन की सुधि को भूलिये, ले श्रद्धा की टेक ।। 6041
श्रद्धा गुरु पग जन करे, गुरु पग दृढ़ विश्वास ।
अनन्य गुरु का सेवक, रटे गुरु हर श्वास ।। 6042
गुरु भक्ति का रहस्य कथ, गुरु कृपा का सार ।
भक्तन पर यह समझ लो, अनुग्रह प्रभु अपार ।। 6043
नाथ अनुग्रह और भी, कीना भक्तन ताहिं ।
सरल रीत उन ध्यान की, भक्तन को समझाहिं ।। 6044

दो घड़ी जन नित्य करे, आसन का अभ्यास ।
आसन उस का सिद्ध हो, राखो मन विश्वास ।। 6045
गुरु पग ज्योति को लखे, श्रद्धा सहित मनुष्य ।
तन मन उस का शुद्ध हो, रहे न लेश क्लुष्य ।। 6046
गुरु नख तेज जिस मन बसे, गुरु पग होय प्रीत ।
योगी नर वह ही बने, लोक वेद की रीत ।। 6047
मन हो गुरु के रूप में, लीन जभी मम मीत ।
ध्यानी जन वह जानिये, स्पष्ट कथी है रीत ।। 6048
स्पष्ट कथी है रीत यह, गुरु का करिये ध्यान ।
किसी एक ही अंग का, अथवा देह महान ।। 6049
सरल रीत यह ध्यान की, जो कथी भगवान ।
भक्तन पर है अनुग्रह, कीना नाथ महान ।। 6050
मोक्ष का भी पथ प्रभु, कथन किया खुद आय ।
मोक्ष लक्ष्य इस जन्म का, जन भूल नहीं जाय ।। 6051
लक्ष्य जन्म का मोक्ष है, ऐसा जिस मन होय ।
गुरु कृपा से कर सके, साधन को जन सोय ।। 6052
आत्म द्रष्टा जन बने, तन की सुध को भूल ।
मोक्ष लाभ वह जन करे, शाश्वत यही असूल ।। 6053
दृढ़ता मन में धार कर, करे जो आत्म दर्श ।
कर सके नहीं लेश फिर, माया उसे स्पर्श ।। 6054
मुक्त होयगा सोय जन, ध्यावे जो निज रूप ।
जग की माया विसर कर, रहत चित्त में गूप ।। 6055

आत्म रूप में मन धरे, आत्म रूप में बुद्ध ।
आत्मरूप सिमरन करे, रहे सदा जन शुद्ध ।। 6056
शुद्ध बुद्ध जब जन भये, निर्मल होवे चित्त ।
दुःख नशे सुख ऊपजे, जीवन परम पवित्त ।। 6057
यह अनुग्रह नाथ का, रहस दिया सममाय ।
जीव जगत में आय कर, मोक्ष किमि वह पाय ।। 6058
मोक्षमार्ग में बांध जो, वह जान अहंकार ।
प्रभु जी ने है कथ दिया, उस का भी उपचार ।। 6059
जन अहंकारी न भये, निज को सब कुछ मान ।
पांच कारण हैं कर्म के, त्याग देय अभिमान ।। 6060
प्रथम कारण 'अधिष्ठान' है, दूजा 'कर्ता' मान ।
तीजा कारण 'करण' है, चौथा 'चेष्ठा' जान ।। 6061
'दैव' कारण है पांचवां, जो प्रबल है मीत ।
जन अहंकारी क्यों भये, इन की कर प्रतीत ।। 6062
जन अहंकारी न भये, निज को सब कुछ मान ।
पांचों कारण जान कर, त्याग देय अभिमान ।। 6063
यही पांचों प्रधान हैं, पांचों हैं प्रवाण ।
पांचों से ही जगत के, कारज होते जान ।। 6064
पांचों कारण कर्म के, करते कर्म तमाम ।
अहंकार को त्याग दें, भूलें न कभी राम ।। 6065
सत्य बात जब मन बसे, अहंकार हो नास ।
निरहङ्कारी साध को, मिलत है सिद्धि खास ।। 6066

अहंकार को त्याग कर, मुक्त दोष से चीत ।
अहंकार से छूटने, की कथी प्रभु यह रीत ।। 6067
यह अनुग्रह नाथ का, दीना सबन ज्ञान ।
अहंकार का त्याग कर, पाता जन निर्वाण ।। 6068
प्रभु अनुग्रह और भी, कथन करूँ सप्रीत ।
दीन दयाल दयानिधि, दीन जनों के मीत ।। 6069
द्वार आये जो दीन जन, जग ठुकराया होय ।
प्रभु लगा निज चरण से, पात्र बनावें सोय ।। 6070
प्रभु चरणों में जब लगे, मन चंचल मम मीत ।
चचंलता को त्याग कर, टिके वहीं सप्रीत ।। 6071
भक्त जनन सब जानते, मुलख राज का हाल ।
प्रभु प्रेम जब मन बसा, सके न तन संभाल ।। 6072
देह गिरा तो गिर गया, लगी चोट सो लाग ।
ध्यान प्रभु के चरण में, देह की न संभाल ।। 6073
दास प्रभु का जो बने, सिद्धि आये समक्ष ।
प्रभु किरपा से पाय वह, निज जीवन का लक्ष ।। 6074
राम प्रभु की शक्ति से, मुलख समाधि लीन ।
वर्ष निरन्तर दश रहा, समाधि में लिवलीन ।। 6075
[1] नंद गोपाल भी लिया, समाधि का इमि दान ।
अमर नाथ को भी मिली, यही समाधि महान ।। 6076

1. ब्रह्मचारी गोपालानन्द

किस मुख से मैं कथ सकूं, प्रभु अनुग्रह मीत ।
दूर किया अज्ञान उन, बता योग की रीत ।। 6077
[1]गौतम पत्नी अहिल्या, की अखण्ड समाधि ।
भ्रम भया यह सबन को, लागी इसे व्याधि ।। 6078
शाप वश पथरा गई, मिथ्या यह अज्ञान ।
दूर किया अज्ञान यह, अनुग्रह प्रभु महान ।। 6079
[2]एक अनुग्रह और भी, प्रभु जी कीन महान ।
उमा शिव और पार्वती, का चरित कीन बखान ।। 6080
शिव रहे थे समाधि में, पार्वती तप लीन ।
इस में कौन रहस्य था, प्रभु स्पष्ट कर दीन ।। 6081
जड़ भरत की भी कथा, प्रभु बतलाई आप ।
कौन दोष था भरत में, जिस से मिला संताप ।। 6082
यह कथा बतलाय कर, प्रभु जी कीन स्पष्ट ।
[3]मोह जगत का होय जब, मिटे न जन का कष्ट ।। 6083
यह शिक्षा जो नाथ की , चेत करत हर कोय ।
जान अनुग्रह नाथ का, किया दयामय जोय ।। 6084
मन के जैसे भाव हों, वही गति जन पाये ।
ज्ञानी भी न मुक्त हो, मोह यदि उपजाये ।। 6085
मोह यदि उपजाय मन, प्रकृति के रह संग ।
ज्ञानी भी फिर तन धरे, मोह दिखावे रंग ।। 6086

1. देखो श्री योग महादिव्य रामायण दोहा – 2745 से आगे
2. देखो श्री योग महा दिव्य रामायण दोहा – 2754 से आगे
3. देखो श्री योग महादिव्य रामायण दोहा – 2785 से आगे

मोह दिखावे रंग वह, मुक्त जीव न होय ।
ध्यान ज्ञान व योग को, करे अछादित सोय ।। 6087

चित्त भरत के मोह था, मृग शावक के साथ ।
जन्म लिया मृग रूप में, पड़ा काल के हाथ ।। 6088

पड़ा काल के हाथ वह, ज्ञानी भया कुरंग ।
अतर्क्य गति है मोह की, क्यों न रहें निसंग ।। 6089

शिक्षा लेवें भरत से, रहें मोह से दूर ।
यह संभव तब ही भये, सद्गुरु मिलें हज़ूर ।। 6090

सद्गुरु जन को जब मिलें, प्रतिपल शिक्षा देंय ।
पाश मोह के न पड़ें, सद्गति ही जन लेंय ।। 6091

कृपा कर प्रभु ने दिया, सुन्दर इक प्रसंग ।
शिक्षा जिस से जग गहे, त्याग सके कुसंग ।। 6092

[1] विश्वामित्र की कथा, जो प्रभु कथ पायी ।
काम क्रोध की प्रबलता, कर कृपा दिखलाई ।। 6093

योगी होय न वश कभी, इन शत्रुन के मीत ।
प्रभु अनुग्रह जानिये, करायी यह प्रतीत ।। 6094

बिना योग न जीत सके, वेग काम का मीत ।
गुरु से सीखे योग जो, वही सके यह जीत ।। 6095

[2] नाथ अनुग्रह करत हैं, भक्तन पर सब काल ।
नारद के प्रसंग से, भये स्पष्ट सब हाल ।। 6096

---

1. देखो श्री योग महादिव्य रामायण दोहा 2817 से आगे
2. देखो श्री योग महादिव्य रामायण दोहा 2839 से आगे

कर कृपा प्रभु ने कथा, नारद का प्रसंग ।
सममें जन इस बात को, हेय काम का संग ।। 6097
विषयासक्त जब जन भये, लोभादि में चूर ।
प्रभु निवारें उसी क्षण, रहे पाप न मूल ।। 6098
[1] विशेष अनुग्रह नाथ का, जन सममे हर कोय ।
नीति परक उपदेश बहु, प्रभु दीना है जोय ।। 6099
'साम' नीति और 'दान' का, कीना प्रभु बखान ।
'भेद' नीति और दण्ड का, भी उन दीना ज्ञान ।। 6100
इन चारों की सफलता, पर हो न जब विश्वास ।
'कुटिल' नीति वहां चलत है, वह नीति है खास ।। 6101
नीति से ही सफलता, पायें विज्ञ जो लोग ।
चलें न मूर्ख नीति पर, हाथ लगे उन सोग ।। 6102
जिस समय जिस नीति का, हो अवसर मम मीत ।
उस पर ही जब जन चले, सुखी भये सब रीत ।। 6103
प्रभु अनुग्रह और कहूँ, जो अलौकिक जान ।
अखिल सृष्टि का नाथ जी, दीना भक्तन ज्ञान ।। 6104
कब से चलती आ रही, यह सृष्टि है मीत ।
कब तक चलती यह रहे, किसे इस की प्रतीत ।। 6105
भक्तन की जिज्ञास वश, प्रभु जी दीना ज्ञान ।
सृष्टि का एक कल्प जो, उस का कीन बखान ।। 6106

1. देखो श्री योग महादिव्य रामायण दोहा 2865 से आगे

एक कल्प के बाद में, सृष्टि का हो नाश ।
महा प्रलय उस को कहें, शास्त्रन का विश्वास ।। 6107
ब्रह्म आयु उस को कहें, हो सृष्टि का अन्त ।
इतना दीर्घ काल जो, इक निमेष भगवन्त ।। 6108
निमेष इक भगवन्त का, करे सृष्टि का हान ।
और पुनः निमेष लेंय, फिर रचना हो जान ।। 6109
भगवन्त आयु न क्षीन हो, कितने लेय निमेष ।
अनादि अनन्त भगवान हैं, प्रभु दीना ज्ञान विशेष ।। 6110
यह अनुग्रह नाथ का, सरल रीति से ज्ञान ।
भक्तन को उन दे दिया, सृष्टि का विज्ञान ।। 6111
इस गणना से जान लो, सकल काल का भेद ।
दिव्य सृष्टि का मनन कर, नशे अहंकार खेद ।। 6112
आयु जीव नगण्य जान, सृष्टि काल अपार ।
कण एक जिमि रेत होय, मरुथल बीच अपार ।। 6113
प्रभु अनुग्रह जगत पर, बहु प्रकार से जान ।
खोल बताया नाथ ने, गूढ़ शास्त्रन का ज्ञान ।। 6114
सत्य हरिश्चन्द्र की कथा, प्रचलित है जग बीच ।
रहस्य न इस का जानते, प्रायः लोग समीच ।। 6115

---

1. एक कल्प कितना बड़ा होता है इस का अनुमान नीचे लिखे वर्णन से हो सकता है –

1 हमारा एक वर्ष = देवताओं का एक दिन
2 365 देवताओं के दिन = एक दिव्य वर्ष
3 सतयुग = 4000 दिवय वर्ष
त्रेता युग = 3000 दिव्य वर्ष
द्वापर युग = 2000 दिव्य वर्ष
कलियुग = 1000 दिव्य वर्ष
चतुर्युगी
4. 1000 चर्तुयुगी = ब्रह्मदिवस
1000 चतुर्युगी = ब्रह्मरात्रि
इस प्रकार 2000 चतुर्युगी = ब्रह्मा का एक दिन
5. 2000 X 365 = 730000 चतुर्युगी = ब्रह्म वर्ष
6. 730000 X 100 = 73000000 चतुर्युगी = ब्रह्मा की आयु या एक कल्प
इस प्रकार एक कल्प सात करोड़ तीस लाख चतुर्युगियो का शास्त्रों मे लिखा है ।

कठोर परीक्षा लेय कर, राजा की ऋषिवर्य ।
योग युक्त उस को किया, विदित न जग को सर्व ।। 6116
जो कराया योग उस, उस का सत्त स्वरूप ।
केवल योगी जानते, वह है जग से गूप ।। 6117
रोका पृथ्वी में चित्त, पृथ्वी जल में लीन ।
तेज में जल को देकर, तेज वायु में लीन ।। 6118
[1]वायु छोड़ आकाश में, वह कर 'अहं' विलीन ।
महत्तात्व आधार बन, अहं को 'स्व' कर लीन ।। 6119
यह था गूढ़ रहस्य इक, सममकाया प्रभु आप ।
कीन अनुग्रह जगत पर, मिटा सकल संताप ।। 6120
राम मर्यादा पुरुषोत्तम, कहते हैं सब लोग ।
किन गुणों के कारणे, ऐसा भया सुयोग ।। 6121
[2]वे गुण सारे राम के, हैं बतलाये नाथ ।
उन गुणों को जान कर, जगत भया सनाथ ।। 6122
यह अनुग्रह नाथ का, नहीं भूले संसार ।
इस से जग को है मिली, नैतिक सीख अपार ।। 6123
मर्यादा के पुरुषोत्तम, रामचन्द्र महाराज ।
सत्य हेतु उन त्यागा, निज पिता का राज ।। 6124

---

1. विश्वामित्र ने प्रसन्न हो कर हरिश्चन्द्र को अवहित गति (मोक्ष गति) प्रदान की :-
राजा ने मन को पृथ्वी में, पृथ्वी को जल में, जल को तेज़ में, तेज को वायु में, वायु को आकाश में, आकाश को अहंकार में, एवं अहंकार को अहं तत्व में मिला दिया। इस का स्पष्टी करण देखिये 'श्री योग महादिव्य रामायण' दोहा 2932 के आगे।
2. देखो श्री योग महा दिव्य रामायण दोहा - 2939 से आगे।

गुण असीम थे राम में, वर्णन न हो पांय ।
शुभ लक्षण उन में सभी, सर्व समर्थ कहांय ।। 6125
प्रलय अनल सम राम हों, जब मन उपजे क्रोध ।
एक पलक में ही गहें, शत्रु से प्रतिशोध ।। 6126
राम के गुण बतला बहु, जग को दीना ज्ञान ।
भटकत जन संसार में, भूला लक्ष्य महान ।। 6127
प्रभु दीनी इक सीख है, सकल जगत को मीत ।
आत्मोद्धार सर्वोपरि, हर जन राखे चीत ।। 6128
योग करे जन आत्महित, संशय करे न लेश ।
योग से ही हो सकत, जीवन सुखी हमेश ।। 6129
दिया संदेश जगत को, अनुग्रह प्रभु महान ।
प्रभु जी के उपदेश से, सब का हो कल्याण ।। 6130
दैवी संपद जन गहे, कर के साधन योग ।
तुच्छ लगें तब जीव को, सकल जगत के भोग ।। 6131
पांचों शत्रु जीत कर, करें आत्मोद्धार ।
शिक्षा दीनी नाथ जी, अनुग्रह कीन अपार ।। 6132
[1] तीनों तापों का हनन, भी आवश्यक मीत ।
प्रभु अनुग्रह से भये, प्रभु चरणि यदि प्रीत ।। 6133
[2] तीन ऋणों से मुक्त जन, हो सकत है मीत ।
प्रभु अनुग्रह से भये, प्रभु चरणि यदि प्रीत ।। 6134

1. तीन ताप – 1. भौतिक 2. दैविक 3. आत्मिक
2. तीन ऋण – 1. पितृ ऋण 2. ऋषि ऋण 3. देव ऋण

[1] क्लेश पांच भी दूर तब, हो सकत हैं मीत ।
प्रभु अनुग्रह से भये, प्रभु चरणि यदि प्रीत ॥ 6135
अभ्यास व वैराग्य से, योग में सिद्धि मीत ।
प्रभु अनुग्रह से भये, प्रभु चरणि यदि प्रीत ॥ 6136
ध्यान समाधि है मिली, बहुत जनों को मीत ।
यह है उन के भाग्य में, प्रभु चरणि जिन प्रीत ॥ 6137
बिन अनुग्रह नहीं लगे, ध्यान किसी का मीत ।
ऐसा अवसर मिलत है, प्रभु चरणि यदि प्रीत ॥ 6138
प्रभु दर्शन भी होत है, उन भक्तन को मीत ।
प्रभु अनुग्रह से जिन्हें, प्रभु चरणों से प्रीत ॥ 6139
[2] पंच कोष से निकलना, बहुत कठिन है मीत ।
इस बंधन से छूटते, प्रभु चरणि कर प्रीत ॥ 6140
[3] मन के तीन विकार जो, दूर तभी हों मीत ।
प्रभु अनुग्रह जभी भये, प्रभु चरणि कर प्रीत ॥ 6141
[4] आठ अंग यदि योग के, सिद्ध करन हों मीत ।
प्रभु अनुग्रह प्राप्त हित, प्रभु चरणि कर प्रीत ॥ 6142
[5] पांच यमों की साधना, बहुत कठिन है मीत ।
प्रभु अनुग्रह प्राप्त हित, प्रभु चरणि कर प्रीत ॥ 6143

---

1. पांच क्लेश – 1. अविधा 2. अस्मिता 3. राग 4. द्वेष 5. अभिनिवेश
2. पांच कोष – 1. अन्नमय कोष 2. प्राणमय कोष 3. मनोमय कोष 4. विज्ञानमय कोष 5. आनन्दमय कोष
3. मन के तीन विकार – 1. मल 2. विक्षेप 3. आवरण
4. योग के आठ अंग – 1. यम 2. नियम 3. आसन 4. प्राणायाम 5. प्रत्याहार 6. धारणा 7. ध्यान 8. समाधि
5. पांच यम – 1.अहिंसा, 2. सत्य, 3. अस्तेय, 4. ब्रह्मचर्य, 5. अपरिग्रह

[1]पांच नियम जो हैं कथे, उन पर चलना मीत ।
संभव होता है तभी, प्रभु चरणि यदि प्रीत ।। 6144
ध्यान धारणा कठिन बहु, सुगम तभी अभ्यास ।
प्रभु अनुग्रह होय यदि, प्रभु पर रख विश्वास ।। 6145
कई जनों का है चढ़ा, द्वार दशम में श्वास ।
प्रभु अनुग्रह पर उन्हें, दृढ़तम था विश्वास ।। 6146
प्रभु अनुग्रह जानिये, सदा धर्म से प्रीत ।
धर्म हेत अवतार ले, जग में आते मीत ।। 6147
प्रभु धर्म के हेत ही, आते नर तन धार ।
धरती जब है डोलती, अधर्म कर्म के भार ।। 6148
जग डूबे जब पाप में, दया धर्म का नाश ।
अशुभ कर्म बहु होत जब, सज्जन भयें हताश ।। 6149
'सत्य' सनातन धर्म है, इस में न संदेह ।
प्रभु रक्षक ही धर्म के, इस में न संदेह ।। 6150
धर्म के आधार पर, है टिका संसार ।
नहीं रहे यदि धर्म ही, मिट जाये संसार ।। 6151
प्रभु बतलाया जगत को, करो देश से प्यार ।
देश द्रोही का समझ, है जीवन धिक्कार ।। 6152
जन्म भूमि की माट से, जिस को होत प्रीत ।
सदा विजय उसकी भये, उसे सके को जीत ।। 6153

---

1. पांच नियम – शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान

नाथ अनुग्रह जानिये, जभी पड़ी है भीड़ ।
देश बचाया नाथ ने, दूर भयी थी पीड़ ।। 6154
प्रभु अनुग्रह कीजिये, सदाचारी हों लोग ।
कलियुग के प्रभाव से, फसें न जग के भोग ।। 6155
धर्म मान देश सेव हि, जायें सेव में लाग ।
द्रोही जन जो देश का, जले नरक की आग ।। 6156
प्रभु अनुग्रह से है भया, आज जगत को भान ।
सदाचार से ही भये, भारत का कल्याण ।। 6157
प्रभु अनुग्रह से भया, भारत का कल्याण ।
जो था सहस्र वर्ष से, सह रहा अपमान ।। 6158
ऋषियों की यह भूमि जो, दुष्टन कीन अपवित्त ।
नाथ अनुग्रह से भयी, प्रभु चरण से पवित्त ।। 6159
संकट का जब काल था, प्रभु लीन अवतार ।
जागृत कीना जगत को, कर योग प्रचार ।। 6160
परम शक्ति है योग की, न इस के और समान ।
योगी जन गण जब भयें, हो तभी कल्याण ।। 6161
ऐसा यह उपदेश है, प्रभु का मेरे मीत ।
प्रभुजी खोल बतलाया, अपना जग को चीत ।। 6162
ऋषियों का यह देश है, भारत वर्ष महान ।
करिये प्लावित योग से, है भया सुनसान ।। 6163
योग गया शक्ती गयी, मानवता भयी लुप्त ।
दानव आय दबोचा, अचेत पड़े जन सुप्त ।। 6164

नाथ अनुग्रह जानिये, ललकारा उन आन ।
हे ऋषियों के वंशज, क्यों पड़े अनजान ।। 6165
भूल गये जो राम को, भूल गये हो शाम ।
गौतम और वशिष्ठ को, भूले परशु राम ।। 6166
सिंह श्रृगाल बन गया, चले भेड़ की चाल ।
दानव का पग चाटता, जिमि श्वान का बाल ।। 6167
प्रभु की ललकार यह, जभी पड़ी आ कान ।
सिंह शेर थे बन गये, नाथ अनुग्रह जान ।। 6168
सकल देशों में हो गया, पुनः योग प्रसार ।
सूरज की जिमि किरण से, हो दूर अंधकार ।। 6169
भारत फिर भारत भया, जग का गुरु महान ।
योग हेतु आने लगे, विदेशों से विद्वान ।। 6170
आते न यदि राम प्रभु, लेय योग अवतार ।
किमि दूर होय सकत था, यह सकल अंधकार ।। 6171
परम कृपा जो नाथ ने, कीनी आकर मीत ।
जग को दीनी सीख ही, जन की जन से प्रीत ।। 6172
युद्ध परम अभिशाप है, मानव माथ कलंक ।
युग-युग से यह है पड़ा, मानवता के अंक ।। 6173
क्यों मानव है काटता, मानव के ही अंग ।
यह तो हिंसा है घृणित, जो मानव के संग ।। 6174
सचेत कीन है नाथ ने, सर्व जगत को मीत ।
सुसभ्यता के काल इस, सोचो ला तुम चीत ।। 6175

पृथ्वी कारण लड़ रहे, ईश्वर की जो चीज़ ।
जन मालिक है बन रहा, जो स्वयं नाचीज़ ।। 6176
लाखों जन मर खप गये, पृथ्वी जूं ही तूं ।
नाथ ज्ञान हैं दे रहे, यहां न रींगे जूं ।। 6177
स्वर्ग बनेगी धरत यह, होवे न यदि युद्ध ।
हिल मिल सभी यहां रहें, हो मनुष्य में बुद्ध ।। 6178
नाथ अनुग्रह कर रहे, दे कर ऐसा ज्ञान ।
दोष हमारा समझ लो, बनें स्वयं अनजान ।। 6179
वसुधा एक कुटुंब है, ऋषियन का फरमान ।
लोग परस्पर लड़ रहे, बन स्वयं अनजान ।। 6180
जग सारा है एक ही, रची रचन भगवान ।
मानवता है एक ही, प्राणी सभी समान ।। 6181
मानव को हो बोध यह, मात लोक है एक ।
जगत ही मातृ भूमि है, रचें न खंड अनेक ।। 6182
है ज्ञान प्रभु ने दिया, जग में ले अवतार ।
प्रभु के इसी ज्ञान में, अनुग्रह का है सार ।। 6183
सदियों से हैं सुन रहे, जग में हाहाकार ।
प्रभु के ही उपदेश में, इस का है प्रतिकार ।। 6184
जगत सुखी तब होयेगा, पैदा हों जब लोग ।
अहिंसा जो अपनायें, गाहवें मार्ग योग ।। 6185
प्रभुजी का उपदेश है, जग के सब इनसान ।
वैर भाव को त्याग कर, गले मिलें अब आन ।। 6186

न रहे अब वैर यहां, न ही रहे विरोध ।
कोई किसी पर भी कभी, भूल करे न क्रोध ।। 6187
सीमा जायें टूट सब, जो रचीं इनसान ।
जहां चाहे जन जा सके, बिना किसी प्रमाण ।। 6188
देवों से भी श्रेष्ठ जो, पाया मानव देह ।
माया के पड़ जाल में, करें काट के खोह ।। 6189
यदि परस्पर प्रेम से, जन बसें भूलोक ।
स्वर्ग से भी हो सुखी, यही पृथ्वी लोक ।। 6190
मात लोक प्रसन्न हो, सब का मन प्रसन्न ।
दिव्य लोक प्रसन्न हो, रहे न को आपन्न ।। 6191
यह अनुग्रह नाथ का, भूले न संसार ।
स्मरण रहे यह जगत को, इस में सुख अपार ।। 6192
प्रभु बतलाया जगत को, जन रोग गुलतान ।
योग विद्या जो ऋषिन की, उस से हो कल्याण ।। 6193
योग का प्रचार हो, सकल जगत के बीच ।
रोग शोक से मुक्त जन, सुखी सभी समीच ।। 6194
षट्कर्म सभी योग के, उन का हो प्रचार ।
रोगों से सब मुक्त हो, यह सकल संसार ।। 6195
सब जगत में आह्लाद हो, सब जग में हो प्यार ।
दुःखी दीखे न जगत में, कहीं कोइ नर नार ।। 6196
प्रभु की खास महानता, आवे मेरे चित्त ।
उन की दृष्टि में बसत, विश्व सकल मम मित्त ।। 6197

सकल विश्व में आत्मा, रहती एक समाय ।
सकल विश्व में जीव भी, रह रहें हर थाय ।। 6198
नाथ अनुग्रह करत हैं, सकल विश्व पै मीत ।
सकल विश्व का हित बसत, स्वंय प्रभु के चित्त ।। 6199
सूर्य लोक के ग्रह सभी, उन का प्रभु को ध्यान ।
कृपा सभी पै करत हैं, विश्व नाथ भगवान ।। 6200
चन्द्र लोक जो जीव हैं, उन का प्रभु को ध्यान ।
बुध ग्रह में जो बसत, उन का भी है ध्यान ।। 6201
शुक्र को भी नाथ मम, कर रहे हैं याद ।
आशिष दे रहे सबन को, जो वहां आबाद ।। 6202
मंगल ग्रह के जीव सब, पा रहे आशीष ।
प्रिय प्रभु को जीव सभी, प्रभु विश्व के ईश ।। 6203
बृहस्पति में जो बसें, उन का प्रभु को ध्यान ।
जैसे भी वे जीव हों, प्रभु को सभी समान ।। 6204
शनि तो हम से दूर है, प्रभु से वह न दूर ।
प्रभु व्यापक विश्व में, अनुग्रह करत हज़ूर ।। 6205
अरुण वरुण कुबेर भी, पा रहे प्रभु का प्यार ।
वहां के जीवों का नमन, प्रभु करें स्वीकार ।। 6206
सभी ग्रहों के जीव जो, सभी हमारे मीत ।
प्रभु बतलाया लोक को, राखो उन से प्रीत ।। 6207
धन्य–धन्य प्रभु आप हैं, अनुग्रह तेरा धन्य ।
यह ज्ञान था न मिला, कभी किसी से अन्य ।। 6208

सभी लोग तो कहत थे, सूरज का अति ताप ।
वहां तो रहत है न कोई, कौन सहे संताप ।। 6209
दूर कीनि भ्रांति यह, आ कर खुद भगवान ।
आत्मा तो न जलत है, दीना सबन ज्ञान ।। 6210
सूरज में भी जीव हैं, जिन का पुण्य महान ।
वही वहां पर बसत हैं, महा लोक वह जान ।। 6211
भ्रांति सकल जहान की, कीन दूर भगवान ।
महा अनुग्रह नाथ का, दीना सूक्ष्म ज्ञान ।। 6212
आत्म तत्व का बोध जो, इस विध भया स्पष्ट ।
आत्मा अजर व अमर है, होय कभी न नष्ट ।। 6213
विशेष अनुग्रह नाथ का, मैं बतलाऊँ मीत ।
हठ योग जो लुप्त भया, थापी उस की रीत ।। 6214
स्वयं सिखलाये आय कर, योग के साधन नाथ ।
रचना जिन की थी करी, पूर्व में आदि नाथ ।। 6215
षट्कर्म बहु योग के, तन की शुद्धि हेत ।
प्रचारित कीने नाथ ने, जग को कीन सचेत ।। 6216
जन शुद्धि यदि नहीं करत, मल का संचय होय ।
मल से ही तो जानिये, जन्म रोग का होय ।। 6217
शुद्धि के सभी साधन, नेति धौति आदि ।
जनता जब करने लगी, दूर भयीं बहु व्याधि ।। 6218
रोग मुक्त जब होत जन, उन के चित्त सवाल ।
नाथ अनुग्रह करत हैं, अकारण हि सब काल ।। 6219

नेति सीखी जनन ने, धौति भी संग कीन ।
नौली भी करने लगे, सीखा त्राटक लीन ।। 6220
कपाल भाति जब सीख ली, निज को माने धन्य ।
बस्ती के शौकीन थे, कई जन तो अन्य ।। 6221
प्रभु की जय जय कार वे, करत रहत दिन रात ।
घोर वनों से आय कर, प्रकटे जो साक्षात ।। 6222
जान लिया सब जनन ने, प्रभु अनुग्रह कीन ।
अलौकिक विद्या योग की, वन से आ कर दीन ।। 6223
योग के आसन सीखते, प्रभु से आ कर लोग ।
हृष्ट पुष्ट तन से भये, नित्य करें वे योग ।। 6224
शिक्षा प्राणायाम की, देते थे प्रभु नित्त ।
स्फूर्ती आती देह में, वा आह्लादित चित्त ।। 6225
योग की मुद्रा बहुत हैं, उन का सकल ज्ञान ।
कईयों को प्रदान कर, अनुग्रह कीन महान ।। 6226
मुद्रा के अभ्यास से, प्रत्याहार हो पाय ।
सदा करत अभ्यास जो, कुण्डली जाग हि जाय ।। 6227
चित्त स्थिर हो ध्यान में, दिव दर्शन हो जात ।
प्रभु अनुग्रह जब भये, होत तभी साक्षात ।। 6228
प्रभु शरण में रहकर, करत बहु जन ध्यान ।
दीर्घ कालिक ध्यान से, निरोध अवस्था पान ।। 6229
नाथ अनुग्रह करत थे, बहु भक्तन पर मीत ।
अनेकों रहत समाधि में, जिन की प्रभु से प्रीत ।। 6230

हठ योग का ज्ञान प्रभु, समग्र दीना आन ।
जिन के था यह भाग्य में, ग्रहण किया वह ज्ञान ।। 6231
षट्कर्मन के भेद सब, दीने प्रभु समझाय ।
द्वादश विध जो धौतियां, भक्त सीख थे पाय ।। 6232
वस्त्र धौति विशेष है, जो सिखलाई नाथ ।
वस्त्र खाते भक्त जन, दस से पंदरह हाथ ।। 6233
प्रभु बतलाते स्वयं थे, इस धौति का लाभ ।
मल उदर का शुद्ध होत, देह होत अमिताभ ।। 6234
दुग्ध नेति के गुण कथे, प्रभु ने जग के हेत ।
लाभ उठाया जगत ने, ऊसर भये सुखेत ।। 6235
गज करणी जो करत है, नित्य प्रात व सांझ ।
दोष कोई न होत है, उस की दृष्टि मांझ ।। 6236
गज करणी में दूध का, करता जन प्रयोग ।
उस को लाभ विशेष हो, गुण कारी यह योग ।। 6237
नाथ अनुग्रह जानिये, नूतन बात बताई ।
दुग्ध नेति की यह क्रिया, और कहीं न आई ।। 6238
क्रिया विशेष इक योग की, दी बतलाई नाथ ।
महा उपयोगी जानिये, कर जन होत सनाथ ।। 6239
क्रिया यह वारिसार की, जो जन लेवे सीख ।
रहत रोग से मुक्त वह, बहु जन कीन परीख ।। 6240
शीघ्र हरे यह रोग को, और करत नीरोग ।
इस क्रिया को सीख कर, सुखी भये बहु लोग ।। 6241

क्रिया जो वह्निसार की, भी गुणकारी जान ।
बहुत भक्तों ने सीखी, प्रभु चरणों में आन ।। 6242
वह्निसार प्रभाव से, पच जाता जो खात ।
कुछ दिन के अभ्यास से, होत पुष्ट है गात ।। 6243
प्रभु जी करत सचेत थे, सभी जनों को मीत ।
रहें योग आराध जन, सुखी रहें सब रीत ।। 6244
राम लाल ने जगत में, आ प्रचारा योग ।
आश्रम निर्मित कर गये, लाभ उठावें लोग ।। 6245
प्रभु सिखलायीं योग की, सुगम क्रियायें मीत ।
जिन के लाभ अनेक हैं, सुगम करने की रीत ।। 6246
जिह्वा मूल का शोधन, कपालरन्ध्र व मीत ।
इन दोनों के लाभ बहु, प्रभु सिखलायी रीत ।। 6247
तालु पीछे रन्ध्र इक, रन्ध्र नाम कपाल ।
उसका शोधन जब करें, स्वस्थ रहें हर हाल ।। 6248
शुद्ध रहे यदि रन्ध्र यह, सर भी रहत स्वस्थ ।
रुका यदि यह रन्ध्र हो, रहता सर अस्वस्थ ।। 6249
अशुद्धि देह में न रहे, नियम रचा भगवान ।
रन्ध्र देह में जो रचे, रखते खुले सुजान ।। 6250
रुके जो मल कपाल में, भय दायक परिणाम ।
जीवन संशय में पड़े, निश्चय से लो जान ।। 6251
इस कारण सब ही करें, निज कपाल को शुद्ध ।
शुद्ध होवे कपाल जब, ठीक रहेगी बुद्ध ।। 6252

उत्तम अंग कपाल है, उस का राखें ध्यान ।
उस की शुद्धि के बिना, सके न जन पा ज्ञान ।। 6253
इसी हेतु है नाथ ने, कपालभाति कथ पायी ।
यह भी किरया सुगम है, नाथ जिमि बतलायी ।। 6254
अनुग्रह जानो नाथ का, जिन दीना सभी ज्ञान ।
कर स्वयं सिखलाया, विद्या योग महान ।। 6255
योगाश्रम में आन कर, सीख रहे जन योग ।
प्रभु के इस उपकार को, कभी न भूलें लोग ।। 6256
प्रभु बतलाते सबन को, सबल करें मन लोग ।
मन दुर्बल न होत है, जन करे जब योग ।। 6257
दुर्बल मन को घेरते, अनेकों शत्रु आन ।
योग मार्ग से वर्जते, शत्रु बहु बलवान ।। 6258
छः शत्रु वे जानिये, जिन का दीना ज्ञान ।
उन के वश जो हो गया, रहे दुखी इनसान ।। 6259
व्याधि उनमें एक है, स्त्यान दूसर जान ।
संशय तीजा जानिये, प्रमाद चौथा मान ।। 6260
आलस पंचम है कथा, जन को करे खवार ।
अविरति छटा जान लो, ये सभी बदकार ।। 6261
छः शत्रु ये योग के, योगी रहे सतर्क ।
गुरु पै राखे आस्था , लेश न राखे फर्क ।। 6262
श्रद्धा जननी ज्ञान की, संशय दुख का मूल ।
संशय से हो रहित मन, योग का यही असूल ।। 6263

प्रभु ने दीना ज्ञान यह, जिस से जग तर जाय ।
प्रभु अनुगह जानिये, गूढ़ ज्ञान दे पाय ।। 6264
गुरु भक्ति का रहस्य भी, खोल बताया नाथ ।
बिन गुरु की शरण मिले, लागे न कुछ हाथ ।। 6265
गुरु का आश्रय जब मिले, निर्बलता हो दूर ।
पर्वत सन्मुख हो खड़ा, वह भी होगा चूर ।। 6266
वह जन ईश न पा सके, गुरु को समझे और ।
जाने गुरु को न्यून जो, उस को मिले न ठौर ।। 6267
ईश दया से गुरु मिले, गुरु दया से ईश ।
दोनों इक ही रूप हैं, कहते सभी मुनीश ।। 6268
कहते सभी मुनीश हैं, समझे भेद न कोय ।
भेद भाव जिस मन बसे, पावे ईश न सोय ।। 6269
योगासन बहु नाथ ने, भक्तन को सिखाये ।
प्रभु ने उनके रहस भी, थे खोल बतलाये ।। 6270
शीर्षासन जब सीखते, प्रभु से आकर लोग ।
परख करते थे नाथ जी, किस के है वह योग ।। 6271
शीर्षासन जब जन करे, करके देखो नयन ।
लाल यदि विशेष होंय, करे न इस का चयन ।। 6272
आसन विशेष जो नाथ ने, जग को दीने आन ।
[1] जीवनतत के साधन, उन का लाभ महान ।। 6273

1. जीवन तत्व के सात साधन : 1. सर्वोतान 2. स्कंध चालन 3. पग चालन 4. नाभि चालन 5. जानु प्रसार 6. नाड़ी चालन 7. बाल मचलन

साधन सात विशेष हैं, नाम उनके लो जान ।
अनुग्रह यह है नाथ का, जन सीखें बहु आन ।। 6274
सर्वोत्तान प्रथम है, स्कंध का चालन दूज ।
पग चालन है तीसरा, चौथा लो खुद बूज ।। 6275
नाभी चालन जान लो, है उस का यह नाम ।
पंचम जानु है प्रसार, आवें साधन काम ।। 6276
नाड़ी चालन आगला, यह छटा पहचान ।
बाल मचलन जिस को कहें, वह सप्तम लो जान ।। 6277
प्रभु जी ने ये जगत को, दीने साधन आन ।
अनुकम्पा प्रभुदेव की, कीने उन निर्माण ।। 6278
अथाह समुद्र योग का, प्रभु का था स्वरूप ।
जिस की सीमा जगत से, रही सदा ही गूप ।। 6279
प्रभु ने जग में आन कर, जगती दीनी तार ।
ऐसा योग बतलाया, जो जीवन आधार ।। 6280
प्रभु का है आदेश यह, करो न गुरु बिन योग ।
गुह्य विद्या इसे कहें, पारंगत जो लोग ।। 6281
उत्तम साधन योग का, जीवनतत पहचान ।
स्थूल शरीर सूक्ष्म करे, दीना प्रभु ने ज्ञान ।। 6282
तन मन के जो कष्ट थे, दूर किये प्रभु आन ।
आते न प्रभु जगत में, होता किमि कल्याण ।। 6283
दीन निमानन जनन को, लीना उन अपनाय ।
'दीन बन्धु' सार्थक किया, निज नाम यहां आय ।। 6284

महा अनुग्रह नाथ का, मेरे मन में मीत ।
वैदिक शिक्षा जगत को, आ दीनी सप्रीत ।। 6285
जीवन के जो चार हैं, आश्रम कहते वेद ।
उन का कीन उल्लेख है, प्रभुजी ने बिन खेद ।। 6286
ब्रह्मचर्य ही प्रथम है, गृहस्थ दूजा जान ।
आश्रम वानप्रस्थ तो, तीजा लो पहचान ।। 6287
सन्यास चौथा है कथा, मोक्ष जिस का लक्ष्य ।
पूर्व के जो तीन हैं, जन को करते दक्ष्य ।। 6288
ब्रह्मचर्य में योग का, करना है अभ्यास ।
शक्ति जागृत होत है, योग में रख विश्वास ।। 6289
गृहस्थ में जन जगत का, करता है निर्माण ।
स्वर्ग बनाये जगत को, प्रभु का यह इस्थान ।। 6290
वानप्रस्थ में वन में, कर कुटिया निर्माण ।
आयें जन जो पास उस, विद्या का दे दान ।। 6291
बालपने का योग ही, आगे होय सहाय ।
उज्जवल होय भविष्य तब, योग करें मन लाय ।। 6292
वेदाज्ञा को भूल कर, मनमानी कर लोग ।
अधो मार्ग को ग्रहण कर, त्यागें साधन योग ।। 6293
पग जीवन का प्रथम जो, कर ले उसमें योग ।
बनता दृढ़ आधार तब, ले आयु पूर्ण भोग ।। 6294
आश्रम चारों के धर्म, जो पाले ला ध्यान ।
मुक्ति उस को सुलभ हो, निश्चय से लो जान ।। 6295
चार पगों में धर्म का, करता जो आचरण ।
वह साधक ही मुक्ति का, कर सकता है वरण ।। 6296

जो योगी इस जन्म में, ले मोक्ष को पाय ।
परम वीर योगी वही, भूश्रृंगार सुहाय ।। 6297
कैसा अनुग्रह नाथ का, ऋषियन का यह ज्ञान ।
आन पसारा जगत में, विसारा जो जहान ।। 6298
और अनुग्रह नाथ का, कथन करुँ मैं मीत ।
प्राणों का विश्लेषण, प्रभु कीना ला चीत ।। 6299
पांच प्राण कथन किये, वा पांच उपप्राण ।
उन के कार्यों का सकल, प्रभु जी कीन बखान ।। 6300
[1] प्राण अपान समान हैं, उदान और व्यान ।
अपना – 2 कार्य ये, करते हो सावधान ।। 6301
[2] हैं पांच उपप्राण जो, बताये उन के नाम ।
नाम धनञ्जय व कृकल, देवदत्त कूर्म नाम ।। 6302
गहन विषय जो प्राण का, प्रभुजी कीना स्पष्ट ।
जागृत कीना योग उन, भया जो प्रायः नष्ट ।। 6303
यह अनुग्रह योग पर, अनुग्रह जग पै साथ ।
भक्त जनों पै अनुग्रह, योग लगा जिन हाथ ।। 6304
प्राण शक्ति के कारणे, तन में चालें प्राण ।
प्राण शक्ति के कारणे, बुद्धि गाहे ज्ञान ।। 6305
प्राणों के सभी केन्द्र, प्रभु बताये आप ।
मेरुदण्ड के भीतर, रचे जो ईश्वर आप ।। 6306

---

1. पांच प्राण : 1. प्राण – हृदय में 2. अपान – गुदा में 3. समान – नाभि में 4. उदान – कण्ठ में 5. व्यान – त्वचा में
2. पांच उपप्राण : 1. नाग – (से उदगार) 2. धनञ्जय – (से हिचकी) 3. कृकल – (से भूख प्यास)
4. देवदत्त – (से उबासी) 5. कूर्म – (से पलक झपकना)

षट्चक्रों के नाम से, शास्त्र में विख्यात ।
प्रभु बतलाये सबन को, नाम उन के हे तात ।। 6307
[1] मूलाधार एक है, दूजा स्वाधिष्ठान ।
मणिपूर है तीसरा, अनाहत चौथा जान ।। 6308
पंचम चक्र विशुद्ध है, छटा आज्ञा मान ।
इन सबन का नाथ ने, दीना जग को ज्ञान ।। 6309
इन चक्रों की धारणा, जन तभी कर पाये ।
अपने मन की नर यदि, शुद्धि कर दिखलाये ।। 6310
चित्त शुद्धि के हेत भी, कथ पाये नाथ उपाय ।
महान अनुग्रह नाथ का, उपाय सरल बताय ।। 6311
मनुष्य सुखी को देखकर, मित्र जानो सोय ।
ईर्षा का तो लेश भी, दोष न मन में होय ।। 6312
दीन दलित दुखी ऊपर, घृणा उपजे न लेश ।
करुणा का हो वास ही, तेरे चित्त हमेश ।। 6313
अच्छे काम को देखकर, प्रसन्न भये तव चित्त ।
नुकता चीनी छोड़ कर, करो प्रशंसा नित्त ।। 6314
[2] दोष किसी का देखकर, पापी का व पाप ।
उपेक्षा वृत्ति चाहिए, मिटता मन का ताप ।। 6315

---

1. मेरुदण्ड में प्राण शक्ति के छः चक्रों के नाम और उनके स्थान :
   1. मूलाधार का स्थान गुदा, 2. स्वाधिष्ठान का स्थान लिंग, 3. मणिपूर का स्थान नाभि, 4. अनाहत का स्थान हृदय, 5. विशुद्ध का स्थान कण्ठ, 6. आज्ञा का स्थान भृकुटी.
2. चित्त शुद्धि के चार उपाय : 1. सुखी के प्रति मित्रता भाव 2. दुःखी के प्रति करुणा भाव 3. पुण्य के प्रति मुदिता भाव 4. पाप के प्रति उपेक्षा भाव ।

महा अनुग्रह नाथ का, सरल रीत बतायी ।
चित्त शुद्धि की सबन को, शिक्षा उन दे पायी ।। 6316
और अनुग्रह नाथ का, कथन करुं इस साथ ।
शक्ति लाये योग की, सदा जो उन के हाथ ।। 6317
लेकर यही विशेषता, आये हैं भगवान ।
शस्त्र प्रभु का योग है, सब जग ले यह जान ।। 6318
अहिंसा शस्त्र योग का, क्यों करे संहार ।
नाश पाप का ही करे, पापी का उद्धार ।। 6319
योग शक्ति सदैव थी, अवतारों के पास ।
परंतु संग में शस्त्र थे, लाये प्रयोग में खास ।। 6320
कलिकाल में राम का, है विशेष अवतार ।
केवल शक्ति योग की, उस से हो सब कार ।। 6321
यह अनुग्रह खास है, जग के ऊपर मीत ।
हिंसा के ही बिन भये, धर्म की जग में जीत ।। 6322
प्रभु अनुग्रह असंख हैं, किस का होय बखान ।
एक अनुग्रह की कहें, विशेष दिया जो ज्ञान ।। 6323
हृदय में करें ध्यान हम, सब जन करत बखान ।
परंतु हृदय है कहां, पूर्ण न इस का ज्ञान ।। 6324
प्रभु बतलाया स्पष्ट है, हृदय का जो स्थान ।
स्मरण रहे यह सबन को, जब वे करत ध्यान ।। 6325
देह का आधार जो, मेरु दण्ड है मीत ।
उसी के मध्य सुषुम्ना, उसको हृदय चीत ।। 6326

यह ज्ञान प्रभु ने दिया, भयी भ्रांति सब दूर ।
साधन जो जन करत इमि, होता सफल जरूर ।। 6327
चित्त एकाग्र होत है, सुषुम्ना में हि मीत ।
गति श्वास की बदलती, रहत स्थित सप्रीत ।। 6328
रहत स्थित सप्रीत वे, मन प्राण में लीन ।
मन प्राण का मेल जब, जान साध प्रवीन ।। 6329
नित्य करे अभ्यास जो, सिद्धि लागे हाथ ।
करत करत अभ्यास से, बढ़े योग के पाथ ।। 6330
विसरे देह की सुध तब, अन्तर्मुखी हो मन ।
इसी अवस्था को सभी, चाहते योगी जन ।। 6331
रहस्य प्रभु इक खोल कर, जो समझाया मीत ।
अनुग्रह उनका यह बड़ा, मेरे मन प्रतीत ।। 6332
प्राण विद्या जो योग की, उस का जो आधार ।
वह समझाया नाथ जी, स्पष्ट भया है सार ।। 6333
प्राण नाड़ियों में प्राण जिमि, विचरत हैं मम मीत ।
ज्ञान उसी का नाथ ने, जग को दीन सप्रीत ।। 6334
बहत्तर कोटि नाड़ियां, जिन से व्याप्त देह ।
प्राण उन में विचरता, जानो बिन संदेह ।। 6335
उन नाड़िन का जाल इक, फैला है तन मांहि ।
प्राण उन्हीं में विचरत, विद्युत की ही नांहिं ।। 6336
सब नाड़िन में चेतनता, आती है मम मीत ।
प्राणायाम जब जन करे, एकाग्र कर के चीत ।। 6337

[1] प्राणायाम के भेद सब, प्रभु बतलाये साथ ।
दीनी शिक्षा संग में, परम कृपालु नाथ ।। 6338
'नाड़ी शुद्धि' एक है, दूजा 'सूरज भेद' ।
जान 'उज्जायी' तीसरा, 'शीतली' हो बिन खेद ।। 6339
पंचम होवे 'भस्त्रिका', छटा 'भ्रामरी' मान ।
'मूर्छा' कुंभक सातवां, 'सीतकारी' पहचान ।। 6340
नवम जान 'प्लावनी', 'केवली' दशम मान ।
अनुग्रह है भगवान का, सिखलाये सब आन ।। 6341
संग प्राण ध्यान की, भी बतलाई रीत ।
है यह विशेष अनुग्रह, लेवें मन में चीत ।। 6342
माला होवे श्वास की, संग मन्त्र का जाप ।
चित्त एकाग्र होत है, सद्गुरु के प्रताप ।। 6343
श्रद्धा गुरु के चरण में, होवे जिस की मीत ।
श्वास–श्वास में नाथ का, जाप करे इस रीत ।। 6344
नाम प्रभु का कौन सा, और मन्त्र हो कौन ।
उदार वृत्ती नाथ की, अनुग्रह के वे भौन ।। 6345
प्रभु के ही सब रूप हैं, प्रभु के ही सब नाम ।
नामों की बहु कल्पना, मानव का है काम ।। 6346
मन में प्रभु का रूप धर, जपे श्वास में नाम ।
प्राण संग है ध्यान यह, एक पंथ दो काम ।। 6347

---

1. आठ यौगिक प्राणायाम : 1. नाड़ी शुद्धि, 2. सूर्य भेद, 3. उज्जायी, 4. शीतली, 5. भस्त्रिका, 6. भ्रामरी, 7. मूर्छा 8. सीत्कारी, 9. प्लावनी, 10. केवली

इस की है जो साधना, राज योग लो जान ।
राज संग हठ योग है, दोनों का अधिमान ।। 6348
हर श्वास का मोल है, मन्त्र रमे उस साथ ।
योग युक्त तब जन बने, लागे मुक्ति हाथ ।। 6349
दिव्य पुरुष का ध्यान धर, करे एकाग्र चित्त ।
दिव्य गुण चित्त में बसें, इसी में जन का हित ।। 6350
दीर्घकाल सत्कार युत, निरन्तर करे ध्यान ।
उस साधक की क्या कहें, सिद्धि पाये महान ।। 6351
सुगम रीत जो ध्यान की, प्रभु बतलाई मीत ।
महा अनुग्रह नाथ का, लो यह मन में चीत ।। 6352
ध्यान लगाने हेत तो, मुद्रा बहु हैं मीत ।
प्रभु बतलाया जगत को, अभ्यास करें किस रीत ।। 6353
[1] मुद्रा के दो वर्ग भी, कीने प्रभु जी आन ।
कुण्डली बोधन हेत इक, दूज में ग्रन्थि ज्ञान ।। 6354
इस विध भ्रांति बहुत सी, हो गई है दूर ।
मुद्रा ज्ञान सरल भया, जो था कठिन जरूर ।। 6355
लक्ष्य भेद से प्रभु कथे, मुद्रा के दो वर्ग ।
प्रथम वर्ग में नौ कहे, तेरह दूजे वर्ग ।। 6356

---

1. प्रथम वर्ग की मुद्राएं : 1. नभो मुद्रा, 2. खेचरी, मुद्रा, 3. तडागी मुद्रा, 4. मांडूकी मुद्रा, 5. अश्विनी मुद्रा, 6. काकी मुद्रा, 7. मातंगिनी मुद्रा, 8. विपरीतकरी मुद्रा, 9. भुजंगिनी मुद्रा

द्वितीय वर्ग की मुद्राएं : 1. महामुद्रा, 2. महाबंध, 3. महाबेध, 4. योनि मुद्रा, 5. वज्रोणि मुद्रा, 6. शक्ति चालिनी मुद्रा, 7. शांभवी मुद्रा, 8. पृथ्वी धारणा मुद्रा, 9. जल धारणा मुद्रा, 10. अग्नि धारणा मुद्रा, 11. वायवी मुद्रा, 12. आकाशी मुद्रा, 13. पाशनी मुद्रा

हठ योग में ध्यान की, तीन विधि जो आईं ।
सरल रूप से नाथ ने, सबन को बताईं ।। 6357
रूप इष्ट का देखना, मन में मेरे मीत ।
स्थूल ध्यान इस को कहें, यह लो चित्त में चीत ।। 6358
हे साध तुम देखना, इष्ट को नेत्र मीत ।
एकाग्र वृत्ति हो सके, यदि भजो सप्रीत ।। 6359
नित्य मस्तक पै ध्यान को, भक्त धरे जो मीत ।
इष्ट बसे उस चित्त में, लेय काम को जीत ।। 6360
दूसर ध्यान जो नाथ ने, बताया भक्तन तांहिं ।
ज्योति ध्यान उस को कहें, ज्योति बसे मन मांहिं ।। 6361
आत्म ज्योति देखना, अपने हृदय मांहिं ।
आत्मा का प्रकाश तो, है प्रकट घट मांहिं ।। 6362
गुरु कृपा को पाय कर, हो जो इस का ध्यान ।
चित्त एकाग्र होत तब, उत्तम यह है ध्यान ।। 6363
करें मुक्ति हित साधना, आत्म तत्व विचार ।
प्रभु की कृपा पाय कर, करें आत्म उद्धार ।। 6364
जन करे इस ध्यान को, कण्ठ कूप के बीच ।
दर्शन ज्योति का भये, ध्यानी बने समीच ।। 6365
हो ईश्वर को देखना, देखिये आत्म ज्योत ।
ईश्वर का ही अंश वह, जिससे घट उद्योत ।। 6366
कृपा कर जो नाथ ने, तीसरा कथा ध्यान ।
सूक्ष्म ध्यान उसे कहें, उस का करूँ बखान ।। 6367

सभी से सूक्ष्म ईश है, व्यापा रचना मांझ ।
सूक्ष्मतम वही जान लो, अपनी सृष्टि मांझ ॥ 6368
ध्यान उसी का धारते, परम सिद्ध जो लोग ।
उस से आगे है नहीं, कथा कहीं पै योग ॥ 6369
उसी योग को जानिये, समाधि का जो रूप ।
ज्योति-ज्योति समात है, परम रहस यह गूप ॥ 6370
उसी शक्ति के ध्यान में, लीन रहें बहु साध ।
परे न उससे ध्यान है, लें समझ सब साध ॥ 6371
यही अवस्था जानिये, समाधि की मम मीत ।
दीर्घ काल अभ्यास से, इस की हो प्रतीत ॥ 6372
प्रभु का अनुग्रह जानूँ, उत्तम दीना ज्ञान ।
तीन प्रकार के ध्यान का, और समाधि महान ॥ 6373
हठ योग की सीख को, राज योग का ज्ञान ।
दिया अनुग्रह कर प्रभु, भया जगत कल्याण ॥ 6374
योग के दोय रूप हैं, राज व हठ पहचान ।
जो दोनों में विज्ञ हो, योगी वही पहचान ॥ 6375
वृत्तियों का निरोध ही, राज योग कहलाय ।
बोध कराया नाथ ने, जो वृत्ति समुदाय ॥ 6376
[1] वृत्तियां पांच प्रकार की, कलिष्टाकलिष्ट पहचान ।
अनुग्रह करके नाथ ने, सब का दीना ज्ञान ॥ 6377

---

1. पांच प्रकार की वृत्तियां : 1. प्रमाण, 2. विपर्यय, 3. विकल्प, 4. निद्रा, 5. स्मृति

वृत्तियों के निरोध पर, होता आत्म ज्ञान ।
द्रष्टा के ही रूप में, चित्त स्थित हो जान ।। 6378
नित्य करे अभ्यास जो, चित्त स्थित हो पाय ।
बिन अभ्यास प्रभु कथा, और न कोइ उपाय ।। 6379
अभ्यास संग वैराग्य, चाहिए मेरे मीत ।
शिक्षा प्रभु की धार लो, दृढ़तम अपने चीत ।। 6380
जोय यत्न साधक करे, चित्त स्थिरता हेत ।
वह अभ्यास कहलाये, सिद्धि पाने हेत ।। 6381
दीर्घकाल और निरन्तर, श्रद्धा के वा साथ ।
जो करता अभ्यास को, सिद्धि लागे हाथ ।। 6382
तीन नियम ये हैं कहे, योग करन के हेत ।
इन नियमों के आश्रय, मिलत सिद्धि अभिप्रेत ।। 6383
तीन नियम के आश्रय, दृढ़तम हो अभ्यास ।
करें उलंघन नेम का, मिले न कुछ भी खास ।। 6384
इस विध दीर्घ काल जो, करता है अभ्यास ।
दृढ़ भूमि उसे योग की, प्राप्ति की हो आस ।। 6385
इस विध दीना ज्ञान प्रभु, साधकों को इक साथ ।
सचेत करें सब जनन को, अनुग्रह कर के नाथ ।। 6386
जन्म जन्म की साधना, करती जन को सिद्ध ।
संशय इस में है नहीं, शास्त्रों में प्रसिद्ध ।। 6387
श्रद्धा को हम जान लें, यह है प्राण समान ।
बिन प्राण न जान जिमि, न बिन श्रद्धा ध्यान ।। 6388

अभ्यास व वैराग्य का, संग अटूट हि मित्त ।
बिन वैराग्य न हो सकें, अभ्यास में प्रवृत्त ।। 6389
इच्छा जिस की न भये, विषय किसी में मीत ।
देखा वा जो हो सुना, उसमें रमे न चीत ।। 6390
ज्ञान प्रभु का जब मिले, मन हो परम विरक्त ।
पर वैरागी जगत में, कभी न हो आसक्त ।। 6391
अभ्यास व वैराग्य से, हो समाधिस्थ चित्त ।
हो ज्ञान वहां विविध विधि, साधक पावें नित्त ।। 6392
समाधि संप्रज्ञात यह, समस्त ज्ञान की खान ।
इस स्थिति को पाय कर, रहस सभी खुल जान ।। 6393
संप्रज्ञात समाधि में, रमें ज्ञान के खेत ।
मन का वासा ज्ञान में, जाने जो अभिप्रेत ।। 6394
आगे संप्रज्ञात से, और स्थिति लो जान ।
इच्छा जो हो ज्ञान की, उस का भी अवसान ।। 6395
मन में जो संस्कार हों, बस वही रह पायें ।
निरोध वृत्तिन सर्व का, असंप्रज्ञात कहाय ।। 6396
कैसा अनुग्रह नाथ का, समाधि का जो भेद ।
सरल रीत से कथ दिया, जन समझे बिन खेद ।। 6397
प्रभु ने दीना जगत को, योग का पूर्ण ज्ञान ।
जग भूला था योग को, प्रभु जी दीना आन ।। 6398
बात रहस की नाथ जी, है बतलाई मीत ।
श्रद्धा के आधार बिना, समाधिस्थ हो न चीत ।। 6399

वेग श्रद्धा का सुनो, यदि मंद वह होय ।
सिद्धि में विलंभ होय, संशय लेश न कोय ।। 6400
श्रद्धा के अनुरूप ही, होय जीव की गत ।
यह जो मत हम ने कथा, यही ऋषियन का मत ।। 6401
असंप्रज्ञात समाधि को, प्राप्त करना दुश्वार ।
मन का क्रमिक विकास हो, तभी लगे जन पार ।। 6402
विकास के हैं पग कथे, भूमि उन का नाम ।
उन भूमियों की प्राप्ति, साधक का होय काम ।। 6403
सात भूमि जो योग की, लेता जन जो जीत ।
उसे ही प्राप्ति हो सकत, असंप्रज्ञात की मीत ।। 6404
पहली भूमि जानिये, 'शुभेच्छा' उस का नाम ।
'विचारणा' दूसर होय, उस बिन बने न काम ।। 6405
तीजी है 'तनुमानसी', 'सत्वोपत्ति' चतुर्थ ।
पंचम है 'असंसक्ति', पावे जन समर्थ ।। 6406
छटी 'पदार्था भावना', सप्तम 'तुर्यगा' मान ।
इन सातों को लांघ कर, योगी बने पुमान ।। 6407
[1] इन भूमिन पै बिन चढ़े, योगी होय न कोय ।
कितना भी जन कुछ करे, निष्फल साधन होय ।। 6408
प्रभु अनुग्रह कर किया, इन सभी को स्पष्ट ।
जिस से मन की भ्रांती, होवे पूर्ण नष्ट ।। 6409

---

1. योग की सात भूमियां : 1. शुभेच्छा, 2. विचारणा, 3. तनुमानसी, 4. सत्वापति 5. असंसक्ति, 6. पदार्था भावना, 7. तुर्यगा

'शुभेच्छा भूमि' जानिये, चित्त हो जहां शुद्ध ।
इच्छा जो मन ऊपजे, होय न लेश अशुद्ध ।। 6410
'विचारणा' भूमि है कथी, विचार में शुभ भाव ।
सात्विकी बुद्धि में कभी, हो न अशुभ प्रभाव ।। 6411
जानो दो सोपान ये, मुख्य योग आधार ।
इन बिन जन न चढ़ सके, मोक्ष के उच्च द्वार ।। 6412
मन की इच्छा जान लो, इक अनन्त समुदाय ।
उन पर अंकुश डालना, 'तनु मानसी' कहाय ।। 6413
असत जगत में मन रमे, सत्य का न हो ज्ञान ।
मन जब इच्छा त्याग दे, होय सत्य का भान ।। 6414
'सत्वापत्ति' भूमि यह, यत्न से रहना स्थिर ।
अति कठिन यहां ठहरना, इस का तल अस्थिर ।। 6415
सर्वभाव से सत्य पर, जो जन रहत ज़रूर ।
'सत्वापत्ति' में बसत, मोक्ष न उस को दूर ।। 6416
आगे की जो भूमि है, है असंसक्ति नाम ।
उस पर वह ही चढ़ सके, जग से जो उपराम ।। 6417
उदासीन जग से सदा, जल में कमल समान ।
रहता है वह जगत में, जग का पर न भान ।। 6418
छटवीं भूमि अब कहें, भूमियों में प्रसिद्ध ।
भूमि 'पदार्था भावना' पाले योगी सिद्ध ।। 6419
द्रव्य सभी जो जगत के, पदार्थ जिन का नाम ।
लागें उस को धूल सब, पदार्थों से न काम ।। 6420

भूमि 'पदार्था भावना', मान्य योग में खास ।
योगी सब कुछ छोड़ कर, रखता मोक्ष की आस ।। 6421
जो योगी ऐसा भये, पाता मोक्ष द्वार ।
'तुर्यगा' भूमि में रमें, लौटत न संसार ।। 6422
जन वह जीवन मुक्त हो, "तुर्यग" उस की टेक ।
इस भूमि में पहुंचता, कोटिन में को एक ।। 6423
सप्त भूमिन के ज्ञान को, दीना प्रभुजी आप ।
इन भूमियों की प्राप्ति, से ही मिटत संताप ।। 6424
असंप्रज्ञात समाधि को, जो जन पाना चाहे ।
सप्तभूमिन की प्राप्ति, से ही सिद्धि पाये ।। 6425
यह सब चित्त अधीन है, प्रभुजी कीन स्पष्ट ।
क्षीण वृत्ति जब चित्त भये, भव तभी हो नष्ट ।। 6426
यह चित्त जब ग्रहण करे, किसी ग्राह्य को मित्त ।
'समापत्ति' उस योग को, कहते इसी निमित्त ।। 6427
हो शब्दादि संकीर्णा, जिस काल वह चित्त ।
'सवितर्का' समापत्ति, कहलाती है मित्त ।। 6428
गूढ़ ज्ञान यह नाथ जी, स्पष्ट कीन है आप ।
परम अनुग्रह नाथ का, नष्ट भया संताप ।। 6429
इस से भी जो आगली, अवस्था सुविख्यात ।
भूले चित्त स्वत्व को, वह है असंप्रज्ञात ।। 6430
'सविचार' 'निर्विचार में', यही भेद लो जान ।
'समापत्ति' के ये भेद, गूढ़ बात पहचान ।। 6431

सूक्ष्म विषय इन में भये, यह बात लो जान ।
चार ये समापत्तियां, 'सबीज समाधि' मान ।। 6432
निर्विचार समाधि में, यह है गुण विशेष ।
'ऋतंभरा प्रज्ञा' मिलत है, जिस में ज्ञान निशेष ।। 6433
निर्विचार के ज्ञान का, भी जब होय निरोध ।
निर्बीज समाधि होत वह, जानें पुरुष सुबोध ।। 6434
निर्बीज समाधि हो जब, जन्म मरण का हान ।
इस सर्वोत्तम ज्ञान का, प्रभुजी दीना दान ।। 6435
सर्वोत्तम योग बताय कर, विरला जो कर पाय ।
सर्वसाधारण के लिए, नाथ पुनः कथ पाय ।। 6436
कीन अनुग्रह नाथ जी, सरल बताया योग ।
क्रिया–योग जिस को कहें, कर सकें सब लोग ।। 6437
सरल विधि इस योग में, 'तप' को कीन बखान ।
'स्वाध्याय' के संग कथा, 'ईश्वर का प्रणिधान' ।। 6438
दान महाप्रभु राम का, है जगत को मीत ।
सरल कीन है योग को, कठिन थी जिस की रीत ।। 6439
'स्वाध्याय' हेतु ग्रंथ भी, दीना उन लिखवाय ।
सुगम भया सब जनन को, योग का यह उपाय ।। 6440
इन्द्रिय निग्रह जन करें, यह ही 'तप कहलाय' ।
कठिन तपस्या नहीं कही, नाथ कृपा कर पाय ।। 6441
चित्त में करे स्मरण जन, प्रभु का दिव स्वरूप ।
'ईश्वर के प्रणिधान' का, सरल बताया रूप ।। 6442

'क्रिया योग' का फल बहुत, प्रभु बतलाया साथ ।
क्लेश इस से दूर होंय, कथन किया है नाथ ।। 6443

[1] क्लेश पांच प्रकार के, विघ्नकारी प्रसिद्ध ।
दूर होंय जब वे सभी, हो साधक तब सिद्ध ।। 6444

क्लेश पांच जो हैं कथे, जब तक वे मन बीच ।
हो लाभ नहीं मोक्ष का, हो न योग समीच ।। 6445

अविद्या प्रथम क्लेश है, अस्मिता दूजा जान ।
राग द्वेष और पंचम, अभिनिवेश पहचान ।। 6446

अविद्या से ही ऊपजें, अन्य चार प्रकार ।
गुरु कृपा से दूर भयें, योग करें नर नार ।। 6447

जीवन के इस वृक्ष का, क्लेश मूल लो जान ।
जाति आयु सब भोग जो, फल उस के पहचान ।। 6448

अतः बताया नाथ ने, करे क्रिया जन योग ।
क्लेशों से इमि बच सके, फंसे न भव के रोग ।। 6449

यह अनुग्रह नाथ का, कीना सबन सचेत ।
भव में ये सब आय कर, पड़े हैं जन अचेत ।। 6450

अविद्या के ही कारण, है बंधन में जीव ।
बंधन में वह किमि पड़ा, समस्या यह अजीब ।। 6451

ईश्वर बिन सब विश्व, लिप्त अविद्या बीच ।
इस ज्ञान को समझते, बुद्धिमान समीच ।। 6452

---

1. क्लेश के पांच प्रकार : 1. अविद्या, 2. अस्मिता, 3. राग, 4. द्वेष, 5. अभिनिवेश

जो जन्मा इस जगत में, पड़े अविद्या कूप ।
उसे निकासे सद्गुरु, जो योगिन के भूप ।। 6453
इस प्रकार है नाथ ने, सुगम बताया पथ ।
गुरु शरण जन जाय कर, गहे मोक्ष का पथ ।। 6454
समझे अनुग्रह नाथ का, जन सुघड़ जो होय ।
गुरु शरण को ग्रहण कर, मग मोक्ष का गोय ।। 6455
गुरु शरण में आय कर, पाले यम वा नेम ।
इस मार्ग पर जो चले, मिले योग वा क्षेम ।। 6456
यम नेम जो प्रभु कथे, सार्व भौम हैं मीत ।
जाति देश व काल का, भेद न इन में चीत ।। 6457
प्राणों से भी प्रभु कथा, मन का रिश्ता जोय ।
प्राणों के अभ्यास से, मन एकाग्र होय ।। 6458
प्राणों की पर साधना, गहे गुरु से भाई ।
देखा देखी जो करे, हो उसे दुखदाई ।। 6459
मन की जो एकाग्रता, उस का नाम ध्यान ।
प्रथम धारणा जन करे, पाछे लागे ध्यान ।। 6460
स्पष्ट किया है नाथ ने, इन दोनों का भेद ।
धारणा से ध्यान किमि, जन पावे बिन खेद ।। 6461
[1] तीन वस्तु प्रधान हैं, मध्य धारणा गूप ।
एक लक्ष्य दूजा यत्न, तीजा निज स्वरूप ।। 6462

1. धारणा में ध्याता, ध्येय और यत्न तीनों प्रधान होते हैं ।

[1] बिन यत्न जभी धारणा, में टिके मन मीत ।
'ध्यान' उसी का नाम है, हो तुझे प्रतीत ।। 6463
भूल जाये जब ध्यान में, अपना भी स्वरूप ।
समाधि अवस्था जानिये, योग का उत्तम रूप ।। 6464
कृपा कर प्रभु और भी, बतलाई है बात ।
सब से ऊपर इक स्थिति, है 'संयम' वह तात ।। 6465
योग की जो विभूतियां, योग शास्त्र कथ पाय ।
संयमी योगी वे सभी, अपने वश ले आय ।। 6466
संयमी संयम पाय कर, रहत संयम में तात ।
विभूति उस के वश रहे, करे न दृष्टि पात ।। 6467
कौन-कौन विभूतियां, आवें योगी पास ।
संक्षेप से प्रभु ने दीन कथ, उन में से कुछ खास ।। 6468
जग की सकल विभूतियां, कैवल्य का व लाभ ।
योगी जन में जान लो, पुरुषोत्तम अमिताभ ।। 6469
अद्भुत यह विज्ञान है, योगी जन के पास ।
ऐसी शक्ति मिलत तभी, जभी दीर्घ अभ्यास ।। 6470
विभूतियों का ज्ञान जो, प्रभु दीना खुद आन ।
जिमि जाने यह जगत सब, विद्या योग महान ।। 6471
यह अनुग्रह नाथ का, है जगती पै मीत ।
भूल गया था ज्ञान जो, आ करायी प्रतीत ।। 6472

---

1. जब यत्न के बिना मन एकाग्र होने लगता है, तो वह ध्यान की अवस्था होती है ।

'संयम' को जब साध कर, योगी होय सर्वज्ञ ।
उस से गुप्त रहे न कुछ, ईश्वर सम हो विज्ञ ।। 6473
भूत भविष्य का ज्ञान हो, पूर्व जन्म का ज्ञान ।
पर चित्त का ज्ञान उसे, योगी पुरुष महान ।। 6474
हस्ती का बल ला सके, वस्तु दूर की जान ।
अन्तर्धान हो सकत, योगी पुरुष महान ।। 6475
निवृत्ति भूख प्यास की, ताराव्यूह का ज्ञान ।
रचना काय व्यूह की, योगी पुरुष महान ।। 6476
सिद्धों का साक्षात हो, सब तरह का ज्ञान ।
आत्मा को पहचानता, योगी पुरुष महान ।। 6477
दिव्य ध्वनि योगी सुने, दिव्य स्पर्श कर ज्ञान ।
दिव्य दर्श उसको भये, योगी पुरुष महान ।। 6478
दिव्य स्वादों को चखे, दिव्य गंध का भान ।
प्रवेशे पर शरीर में, योगी पुरुष महान ।। 6479
भूमि ऊपर चल सकत, भू छूए बिन जान ।
कंटक आदि से बचत, योगी पुरुष महान ।। 6480
देह तेज से दीप्त हो, दिव्य तेज लो जान ।
गगन गमन की सिद्धि हो, योगी पुरुष महान ।। 6481
पंच भूत पै हो विजय, अणिमादि पहचान ।
वज्र समान शरीर हो, योगी पुरुष महान ।। 6482
एक काल में कर सकत, बहु देह निर्माण ।
कथन में सब न आ सकत, योगी पुरुष महान ।। 6483

और अनेकों सिद्धियां, होवें योगी पास ।
प्रदर्शन उन का न करत, योगी का गुण खास ।। 6484
सब विभूतियां योग की, संयम से हों सिद्ध ।
बिना संयम न मिल सकें, शास्त्रन में प्रसिद्ध ।। 6485
बिन साधन न सिद्ध हो, कुछ भी मेरे मित्त ।
'संयम' हेत जो साधन, अति कठिन लो चित्त ।। 6486
हर इक को न मिलत है, सिद्धिन का यह दान ।
यह सदा रहे चित्त में, शास्त्रन का प्रमाण ।। 6487
यौगिक सकल विभूतियां, उन का है न अन्त ।
प्रकट न उन को वे करें, योगी जन जो सन्त ।। 6488
लोकोत्तर ये शक्तियां, योगी जन के पास ।
योगी करत प्राप्त है, कर कठिन अभ्यास ।। 6489
योगी के घट सिद्धियां, सुगंध जिमि फुल माँझ ।
लेश नहीं अभिमान है, दिखावें नहीं जग माँझ ।। 6490
योगी में जो सिद्धियां, ईश शक्ति का रूप ।
ईश्वर से वे प्राप्त हों, योगी ईश्वर रूप ।। 6491
बात हि अन्तिम योग की, प्रभु बतलाई आन ।
मोक्ष लाभ इससे भये, शास्त्रन का फरमान ।। 6492
विभूतिन के प्रयोग से, भी मोक्ष मिल पाये ।
स्पष्ट बात यह नाथ जी, हैं स्वयं कथ पाये ।। 6493
सिद्धि मुक्ति हेत जिमि, यह बताया राम ।
वासना के अभाव पर, ही बने यह काम ।। 6494

चित्त बहु निर्माण कर, भोगत सब संस्कार ।
इसी जन्म में ढ़ोत वह, बहु जन्मों का भार ।। 6495
इस विध संचित कर्म का, सञ्चित जो भण्डार ।
क्षय करता इक जन्म में, लक्ष्य मोक्ष का धार ।। 6496
क्षीण जभी संस्कार हों, होय चित्त का अन्त ।
एक जन्म में इस तरह, भोगे कर्म अनन्त ।। 6497
नूतन योग ज्ञान यह, दीना जग को आन ।
महा अनुग्रह जान लो, जग पै कीन भगवान ।। 6498
महा ग्रंथ की रचन कर, पूर्ण योग बताय ।
योग सनातन ज्ञान का, संग्रह हैं कर पाय ।। 6499
अछूता रहा न योग का, विषय एक भी मीत ।
सरल रूप में रच दिया, अनोखा इक संगीत ।। 6500
प्रभु अनुग्रह स्मरण कर, हो रोमाञ्चित दास ।
मूक करें वाचाल वह, मेरा यह विश्वास ।। 6501
प्रभु प्रचारा आय कर, सकल जगत में योग ।
धन्य भये इस योग से, अनेकों जग के लोग ।। 6502
अल्पायु में नाथ जी, त्याग के अमृतसार ।
देशाटन करने लगे, करते योग प्रचार ।। 6503
दक्षिण पूर्व उत्तर में, जाय अनेकों स्थान ।
जिज्ञासु जन का उन किया, योग सिखला कल्याण ।। 6504
नरबदा तट पर तपरत, जो थे साध महान ।
अनुग्रह उन पर कर दिया, दे दर्शन भगवान ।। 6505

नासिक में रच देह को, कीना नगर सनाथ ।
अनेकों जनों की कामना, की पूर्ण इक साथ ।। 6506
पुष्कर राज में जाकर, कर अनुग्रह पाये ।
उद्दण्डिन को दे दण्ड वे, थल शुद्ध कर पाये ।। 6507
पूर्व दिशा को जब चले, तारे भक्त अनेक ।
जन आये जो शरण में, भक्ति पायी प्रत्येक ।। 6508
ध्यान समाधि भी मिली, कई जनों को मीत ।
नाथ अनुग्रह जब भये, हो समाधिस्थ चीत ।। 6509
खास अनुग्रह था भया, राम रती पर मीत ।
कुलटा से देवी भयी, भटकत जो संग मीत ।। 6510
भ्रात पिता उस नार के, चले थे डूबन गंग ।
रक्षा उन की कीन प्रभु, अनुग्रह का प्रसंग ।। 6511
नाग जने हत्यारे, देन बली को त्यार ।
लाये प्रभु को मारने, प्रभु मन दया अपार ।। 6512
दुःखी देख इक नार को, जिस के तन थी पीड़ ।
उस काल अनुग्रह कीना, भयी दूर सब पीड़ ।। 6513
अनुग्रह की यह ऊपमा, मिलत न किसी भी ठौर ।
अनुग्रह के भण्डार हैं, उन जैसा न और ।। 6514
तिल सेवा जो करत है, उस पै होंय दयाल ।
छाता रामा ने किया, भये दर्शन तत्काल ।। 6515
भूले थे जन योग को, चलते उलटी राह ।
योग मार्ग दिखला कर, कृपा करत अथाह ।। 6516

मारवाड़ के सेठ जो, नास्तिक भये अपार ।
हरिराम को भेज कर, अनुग्रह कीन अपार ।। 6517
योग धर्म प्रचारते, जहां भी जाते नाथ ।
संग शिष्यन के प्रभु, चलते कण्टक पाथ ।। 6518
साधु साधवी जो मिलत, प्रभु बताते योग ।
भ्रांति करते दूर थे, जो जिस के था योग ।। 6519
राजा रणसिंह था पड़ा, काले जादू मांझ ।
प्रभु का दर्शन पायकर, लगा योग के मांझ ।। 6520
उस राजा का जो गुरु, रहता जंगल मांझ ।
प्रभु गये उस पास जब, गिरा चरण के मांझ ।। 6521
प्रभु गये नेपाल में, वहां प्रचारा योग ।
राजा का संबंधी, था ग्रस्त में रोग ।। 6522
शफा दीनी उस को प्रभु, प्रसन्न भये सब लोग ।
तब सत्कारा सबन ने, वहां भी शिव का योग ।। 6523
सुमेरु पर्वत जायकर, महा प्रभु के पास ।
समक्ष सबन के नाथ ने, कथे वचन थे खास ।। 6524
महाप्रभु प्रसन्न भये, राम मिली आशीश ।
जग में योग प्रचारो, यह सब की आशीश ।। 6525
बहु प्रचारा योग उन, हरिद्वार में आय ।
कीन आश्रम निर्माण, अमृतसर में जाय ।। 6526
कई नगरों में राम ने, स्वयं कीना प्रचार ।
ऋषिकेश व लाहौर में, योग का हो उद्धार ।। 6527

मुरादाबाद प्रभु के, भये भक्त अनेक ।
सहारनपुर भी थे बहु, श्रद्धालु एक से एक ।। 6528
और अनेक स्थान हैं, जहां जाते थे नाथ ।
चांदपुरी विशेष इक, प्रभु ने कीनि सनाथ ।। 6529
प्रसिद्ध ओकाड़ा मण्डी, जहां पै भक्त अनेक ।
श्रद्धावान वे सब जन, करत योग हर एक ।। 6530
लीला कीनी नाथ ने, स्थूल देह को त्याग ।
सूक्ष्म रचा उन देह निज, जो प्रचार में लाग ।। 6531
निमित्त बनाय जनन को, करें स्वयं प्रचार ।
सर्वत्र जाते नाथ जी, देह सूक्ष्म ही धार ।। 6532
उन के दिव्य स्वरूप को, पहचानें न सब लोग ।
रह गुप्त ही नाथ जी, प्रचार रहे हैं योग ।। 6533
कानपुर मद्रास भी, मच्छली पट्टम जाय ।
कुरुक्षेत्र आदि अनेक थल, प्रचार प्रभु कर पाय ।। 6534
दिल्ली और कलकत्ता, मुम्बई भी जाय ।
योग की शिक्षा नाथ जी, सर्वत्र हैं दे पाय ।। 6535
होश्यार पुर में नाथ जी, लीना एक स्थान ।
आश्रम की उन नींव रख, करते जन कल्याण ।। 6536
नित्य सिखावें योग वे, रोग मिटावें साथ ।
ग्रहण करें जन सीख को, योग कर भयें सनाथ ।। 6537
हठ योग की सीख दें, राजयोग भी साथ ।
भक्ति योग बतलावें, जनता होत सनाथ ।। 6538

यह त्रिवेणी योग की, बहत रहत दिन रात ।
कइयों को प्रभु दर्शन, देते हैं साक्षात ।। 6539
भाग्यशाली वे हैं जन, दर्शन करते जोय ।
भक्तन को बतलात वे, निज अनुभव जो होय ।। 6540
प्रभु से शिक्षा पायकर, जा जन अन्य स्थान ।
प्रभु शक्ति से कर रहे, जनता का कल्याण ।। 6541
करें करावें नाथ जी, किसी को कर निमित्त ।
निमित्त होय निमित्त ही, करें प्रभु हे मित्त ।। 6542
निमित्त कर्ता न बन सके, यदि करे अहंकार ।
प्रभु शक्ति से रिक्त हो, हो निष्फल सब कार ।। 6543
होश्यारपुर में प्रभु रह, करें शक्ति प्रसार ।
देश विदेशी हो रहा, बहुत योग प्रचार ।। 6544
शक्ती का प्रसार क्या, आप पधारें नाथ ।
भक्तन को दे दर्शन, उन्हें करें सनाथ ।। 6545
ग्राम ग्राम में जायकर, रह जनता के बीच ।
योग प्रचारें खुद प्रभु, शिक्षा देंय समीच ।। 6546
बहुत नगर हैं पा रहे, प्रभु की दया अपार ।
लुध्याना व फिल्लौर में, भया योग प्रसार ।। 6547
नवांशहर व बंगा , अछूते रहे न लेश ।
पटियाला व मलोट भी, पाई दया विशेष ।। 6548
प्रभु शरणी इक नाम है, जान जालंधर मीत ।
भक्त प्रभु के वहां रहें, करें योग से प्रीत ।। 6549

ग्रामों में यदि नाम लें, जो पंजाब के बीच ।
लिद्दर कलां प्रमुख है, सुन्दर खेतों बीच ।। 6550
घर घर में वहां योग होत, शाम प्रातः मीत ।
'प्रभु प्रभु' सभी मुख में, भक्ति सब के चीत ।। 6551
प्रति वर्ष वहां होत है, योग सम्मेलन तात ।
दूर दूर से आय कर, भक्त रहें दिन रात ।। 6552
उस के पास इक और है, गांव लैंहडर जान ।
नव युवक उस गाँव के, योगी निपुण महान ।। 6553
अनुग्रह जानो नाथ का, ग्रामीन जनों में जाय ।
शिक्षा उन को दे रहे, और निपुण कर पाय ।। 6554
और अनेकों ग्राम हैं, इसी क्षेत्र में मीत ।
जहां जनन की है बहु, योग साधन में प्रीत ।। 6555
योग साधन वे करत हैं, और प्रभु को याद ।
प्रभु दया हैं कर रहे, भक्तों पर निर्बाध ।। 6556
यह तो बात पंजाब की, जहां लीना अवतार ।
हिमाचल में भी नाथ ने, अनुग्रह कीन अपार ।। 6557
बड़े-बड़े कुछ नगर हैं, कथन करूं मैं नाम ।
मानों वहां प्रभु बस रहे, कृपालु सुख के धाम ।। 6558
हिमाचल तो गुरु भूमि है, रामलाल की मीत ।
प्रभु राम की उस भूमि से, जान विशेष प्रीत ।। 6559
शिमला आदि कुछ नगर हैं, हिमाचल के प्रदेश ।
उनका वर्णन मैं करूँ, अनुग्रह प्रभु विशेष ।। 6560

शिमला में हम सुनत हैं, घर घर प्रभु का नाम ।
कीर्तन प्रभु के नाम का, होता प्रातः शाम ।। 6561
और नगर जहां योग का, करें प्रभु प्रचार ।
हमीरपुर में हो रहा, बहुत योग प्रसार ।। 6562
प्रभु भजन व कीर्तन, वा रामायण पाठ ।
योग साधन सब जन करें, धुन एक पहर आठ ।। 6563
संग हमीर जो ग्राम हैं, है भक्तों का वास ।
वहां तो देखन योग्य है, प्रभु चरणि विश्वास ।। 6564
नाम प्रभु का श्रवण कर, भक्त इमि सुधि खोंय ।
देह की हो न लेश सुध, मूर्छित वत तन होंय ।। 6565
प्रभु चरणों में प्रेम की, न ऐसी मिले मसाल ।
घंटों ही जन पड़ा रहे, सके न तन समहाल ।। 6566
ऐसे ग्राम अनेक हैं, लेंय न सब के नाम ।
कुछ एक के नाम से, पूर्ण हो यह काम ।। 6567
टिक्कर खतरियां ग्राम है, बहु ग्रामों के बीच ।
वहां पर जो प्रभु भक्त हैं, करें सब योग समीच ।। 6568
हो सम्मेलन ग्राम में, आ जुटें बहु लोग ।
पाठ करें रामायण का, दिखावें साधन योग ।। 6569
पास ग्राम दो और हैं, डुंगी डिम्मी नाम ।
बहु श्रद्धालु जन वहां, हर क्षण भजते राम ।। 6570
ताल ग्राम भी पास है, भोटा भी उस पास ।
इन दोनों में होत हैं, योग के साधन खास ।। 6571

प्रभु अनुगह हो रहा, सब थां मेरे मीत ।
प्रभु कृपा वहां करत हैं, जिन की प्रभु पग प्रीत ।। 6572
वहां से परे कुछ हटि कर, सुन औरों के नाम ।
झिन्निकर को सब जानते, वह विशेष इक ग्राम ।। 6573
कई ग्रामों के मार्ग, मिलें वहां पै आय ।
कुछ भक्त उस ग्राम के, योग सीख हैं पाय ।। 6574
प्रचार करें वे योग का, इधर उधर को जाय ।
प्रभु कृपा के पात्र वे, बन इसी विध पाय ।। 6575
ग्राम इक और प्रसिद्ध है, टौनी देवी नाम ।
भक्त वहां हैं बहुत से, कहें न उनके नाम ।। 6576
शिक्षा देते योग की, जो भी जन चलि आय ।
कीर्तन करते योग का, सब को जो सुहाय ।। 6577
झोखर और वलडूक भी, सुन्दर हैं ये ग्राम ।
कीर्तन वहां पै होत है, काल प्रातः शाम ।। 6578
एक ग्राम का नाम लें, गुआरडू जो प्रसिद्ध ।
ध्यान करें वहां जन बहु, पद्मासन ला सिद्ध ।। 6579
ग्राम खण्डेरा जान लो, और रैल भी एक ।
वहां श्रद्धालु भक्त जन, भजन करे प्रत्येक ।। 6580
यह सब कृपा नाथ की, ग्राम ग्राम के लोग ।
अपने अपने स्थान पर, नित्य करें सब योग ।। 6581
दो ग्राम वहां और हैं, संगोह उन में एक ।
अवाह देवी दूसरा, भक्त वहां कुछ एक ।। 6582

नादौन और घानेटा, कसबे हैं मशहूर ।
उन के ग्राम समीप बहु, करें जन योग जरूर ।। 6583
बड़सर में भी बहु रहें, योग करें जो लोग ।
उस के पास ग्राम कुछ, होता जहां है योग ।। 6584
प्रभु अनुग्रह करत हैं, ग्राम ग्राम में जाय ।
निराकार में ही प्रभु, लेते जन अपनाय ।। 6585
तरकवाड़ी और भोरंज, दो ग्राम लो जान ।
और ग्राम भी हैं जहां, योग का है बहु मान ।। 6586
सधरैन उन में एक है, भक्त जनों का ग्राम ।
रामायण का पाठ जहां, होता प्रातः शाम ।। 6587
ग्राम जो है 'अहुल' का, 'लगदेवी' है पास ।
देवी का वहां वास है, करें योग जन खास ।। 6588
करोट ग्राम प्रसिद्ध है, सुजानपुर है साथ ।
दोनों में ही योग कर, जनता होत सनाथ ।। 6589
सर्वत्र हिम प्रदेश में, राम फैलाया योग ।
स्थल रहा न एक जहां, योग करें न लोग ।। 6590
सोलन में करें योग जन, उठ कर प्रातः काल ।
रोग शोक से मुक्त हो, सुखी रहें सब काल ।। 6591
चायल में भी योग का, है बहुत प्रचार ।
ग्राम ग्राम में जनन का, हो रहा उपकार ।। 6592
मण्डी नगरी खास है, धर्म परायण देश ।
वहां के वासी योग को, करते उठ हमेश ।। 6593

सर्वत्र ही है हो रहा, घर घर योग प्रचार ।
स्वयं ही हैं कर रहे, प्रभु जी जगदाधार ।। 6594
यह अनुग्रह नाथ का, स्वयं रह जग बीच ।
ऋषिजनों की विद्या योग, फैला रहे समीच ।। 6595
मण्डी डिस्ट्रिक्ट में नगर, और भी हैं कुछ एक ।
जहां योग बहु हो रहा, जन गण करत प्रत्येक ।। 6596
सुन्दर नगर एक है, सुन्दर अति स्थान ।
घर घर योग है हो रहा, स्कूलों में भी जान ।। 6597
वहां से यह प्रसार तो, ग्राम ग्राम में होय ।
प्रभु कृपा से शौक से, करत योग हर कोय ।। 6598
पण्डोह नगर भी है वहां, भक्त बहु रह पायें ।
रत रहें प्रभु भक्ति में, और योग कर पायें ।। 6599
सरकाघाट तहसील में, कुछ ग्राम हैं खास ।
प्रभु भक्त जहां बसत हैं, प्रीत योग में खास ।। 6600
सरी और घारवासरा, दो के हैं ये नाम ।
रोज़ योग वहां होत है, और भजें जन राम ।। 6601
बिलासपुर में योग का, है बहुत प्रचार ।
प्रभु स्वयं ही करत हैं, योग का विस्तार ।। 6602
जन घुमारवीं में बहु, नित्य करें हैं योग ।
आस पास के गांव भी, रोज करें जन योग ।। 6603
कोज़ा में कुछ जन बसें, वे भी करते योग ।
दुर्गम थल वह है बड़ा, कम जायें वहां लोग ।। 6604

कांगड़ा में भी योग का, है न कम प्रचार ।
नित्य करें जन योग को, श्रद्धा मन में धार ।। 6605
नूरपुर तहसील में, बस पायें बहु लोग ।
अनन्य भक्त वे नाथ के, उन्हें प्रिय है योग ।। 6606
शाहपुर में भी बसें, योग प्रेमी लोग ।
प्रभु भक्ति के साथ ही, नित्य करें वे योग ।। 6607
देहरा की तहसील में, ऐसे अनेकों लोग ।
जिन्हें प्रभु पग प्रेम है, और सीखाते योग ।। 6608
धर्मशाला विशेष है, नगर वहां लो जान ।
पनप रहा वहां योग है, प्रभु कृपा से मान ।। 6609
कुछ ग्राम विशेष हैं, जहां श्रद्धालु लोग ।
प्रचार में वे रत रहें, करें नित्य ही योग ।। 6610
कुठमां उन में एक है, निहाड़ दूसर जान ।
बरनाली जान तीसरा, रेहलू चौथा मान ।। 6611
और भी कई ग्राम हैं, रहें भक्त इक साथ ।
स्वयं करें वे योग को, और करावें साथ ।। 6612
दाहड़ी एक ग्राम है, धर्मशाला के साथ ।
वहां भी प्रभु ने कर दिये, सज्जन कई सनाथ ।। 6613
शिमला की उपबस्तियां, उन में बहु प्रचार ।
प्रभु कृपा से हो रहा, सब में ही विस्तार ।। 6614
प्रभु स्वयं ही कर रहे, स्थान स्थान प्रचार ।
योग का पुनः उद्धार हो, प्रभु को है स्वीकार ।। 6615

छोटा शिमला एक है, वा कुसुम्पटी एक ।
खलीनी में भी योग को, करत भक्त प्रत्येक ।। 6616
अरकी में भी हो रहा, समुचित योग प्रचार ।
मिलकर बहु जन करत हैं, वहां योग प्रसार ।। 6617
नया शिमला भी बसा, योग वहां भी होय ।
प्रभु भक्त जो वहां बसें, प्रचार करें मिल सोय ।। 6618
संजौली इक स्थान है, नगरी उत्तर ओर ।
बहु भक्त वहां बसत हैं, योग करें उठ भोर ।। 6619
शोघी में भी बसत हैं, योगी भक्त सुजान ।
प्रभु भक्ति नित करत हैं, कृपा नाथ महान ।। 6620
कुसुम्पटी में जो भक्त हैं, करें योग प्रचार ।
प्रभु की महिम बखानते, उन के शुद्ध विचार ।। 6621
जन शांखली में रहत कुछ, शिक्षा है उन पाई ।
निज रोगों से मुक्त हो, कहें योग सुखदाई ।। 6622
करते साधन योग जन, ढल्ली में लो जान ।
प्रभु प्रेम मन बसत उन, करें प्रभु गुण गान ।। 6623
टूटी कण्डी भक्त जो, प्रभु पग उनकी आस ।
योग भक्ति वे करत हैं, मन में रख विश्वास ।। 6624
विकास नगर में भक्त जन, करें सम्मेलन आन ।
साधन करते नित्य वे, प्रभु आज्ञा को मान ।। 6625
बाज़ार लक्कड़ में कुछ, प्रभु के भक्त सुजान ।
नित्य करें वे साधन, योग के उत्तम जान ।। 6626

सोलन के समीप है, चम्बाघाट स्थान ।
कुछ श्रद्धालु भक्त वहां, करें प्रभु गुण गान ।। 6627
और करें नित्य योग वे, प्रभु की शिक्षा मान ।
योग से उनको लाभ बहु, ऐसा करें बखान ।। 6628
शिमला से जब हम चलें, नारकण्डा की ओर ।
मार्ग में बहु ग्राम हैं, भक्त अनेकों ठौर ।। 6629
ठौर ठौर पै योग का, बहुत वहां प्रचार ।
कर योग वे स्वस्थ रहें, श्रद्धा मन में धार ।। 6630
ठयोग में जब पहुंचते, वहां ग्राम अनेक ।
जहां योग को करत हैं, प्रातः भक्त अनेक ।। 6631
देहा एक ग्राम है, वहां पै भक्त अनेक ।
प्रचार करें वे योग का, उन को प्रभु की टेक ।। 6632
प्रभु प्रभु ही करत हैं, रात दिवस वे लोग ।
मन में उन के है यही, सदा करेंगे योग ।। 6633
ठयोग से जब फिर चलें, आते हैं कई ग्राम ।
जिन में प्रभु के भक्त हैं, भजते प्रभु का नाम ।। 6634
योग दिव्य रामायण का, भी करते हैं पाठ ।
अखण्ड पाठ भी वे करें, और स्वतन्त्र पाठ ।। 6635
फिर मत्याना ग्राम है, राज मार्ग के पास ।
यह प्रसिद्ध स्थान है, बहु ग्राम इस पास ।। 6636
आस पास के गाओं में, रहते हैं जो लोग ।
अनन्य भक्त वे हैं सब, सभी करें वे योग ।। 6637

आते हैं वे मिल सभी, जब सम्मेलन होय ।
सेवा वा सत्संग से, पूर्ण लाभ को गोंय ।। 6638
छोड़ मत्याना को चलें, नारकण्डा की ओर ।
शिखर ऊपर वह स्थल है, अनोखा कुदरत ठौर ।। 6639
हिमछादित रहत वह, वर्ष में कई मास ।
प्रभु भक्त जो वहां बसें, प्रभु पग दृढ विश्वास ।। 6640
प्रभु से सीखा योग जो, करते हैं सब काल ।
उन की भी प्रभु हर समय, रखते सार सम्भाल ।। 6641
उस शिखर के आस पास, बहुत बसें हैं ग्राम ।
जिन में रहते भक्त जन, सदा भजें जो राम ।। 6642
योग रोग को हरत है, यह उन का विश्वास ।
नित्य करें वे योग को, प्रभु चरणि रख आस ।। 6643
दो मार्गों का मेल है, नारकण्डा लो जान ।
इक है थानेधार का, दूजा रामपुर मान ।। 6644
भक्त जनों का वास है, दोनों मार्गों बीच ।
योग मार्ग में सब लगे, करते कर्म समीच ।। 6645
रामपुर की ओर चलें, आवे प्रसिद्ध ग्राम ।
योग करें जहां बहु जन, कुमार सैन है नाम ।। 6646
कुमार सैन के संग में, भक्तों के बहु ग्राम ।
पनप रहा है योग जहां, सिमरें सब प्रभु राम ।। 6647
ज़ार उन में एक है, दूजा डैथल जान ।
शाकली है तीसरा, मधावली भी मान ।। 6648

कनहार उन में एक है, मरनी भी लो जान ।
चेबरी भी ग्राम है, बहुत और भी मान ।। 6649
इन सभी में हो रहा, योग का बहुत प्रचार ।
प्रभु की शिक्षा जान कर, करें साधन नर नार ।। 6650
कुमारसैन से आगे, नौगुली एक स्थान ।
कुमसु एक ग्राम है, पास उसी के जान ।। 6651
इन दोनों में भक्त हैं, सदा करें जो योग ।
प्रभु कृपा से लग रहे, और योग में लोग ।। 6652
नौगुली के तो पास ही, रामपुर है स्थान ।
इस इलाके का बड़ा, विशेष नगर यह जान ।। 6653
करते योग प्रचार हैं, यहां पर भी कुछ लोग ।
आस पास में ग्राम बहु, जहां प्रचलित योग ।। 6654
डंसा और कराली, उन में दो ये ग्राम ।
जहां भक्त प्रभु के बसें, प्रेम से भजते राम ।। 6655
रामपुर से चलि आगे, ज्योरी है इक स्थान ।
है प्रचार वहां योग का, उस पर्वत घिरे स्थान ।। 6656
बहु भक्त उस स्थान पर, करें योग प्रचार ।
योग साधन व भक्ति का, जनावें सब को सार ।। 6657
ज्योरी आगे जब चलें, आवे देश किन्नौर ।
किन्नरों का प्रदेश यह, दुर्गम है यह ठौर ।। 6658
प्रभु अनुग्रह जानिये, धन्य किये ये लोग ।
इतनी दूरी आय कर, इन को दीना योग ।। 6659

दुर्गम इस प्रदेश में, हैं श्रद्धालु लोग ।
नगरी रिकांग पियो में, नित्य करें जन योग ।। 6660
नित्य करें जन योग को, भजन पाठ भी होय ।
अखण्ड पाठ भी वे करें, मासिक सत्संग होय ।। 6661
हठयोग के साधन, नित करें वहां लोग ।
इस विध पनप रहा है, देश किन्नर में योग ।। 6662
और नगरों में योग का, भी है वहां प्रचार ।
भक्ति संग वे योग को, करें सभी स्वीकार ।। 6663
'पांगी' में कुछ भक्त हैं, और 'पूह' में जान ।
'सांगला' में भी कुछ रहें, योग का सब को ज्ञान ।। 6664
और नगर जहां भक्त हैं, 'शांग' 'स्पिल्लोह' मीत ।
'बटूरी' में भी भक्त हैं, योग से सब की प्रीत ।। 6665
'सपनी' भी इक ग्राम है, जहां भक्त रह पायें ।
योग साधन वे सब करें, और प्रभु को ध्यायें ।। 6666
नाथ अनुग्रह करत हैं, सब भक्तों पै मीत ।
योग साधन जो करत हैं, और प्रभु पग प्रीत ।। 6667
नारकण्डा से लेय कर, किन्नौर तलक हे मीत ।
योग फैलाया नाथ ने, निज पग दीनी प्रीत ।। 6668
यह अनुग्रह नाथ का, दुर्गम इस प्रदेश ।
किरपा का प्रवाह इक, बहाया नाथ विशेष ।। 6669
नारकण्डा से जब चलें, थाना धार की ओर ।
वहां अनेकों ग्राम हैं, भक्त रहें सब ठौर ।। 6670

थानेधार में योग का, समुचित है प्रचार ।
नित्य करें जन साधन, श्रद्धा मन में धार ।। 6671
उस से आगे कोट गढ़, जान प्रसिद्ध स्थान ।
बागों की वह भूमि है, उद्यमी जन महान ।। 6672
कोट गढ़ के नाम से, पर्वत वह विख्यात ।
सेबों से जो है ढका, छवि अनोखी तात ।। 6673
उस पर्वत पर जो बसें, प्रिय है उन को योग ।
नित्य प्रातः जागकर, योग करें मिल लोग ।। 6674
कदम कदम पर ग्राम हैं, उस पर्वत पर मीत ।
किस किस का हम नाम लें, सभी न आवें चीत ।। 6675
किरटी एक ग्राम है, शथला भी लो जान ।
शमाथला भी ग्राम इक, सुन्दर सभी स्थान ।। 6676
होता सब में योग है, भक्त उत्साही जान ।
प्रमादी उन में न कोई, न को संशय मान ।। 6677
नित्य करें वे योग को, और करें प्रचार ।
खान पान में शुद्ध रह, राखें शुद्ध व्यवहार ।। 6678
वीरगढ़ इक ग्राम है, शावट उस के पास ।
जन वहां जो बसत हैं, सेवक प्रभु के खास ।। 6679
स्मरण मुझे है आ रहा, एक ग्राम का नाम ।
'झमेरी' उस को कहत हैं, जन हैं भक्त तमाम ।। 6680
इस प्रकार वहां ग्राम तो, बहुत हैं मेरे मीत ।
सौ बात की बात इक, योग से सब की प्रीत ।। 6681

कोटगढ़ के पैर में, है सतलुज का नीर ।
कुल्लू उस के पार है, सतलुज के ही तीर ।। 6682
वहां पर कुछ ग्राम हैं, जहां योग प्रचार ।
'प्लेही धार' 'थलीन' में, भक्ती का प्रसार ।। 6683
हिमाचल के दो स्थान हैं, रोहड़ू व चौपाल ।
पनप रहा जहां योग है, सब का सुधरा हाल ।। 6684
चौपाल में कुछ भक्त हैं, अपना नेम निभायें ।
जाग प्रातः नित्य ही, योग साधन कर पायें ।। 6685
रोहड़ू में जो ग्राम हैं, भक्तों का वहां वास ।
नित्य करें वे योग को, प्रभु चरणि विश्वास ।। 6686
टिक्करी उन में एक है, जहां से हो प्रचार ।
योग का सारे क्षेत्र में, इस से लाभ अपार ।। 6687
अपना लिया बहु जनन ने, योग का जीवन मीत ।
शिक्षा वहां से लेय कर, सब की प्रभु पग प्रीत ।। 6688
और ग्राम प्रसिद्ध इक, शिलादेश है नाम ।
बहुत उँचाई पर बसा, भजें सभी जन राम ।। 6689
डोडा और कवार भी, भक्तों के ये ग्राम ।
योग करें सब जन वहां, संग भजें वे राम ।। 6690
अति दूर वे ग्राम हैं, इन बस्तिन से मीत ।
न कोई गाड़ी जा सके, पांव चलने की रीत ।। 6691
ग्रहण कीन उन योग की, शिक्षा प्रभु से मीत ।
धन्य करें वे जन्म निज, प्रभु पग कर के प्रीत ।। 6692

चड़गांव एक गांव है, वहां पर भी हो योग ।
सत्संग मिल कर सब करें, प्रभु प्रेमी जो लोग ।। 6693
जुब्बल में भी कुछ रहें, प्रभु के भक्त सुजान ।
योग भक्ति से करत हैं, अपना वे कल्याण ।। 6694
दूर दूर में हो रही, कृपा प्रभु की मीत ।
यही अनुग्रह नाथ का, रहे हमारे चीत ।। 6695
मसली संग है जांगला, ग्राम दो लो जान ।
ग्रहण करें जन वहां से, कुछ योग का ज्ञान ।। 6696
ऐसे - ऐसे स्थान पर, जहां जाना दुश्वार ।
भक्त प्रभु के बस रहे, करते निज सुधार ।। 6697
ऊना में जो भक्त हैं, उन का योग महान ।
योग करें वे नित्य ही, दें आश्रम को मान ।। 6698
ग्राम अनेकों में वहां, होता योग प्रचार ।
भक्ति करें संग योग वे, शुद्ध भये आचार ।। 6699
जानो एक ग्राम को, दुलहड़ जिस का नाम ।
बहुत भक्त वहां बसत हैं, भजें योगेश्वर राम ।। 6700
नित्य करें वे योग को, आसन व षट्कर्म ।
प्राण साधना सब करें, समझें अपना धर्म ।। 6701
नवयुवक उस ग्राम के, करें योग प्रचार ।
उनके परिश्रम से वहां, होय योग प्रसार ।। 6702
प्रभु किरपा से प्रेरणा, मिलत सबन को मीत ।
कार्य प्रभु का वे करें, रहे उधर ही चीत ।। 6703

यह अनुग्रह नाथ का, दें सेवा सुखधाम ।
निज को सेवक जान कर, करें प्रभु का काम ।। 6704
कुछ दूरी पर ग्राम है, पालकवाह के नाम ।
बहुत भक्त रहते वहां, भजें प्रेम से राम ।। 6705
बच्चे वहां पर सीखते, योग साधना नित्त ।
प्रभु कृपा से सबन का, लगे योग में चित्त ।। 6706
कई दिवस का शिविर भी, लगा सिखावें योग ।
दूर ग्राम से आ कर, सीखें वहां तब लोग ।। 6707
प्रभु किरपा जिन पर भये, वही करें ये काम ।
योग सिखावें जनन को, और जपावें राम ।। 6708
और ग्राम भी हैं वहीं, जहां पर होता योग ।
सभी रुची से सीखते, वहां आय कर लोग ।। 6709
गोंदपुर प्रसिद्ध है, इस हेतु मम मीत ।
सभी ग्राम के लोग वहां, योग करें ला चीत ।। 6710
प्रभु भक्त जो वहां बसें, उन के चित्त में चाव ।
योग साधन हम नित्त करें, उन का बना स्वभाव ।। 6711
प्रभु भक्ति और योग का, घर घर में प्रचार ।
उन के मन की भावना, होय योग प्रसार ।। 6712
प्रभु किरपा से भावना, जागृत सब में होय ।
कर्म करें अनुरूप उस, प्रभु दया को गोय ।। 6713
समीप ही इक और है, गाँव भाण्डयारा जान ।
वहां भक्त जो हैं बसे, उन पै दया महान ।। 6714
नित्य करते वे योग हैं, प्रभु को मन में धार ।
ऐसा जो जन करत है, पावे कृपा अपार ।। 6715

ऊना में कुछ और भी, जानो ग्राम विशेष ।
योग जहां पर हो रहा, विघ्न पड़े न लेश ।। 6716
अंब अंबोआ दो हैं, ऊना के ये ग्राम ।
नित्य योग जन करत हैं, साथ जपें वे राम ।। 6717
रक्कड़ और चलेट में, भी है योग प्रसार ।
योग साधन कर जन करें, जीवन का उद्धार ।। 6718
लोहारा इक ग्राम है, जहां पै दया विशेष ।
ध्यान भजन व ज्ञान की, कमी जहां न लेश ।। 6719
पोलियों इक पुरोहितां, यह ग्राम का नाम ।
विद्वद् जन वहां रहत हैं, सदा भजें वे राम ।। 6720
योग साधना भी करें, और सिखावें योग ।
ज्ञान योग का पायकर, लाभ उठावें लोग ।। 6721
चिन्तपुरनी के पास भी, कई ग्राम हैं मीत ।
योगी जिन में बसत हैं, और योग से प्रीत ।। 6722
दौलतपुर में योग का, कुछ कुछ है प्रचार ।
जो भक्त वहां बसत हैं, कर रहे विस्तार ।। 6723
चण्डीगढ़ में योग का, है प्रचार महान ।
विस्तृत क्षेत्र में भक्त, प्रसारें योग ज्ञान ।। 6724
योग जगत में व्याप्त है, इस की सीमा नाहीं ।
देख ले जन जाय कर, किसी देश के माहीं ।। 6725
गौरव भारत का बड़ा, यहां से फैला योग ।
शिव शंकर थे यहां भये, जिन को पूजें लोग ।। 6726
कलियुग में प्रभु राम जी, आये ले अवतार ।
जग में योग फैलाया, आर न जिसका पार ।। 6727

कोई देश न जगत में, जहां न योग का मान ।
शौक से सीखें योग को, दें उसे सन्मान ।। 6728
देख न पाया सकल मैं, दुनिया के सब देश ।
ले गये प्रभु जहां मुझे, वहां पर मान विशेष ।। 6729
कैनेडा के है देश में, नगर टौरांटो जान ।
वहां पर योगी भक्त हैं, दें योग का ज्ञान ।। 6730
योग साधन व भक्ति का, करते मिल प्रचार ।
प्रभु किरपा से योग का, हो रहा है प्रसार ।। 6731
अमरीका में जानिये, फैल रहा है योग ।
रुचि योग में बढ़ रही, करें योग बहु लोग ।। 6732
भारत से वहां जा कर, करें योग प्रचार ।
भारत का भी नाम है, और योग प्रसार ।। 6733
कई नगरों में ऐसे, हो रहा है काम ।
ह्यूस्टन नगरी एक है, जिस का लें हम नाम ।। 6734
फिनिक्स भी इक नगर है, जहां रहें कुछ लोग ।
शिक्षा ले कर योग की, करें नित्य जन योग ।। 6735
सैन डियागो नगर में, योग साधक कुछ एक ।
वे सिखलाते योग हैं, सीख सके हर एक ।। 6736
डबलिन में भी योग का, बहु सुन्दर इस्थान ।
बहुत लोग हैं सीखते, समय समय वहां आन ।। 6737
इक प्रसिद्ध है आश्रम, शिकागो में लो जान ।
देश भर में जान लो, उसका बहु को ज्ञान ।। 6738

प्रभु रामलाल की मूर्ति, उस में है प्रतिष्ठ ।
अर्चना जिस की करत हैं, जन भक्त सह निष्ठ ।। 6739
पाठ महारामायण का, होता है वहां नित्त ।
श्रवण करें श्रद्धालु जन, एकाग्र करके चित्त ।। 6740
'योग साधन' है आश्रम, राम प्रभु का जान ।
भारत्त से संबन्धित, लो इसे पहचान ।। 6741
इस विध यह प्रचार है, योग का उस देश ।
अनुग्रह यह प्रभु राम का, संशय है न लेश ।। 6742
इसी तरह सब जगत में, है फैला यह योग ।
प्रत्येक देश में योग, करें शौक से लोग ।। 6743
यही अनुग्रह नाथ का, सकल जगत पै मीत ।
इस कारण सब जगत की, प्रभु चरणी है प्रीत ।। 6744
प्रभु अनुग्रह से लिखा, यह अनुग्रह काण्ड ।
योग दिव्य रामायण का, यह अन्तिम है काण्ड ।। 6745
'बालकाण्ड' है पहला, दूसर 'वन का काण्ड' ।
'आश्रम काण्ड' है तीसरा, 'दिव्य' है चौथा काण्ड ।। 6746
पंचम 'उत्तर काण्ड' है, छटा है 'विनय काण्ड' ।
सप्तम काण्ड हठयोग का, नाम है 'शिक्षा काण्ड' ।। 6747
अष्टम काण्ड 'विचार' का, राज योग का काण्ड ।
है नवम काण्ड 'अनुग्रह', सभी समाप्त काण्ड ।। 6748
इकतीस(31) वर्ष हैं लग गये, लिखाते प्रभु को ग्रन्थ ।
स्पष्ट भया इस ग्रंथ से, दिव्य योग का पन्थ ।। 6749

हे प्रभो इस ग्रन्थ का, हो जग में प्रचार ।
इस गंथ के माध्यम, योग का हो प्रसार ।। 6750
यही विनय तव चरण में, हे मेरे भगवान ।
इस लिपिक की भूल पर, देना न कुछ ध्यान ।। 6751
तुम ने सेवा दीनि जो, मुझ को उस का मान ।
निमाने 'सेवक' को मिले, चरण शरण का दान ।। 6752
होश्यारपुर नगर में, रामायण भयी संपूर्ण ।
वर्ष इकतीस(31) में सदा, प्रभु कृपा रही पूर्ण ।। 6753
[1]सतारह(17)मघर तिथि को, पूर्ण भया इस काल ।
रविवासर के दिवस को, बीस अठावन(2058)साल ।। 6754

अन्तिम अरदास

इकतीस वर्ष हो गये, करते तेरा काम ।
अब प्रभो इस लिपिक को, कृपया दो विश्राम ।। 6755
वर्ष पचासी आयु है, थक गया हूँ नाथ ।
इच्छा बस अब एक है, हो तव कर मम माथ ।। 6756

इति श्री

इति श्री सद्गुरुदेव योगेश्वर स्वामी मुलखराज जी के शिष्य "सेवक" चमन लाल कपूर कृत योगावतार श्री प्रभु रामलाल जी महाराज की दिव्य जीवनी "श्री योग महादिव्य रामायण" का "अनुग्रह काण्ड" संपूर्ण ।

1. श्री योग महादिव्य रामायण की इति श्री रविवार 17 मघर 2058 तदनुसार 2 दिसंबर 2001.

❖ योग साधन आश्रम के नियम ❖

(श्री योगेश्वर प्रभु राम लाल जी महाराज द्वारा रचित)

1. आश्रम में किसी प्रकार की फीस नहीं ली जाती।
2. पुरूषों को पुरूष और स्त्रियों को स्त्रियां साधन सिखलाती हैं।
3. आश्रम के विद्यार्थी तीन श्रेणियों में विभक्त किये जाते हैं : –
   (क) जो सर्वदा आश्रम में रहकर अपने साधन को करते हुए आश्रम की यथा योग्य परिचर्य्या और अन्य भाईयों की प्रेम पूर्वक सेवा करेंगे।
   (ख) जो साधक यथा अवकाश आश्रम में रहकर स्वयं साधन सीखकर अपने देश में जाकर दूसरों को भी अपने अनुभव से लाभ पहुंचाते हुए प्रचार करेंगे।
   (ग) जो आश्रम में आकर साधनों से लाभ उठाएंगे।
4. प्रत्येक साधक को अपने सब खर्च का प्रबन्ध आप करना होगा।
5. रोगी साधक को अपने रोग निवारणार्थ कम से कम एक मास रहने का प्रबन्ध करके आना चाहिये, किन्तु जो भगवद्भक्ति मानसिक शान्ति के लिये योग के अन्तरंग साधन करना चाहते हों उनको श्री गुरू जी के ही विचार पर सदा निर्भर रहना होगा।
6. प्रत्येक साधक को अपनी दिनचर्य्या तथा रात्रिचर्य्या (टाईम टेबल) श्री गुरू जी की आज्ञानुसार नियत करनी होगी।
7. योग चिकित्सा से चिकित्सित होने वाले साधक को अपने चिकित्सा काल के अन्दर किसी भी डाक्टर वैद्य या हकीम की दवाई खाना निषिद्ध है।
8. यदि कोई साधक अन्य साधकों के किसी साधन को देखकर बिना अनुमति स्वयं उन साधनों को करेगा तो उस से लाभ हानि का जिम्मेवार वह स्वयं होगा और आश्रम के आचार्य के अनुशासन का भी भागी होगा।
9. २० वर्ष से कम आयु वाले को उसके संरक्षकों की सम्मति से प्रविष्ट किया जायेगा।
10. स्त्रियों को संबन्धियों के साथ आना चाहिये या वृद्ध स्त्री को जो संरक्षक हो उसी के साथ आना चाहिये।
11. साधकों को जो भी कोई उपासना या साधन दिया जावे उसे नित्य नियम पूर्वक करना होगा और आचार्य जी की आज्ञा के बिना अन्य कोई मनमानी नूतन उपासना या धारणा नहीं करनी होगी।

●●●●